प्रसिद्ध विद्वान् एवं समाजसेवी—

डॉ. कामताप्रसाद जैन

का

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

लेखक :—

श्री. शिवनारायण सक्सेना,

एम० ए०, विद्यावाचस्पति सिद्धान्त-रत्नाकर,

सह-सम्पादक "ज्ञान यज्ञ" अलीगंज (एटा)

प्रकाशक :—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

दिगम्बर जैन पुस्तकालय, गांधीचौक-सूरत

प्रथमबार] वीर सं० २४९१ वि० सं० २०२२

"जैनमित्र" के ६६ वें वर्षके ग्राहकोंको श्री० ब्र० सीतलप्रसादजी स्मारक ग्रंथमालाकी ओरसे भेंट

मूल्य—दो रुपये
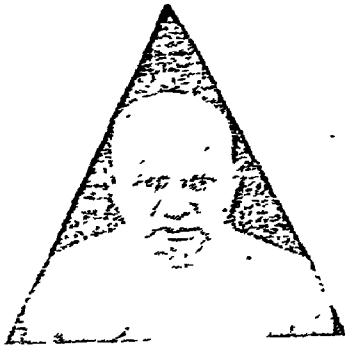
स्व० ब्र० शीतलप्रसादजी स्मारक ग्रंथमाला

पुष्प नं. १७ का निवेदन

करीब ६०-७० दि० जैन ग्रन्थोंके लेखक, अनुवादक, टीकाकार व सम्पादक तथा दि० जैन समाजमें अनेक संस्थाओंके कर्ता, जन्मदाता और "जैनमित्र" साप्ताहिक पत्रकी ३५ वर्षोंतक अविरत सेवा करनेवाले तथा कुछ वर्ष 'वीर' आदिके पत्रोंके सम्पादक जैनधर्मभूषण, धर्मदिवाकर, श्री ब्र० शीतलप्रसादजी (लखनऊ नि०) का स्वर्गवास करीब ६५ वर्षकी आयुमें वीर सं० २४६८ विक्र० सं० १९९८ में लखनऊमें हो गया तब हमने आपकी धर्मसेवा, जातिसेवा, "जैनमित्र" की रातदिन अथक सेवाके स्मारकके लिये आपके नामकी ग्रंथमाला निकालनेका व उसे "जैनमित्र" के ग्राहकोंको भेंट देनेकी १००००) की अपील की थी तो उसमें ६०००) भरे गये थे तो भी हमने जैसा-तेसा प्रबन्ध करके इस ग्रन्थमालाकी स्थापना आजसे २१ वर्षपर की थी।

इस ग्रन्थमालाके प्रतिवर्ष १-१ ग्रन्थ भेंट देनेका खर्च बहुत अधिक होता है। अतः हमने "जैनमित्र" के प्रत्येक ग्राहकसे प्रतिवर्ष १) अधिक लेनेकी योजना की है जिससे ही इतनी बड़ी ग्रन्थमाला चालू रह सकी है व चालू रखना हो है।

इस ग्रंथमाला द्वारा आजतक १६ जैन ग्रन्थ प्रकट करके "जैनमित्र" के ग्राहकोंको भेंट कर चुके हैं जिनके नाम निम्न लिखित हैं—

१. स्वतंत्रताका सोपान (ब्र० शीतलकृत) अप्राप्य ३)
२. श्री आदिपुराण (स्व० पं० तुलसीराम [illegible] कृत) छंदोबद्ध ५)
३. श्री चंद्रप्रभपुराण (कवि हीरालाल पल्लीवाल कृत) छन्दोबद्ध । अप्राप्य ५)
४. श्री यशोधर चरित्र (महाकवि पुष्पदंत कृत पं० हजारीलाल जैनके अनुवाद सहित) अप्राप्य ४)
५. सुभौम चक्रवर्ति चरित्र (भ० रत्नचंद्र विरचित मूल और पं० लालारामजी शास्त्री कृत अनुवाद) ३)
६. श्री नेमिनाथ पुराण (ब्र० नेमिदत्त रचित संस्कृत ग्रंथका पं० उदयलाल काशलीवाल कृत अनुवाद) ४)
७. परमार्थ वचनिका व उपादान निमित्तकी चिट्ठी (कवि बनारसीदासजी रचित) पर ब्र० शीतलप्रसादजी कृत भावार्थ । अप्राप्य १)
८. श्री धन्यकुमार चरित्र—(सकलकीर्ति कृतका हिंदी अनु०) १)
९. श्री प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (भ० सकलकीर्ति रचित) संस्कृतकी स्व० पं० लालारामजी शास्त्री कृत टीका ४)
१०. श्री अमितगति श्रावकाचार (आ० अमितगति कृत) मूल व पं० भागचंदजी कृत वचनिका ४)
११. श्रीपाल चरित्र छन्दबद्ध (कवि भागमल्लजी रचित) ३)
१२. "जैनमित्र"का हीरक जयन्ती सचित्र अंक, संपादक द्वारा संकलित ३)
१३. धर्मपरीक्षा (आ० अमितगति कृत मूल सं० ग्रन्थका स्व० पं० पन्नालालजी बाकलीवाल कृत अनुवाद २)
१४. श्री हनुमान चरित्र हनुमानाष्टक सहित (कवि श्री ब्रह्मराय कृत पद्यका मास्टर सुखचंदजी पद्मसा पोरवाड खंडवा कृत अनुवाद २)
१६. श्री चंद्रप्रभ चरित्र (महा कवि वीरनंदी कृत संस्कृत काव्यका पं० रूपनारायण पांडे कृत अनुवाद । २॥)

१५. श्री महावीर चरित्र (महा पंडित असग कवि कृत सं० काव्यका स्व० पं० खूबचन्दजी शास्त्री विद्या-वारिधि कृत) अनुवाद। ३)

और अब यह १७ वां ग्रन्थ—

डॉ० कामताप्रसाद जैनका व्यक्तित्व और कृतित्व

(श्री शिवनारायण सक्सेना एम. ए. विद्या-वाचस्पति सिद्धांत-प्रभाकर अलीगंज कृत।)

प्रकट किया जाता है। यह कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है लेकिन एक महान समाजसेवी व विश्वभरमें जैनोंके अहिंसा धर्मके प्रचारक स्व० डॉ० कामताप्रसादजी जैन, सम्पादक व प्रकाशक-वाईस ओफ अहिंसा (अंग्रेजी) व अहिंसा-वाणी (हिन्दी) का जीवन परिचय, उनका अहिंसा धर्म प्रचार व उनके कृतित्वका महान परिचय इस ग्रन्थमें दिया जा रहा है जो "जैनमित्र" के ग्राहकोंको अतीव रुचिकर व अनुकरणीय होगा।

स्व० डॉ० कामताप्रसादजी जैन (अलीगंज) से हमारा परिचय आजकलका नहीं, ३५-४० वर्षोंसे था व आप हमारे धर्म-मित्र थे।

आपकी लिखित बड़ी-बड़ी १५-२० पुस्तकें जैसी कि— भगवान महावीर, भ० महावीर और बुद्ध, संक्षिप्त जैन इतिहास ३ खंडोंमें ८ भाग, नवरत्न, पंचरत्न, महारानी चेलना, वीर पाठावली, कुन्दकुन्दाचार्य, कृपण जगावन चरित्र, आदि—

हमने ही प्रकट की हैं अतः आपके साथ हमारा बहुत पत्रव्यवहार होता था तथा आपके स्थापित विश्व जैन मिशनकी प्रवृत्तियोंका प्रचार हम "जैनमित्र" में करते ही रहते थे। इससे 'मित्र' के ग्राहक आपके सेवा-कार्योंसे अतीव परिचित हैं।

आपके जैसे अहिंसा जैन धर्म सेवकका ८२ वर्षकी अवस्थामें ही स्वर्गवास हो जानेसे एक तरहसे जैन समाज अनाथ हो गया है। आपका अहिंसा प्रचार कार्य अकेले हिन्दमें ही नहीं लेकिन सारे विश्वमें पत्रव्यवहारसे तथा दोनों पत्रों द्वारा [illegible] व महावीर तीर्थंकर विशेषांक निकालकर तो दि० जैन समाजमें एक अद्भुत प्रचार श्री तीर्थंकरकी वाणीका उनके सचित्र जीवन चरित्र [illegible] किया है, जिस प्रणालीको आपके सुपुत्र भाई वीरेन्द्रकुमार जैन बी० ए० ने भी चालू रखा है, यह प्रगट करते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है, तथा आशा है कि भाई वीरेन्द्रकुमार पिताजीकी तरह ही अहिंसा जैन धर्म प्रचार-कार्यमें सतत सेवा देते ही रहेंगे।

इस डॉ० कामताप्रसाद जैन ग्रन्थके लेखक हैं-आपके विद्वान मित्र-श्री शिवनारायण सक्सेना एम० ए० अलीगंज। आपने महा परिश्रम पूर्वक यह ग्रन्थ लिखकर अपने सहृदय मित्रका ऋण पूर्ण किया है।

आपने इस ग्रन्थको तैयार करके सुपुत्र भाई वीरेन्द्रको दिखाया व प्रकाशनार्थ निवेदन किया तो भाई वीरेन्द्रने कहा कि इसे मैं प्रकट करूं इससे तो यह अच्छा हो कि कोई दूसरे मित्र व अनन्य सेवक प्रकट करें तो सोनामें सुगन्ध हो सकता है।

अतः आप दोनोंने हमसे पत्र व्यवहार किया तो हमने इसे प्रसन्नता पूर्वक प्रकट करनेकी तथा इसे 'जैनमित्र' साप्ताहिकपत्रके ग्राहकोंको भेट स्वरूप देनेका प्रबंध करनेकी स्वीकृति दी और इसकी प्रेस कापीको हमने तुरत मंगालिया था। जिसको अन्य कार्यवशात् एक वर्ष हो गया है तो भी आज यह "डॉ० कामताप्रसाद जैन" ग्रन्थ हम प्रकट कर रहे हैं व 'मित्र'के ६६ वें वर्षके ग्राहकोंको भेट कर रहे हैं।

इस ग्रन्थका एक२ पृष्ठ पढ़ने व मनन करने योग्य है। तथा

इसमें डॉ० कामताप्रसादजी कृत ६०–७० ग्रंथोंकी सुन्दर समालोचना लेखकने इस प्रकार की है कि जिससे इन ग्रंथोंका खासा परिचय मिल जाता है।

ग्रंथके अंतमें डॉ० कामताप्रसादजीके वियोग बाद मिली हुई श्रद्धांजलियां भी प्रकट की हैं, जिन्हें पढ़कर पाठकोंको मालूम होगा कि हमारे मित्र डॉ० कामताप्रसादजी कैसे महान कार्यकर्ता व जैन समाजके कैसे महान सेवक थे। हमारे पाठकोंको इस ग्रन्थको पढ़कर डा० कामताप्रसादजीके गुणोंका अनुकरण करना चाहिये तभी ही हमारा यह प्रयास सार्थक हो सकता है।

इस ग्रन्थकी कुछ प्रतियां विक्रयार्थ भी निकाली गई हैं। अतः प्रचारार्थ आमसमाजमें बांटनेके लिये यह ग्रन्थ बहुत उपयोगी होगा।

वीर सं० २४९१
आश्विन सुदी ८
ता. २–१०–६५ सूरत.

—निवेदक :
मूलचंद किसनदास कापडिया
प्रकाशक

विषय–सूची

दो शब्द

वैसे मेरी इच्छा बाबूजीको अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करनेकी थी, इसी भावनासे मैं मई ६४के प्रथम सप्ताहमें मिला भी था पर अस्वस्थताके कारण मैंने इस बारेमें कोई बातचीत नहीं की, केवल उनके स्वास्थ्य तथा प्रचारकार्य पर ही विचार विमर्श होता रहा; और यही सोचा कि बाबूजीके स्वस्थ हो जाने पर इस कार्यकी योजना बनाऊंगा। पर समय बड़ा बलवान होता है। मेरी यह इच्छा केवल इच्छा ही बनी रही और १७ मई ६४ को तो वे इस संसारसे नाता तोड़ सदैवके लिये चले गये। पहले तो उनकी मृत्युकी सूचना पर सहसा विश्वास न हुआ, और ऐसी सनसनीपूर्ण खबर पाकर उनके चि० भाई वीरेन्द्र जैनके पास दौड़ा दौड़ा आया तब रास्तेका सारा वातावरण शोकाकुल देखकर अत्यंत दुःख हुआ।

महापुरुषोंकी चिरस्थायी स्मृति उनके श्रेष्ठ कार्य ही होते हैं, उनके द्वारा संस्थापित अ० वि० जैन मिशन, अहिंसावाणी तथा वाइस ऑफ अहिंसा जैसी मासिक पत्रिकाएं तथा सैकड़ों हिन्दी व अंग्रेजीकी पुस्तकें युग युगान्तरों तक उनकी कीर्ति इस संसारमें फैलाती रहेंगी। अनेक लोगोंने उनके स्मारक बनानेकी इच्छाएं भी प्रकट की।

मैं उन्हें कैसे श्रद्धांजलि देता, मेरी समझमें तो एक बात ही आई कि मैं एक पुस्तक अहिंसाकी दिव्यमूर्ति और उद्भट विद्वान डॉ० कामताप्रसाद जैनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर उनकी पुण्यतिथिसे पूर्व लिखकर साहित्य-जगतको भेंट कर दूं।

जहां चाह होती है वहीं राह मिल जाती है।

जून ६४में ही इस पुस्तकका अधिकांश भाग तैयार भी

हो गया। पुस्तकोंको जुटानें, तथा मिशन पुस्तकालयकी अनेक पत्र-पत्रिकाओंसे सहायता लेनेमें प्रसिद्ध साहित्यकार तथा तरुण कवि श्री वीरेन्द्रप्रसाद जैनने हमें खूब सहयोग दिया है। वे अपने ही हैं, अतः धन्यवाद देनेमें तो बड़ा संकोच होता है पर उनका मैं आभारी तो सदैव रहूंगा ही।

कुछ पुस्तकोंकी तलाशके लिये जयपुर आदिके पुस्तकालयमें खोजबीन की पर कोई लाभ न हुआ इस लिये देरी होती चली गई। बादको अक्टूबर ६४ में फिर जैन मिशन अलीगंजके विशाल पुस्तकालयकी खोजबीन की तो ८-१० पुस्तकें पुनः मिलीं जिससे यह प्रस्तक पूर्ण हुई।

पुस्तक पूर्ण हो भी नहीं पाई थी कि स्व० बाबूजीकी अनेक पुस्तकोंके प्रकाशक-श्री मूलचन्द किसनदासजी कापड़िया, संपादक जैनमित्र, सूरत (गुजरात)ने इसके प्रकाशनकी व्यवस्थाका भार ले लिया और हमारे संकल्पको पूर्ति जो एक वर्षमें ही पुस्तक लिख कर धर्मप्रेमी जनताको देनेकी थी, श्री कापड़ियाजीकी कृपासे पूर्ण हुई और यह पाठकोंके हाथमें है। धुरंधर विद्वान डॉक्टर साहबकी जीवनगाथा लिखना मुझ जैसे साधारण व्यक्तिके वशकी बात नहीं थी, उनके कार्य और प्रशंसाको शब्दोंमें बांधना भी संभव नहीं था, फिर भी जैसेतैसे अपनी बाल-बुद्धिसे प्रयास किया है। इसमें मुझे कहां तक सफलता मिली है आप जानें।

एकबार पुनः बाबूजीकी दिवंगत आत्माको शान्तिकी कामना करते हुवे पाठकोंसे यह विनम्र निवेदन करता हूं कि यदि उनके जीवनसे कुछ शिक्षा लें तो मानवजीवनकी सार्थकता है।

अलीगंज (एटा) |
दि० २६.१०.'६४ |

शिवनारायण सक्सेना।

———

लाल जैन मन्दिर देहलीमें स्वाध्याय करते हुए

डॉ० कामताप्रसादजी जैन—अलीगंज

प्रसिद्ध विद्वान व समाज-सेवी

डॉ० कामताप्रसादजी जैन-अलीगंज

महान् विभूति—

अहिंसाके पुजारी, प्रसिद्ध साहित्यकार, धर्मनिष्ठ, समाज-सेवी और यशस्वी सम्पादक डॉ० कामताप्रसादजी जैन भारतकी ही नहीं वरन् विश्वकी महान विभूतियोंमेंसे एक रहे हैं। उन्होंने अपने जीवनमें जैन साहित्यको एक विषय बनाया इसीलिए विचारधारा भी पूरी तरहसे जैन दर्शनसे ओतप्रोत दिखाई पड़ती है। जिस मिशनको लेकर आगे बढ़े उसका प्रमुख उद्देश्य यही था कि जैन धर्मपर जो घनघोर घटायें छा गयीं थीं उनको छिन्न भिन्न करके सूर्यके समान प्रकाशित करना। भगवान भास्कर

अपनी दिव्य किरणोंसे बिना भेदभावके इस विश्वको आलोकित करते हैं ठीक यही उद्देश्य तो किसी धर्मका होता है।

धर्म वाणीकी वस्तु नहीं, लेखन और कापी किताबोंका विषय नहीं, सच्चा धर्म अथवा अध्यात्म जीवनमें ढालनेकी चीज है, जिसके प्रभावसे हैवान इन्सान बन जाते हैं, नरसे नारायण होते हैं, और पुरुषसे पुरुषोत्तम बनते भी देर नहीं लगती। जिस विचारधाराको लेकर बाबूजी चले यद्यपि वह उनकी नहीं थी, पूर्व ऋषि मनीषियोंकी वाणीको रचनात्मक रूप देकर संसारके अज्ञानांधकारमें भ्रमित व्यक्तियोंको जो प्रकाशपुञ्ज दिया उससे सभी धन्य हो गये। यही तो सबसे बड़ी विशेषता थी कि अपनी सच्ची लगन, व्यक्तित्व, चारित्र, सेवा, आत्मविश्वास और प्रतिभाके बलपर अपने जीवनके ६३ वर्षोंमें जो कुछ कर गये उसे अन्य लोगोंके लिये तो जन्म जन्मान्तर तक प्रयत्न करनेके बाद पूर्ण करना सम्भव नहीं था।

आज देशमें अनेक सम्प्रदाय, सामाजिक संस्थाएं, और संघ चल रहे हैं जिनके पास लाखों और करोड़ों रुपयेकी सम्पत्ति है, फिर भी धनाभावका रोना रोते हैं। जिस उद्देश्यको लेकर संस्थाओंका प्रादुर्भाव होता है उस उद्देश्यकी पूर्ति तो दूरकी बात रही जीवनके प्रारम्भिक दो चार वर्षोंमें ही पदलोलुपता, ईर्ष्या-द्वेष, धनलिप्सा, झूठी वाहवाही लूटनेकी छछोरी आदत, पार्टीबन्दी और फूटके अखाड़े बन जाते हैं। समाजसेवाकी आड़में स्वयंकी सेवा होने लगती है। समाजके श्रमजीवियोंके पसीनेकी गाढ़ी कमाई जो सेवा और जनसुधारके लिये थी अपने काममें आने लगती हैं।

हमने तो एक बात देखी है कि जिन्हें कार्य करनेकी चाह होती है उनके लिये राह अपने आप बन जाती है। समाजसेवाके

कार्योंका प्रारम्भ करना सरल अवश्य है, पर उन्हें पूर्णता तक पहुंचाना सबके बूतेकी बात नहीं होती। शुरूमें अपने सम्बन्धी तक उपहास करते हैं, मखौल उड़ाते हैं, कुछ नहीं होता तो बादमें स्वयं विरोध करते हैं और दूसरोंसे करानेका प्रयास करते हैं। सांसारिक उपहास और विरोधका जो साहससे सामना कर लेते हैं अन्तमें विजयश्री उन्हींको वरण करती है। बाधक साधक बन जाते हैं, विरोधी सिर झुकाते हैं और सारा संसार अपना माथा टेकनेके लिये तैयार होता है।

जिस अखिल विश्व जैन मिशनको लेकर बाबूजी आगे बढ़े उसकी विचारधारा बड़ी ही प्रौढ़, परिमार्जित, आदर्श व उदात्त है। इसी लिए ईसाई धर्मकी तरहसे उसके द्वारा अपनी विचारधारा न तो किसी पर जबरन लादी गई और न धन, वस्त्र, भोजन, सर्विस अथवा इन्द्रिय लिप्साका प्रलोभन देकर अज्ञानी, अशिक्षित, असमर्थ और पिछड़ी जातियोंके लोगोंको धर्म परिवर्तनके लिये मजबूर किया गया।

इस मिशनने वास्तविकता सबके सामने अपने साहित्य प्रकाशन द्वारा रखी है, जिसके प्रभावमें आकर भारतवासियोंने ही नहीं विदेशियोंने तक अपनेको जैन घोषित किया। धार्मिक साहित्यका पठन पाठन कर वे मंत्रमुग्ध हो गये और जिस शान्तिकी तलाशमें अपने जीवनके अनेक वर्ष खोये थे वह यहांसे प्राप्त की। इंग्लैण्डके फ्रैंकमैनवेल साहब, जर्मनीके वेण्डेल साहब, अमरीकाके कार्डर साहब तथा लन्दनके मैके साहबकी गणना ऐसे ही महानुभावोंमें की जाती है।

जन्म और परिचय

भारतवर्ष सृष्टिके प्रारम्भसे ही जगतगुरु रहा है। जिन दिनोंमें पश्चिमी देश प्रारम्भिक स्थितिमें थे तब भारत अपने आत्मबल और आध्यात्मिक शक्तिके द्वारा मार्ग प्रदर्शन करता था, इसीलिये पुण्यभूमि और कर्मभूमि भारतवर्ष रहा है। महापुरुषोंको जन्म देनेवाली खान यह भारत माता सदैवसे पूजनीय और वन्दनीय रही है। यहांके तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्व विद्यालयोंमें विदेशी ज्ञान-पिपासु अध्ययन करनेके लिये आया करते थे। ईसा मसीहने स्वयं अपनी शिक्षाकी विद्यापीठ भारतको ही बनाया था।

यह वीर प्रसूति भारत माता कालीदास, व्यास, वाल्मीकि, चाणक्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसे ऋषियों, भगवान महावीर, बुद्ध जैसे संतों, दशरथ, जनक और अशोक जैसे राजाओं, शिवि, कर्ण, दधीचि और भामाशा जैसे दानियों, जगतगुरु शंकराचार्य, विवेकानंद, दयानंद, लाजपतराय, तिलक, गोखले और गांधी जैसे युगदृष्टाओं, नेताजी बोष, भगतसिंह, आझाद और खुदीराम जैसे क्रांतिकारियों, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद और पं० जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओंको जन्म देती रही है।

ऐसे ही ज्ञानगंगा प्रवाहित करनेवाले देशमें डॉ० कामताप्रसादका जन्म दिनांक ३ मई सन् १९०१ में केम्पबेलपुर (जो आज पाकिस्तानमें है) हुआ था। इनके पिता पूज्य श्री लाला प्रागदासका निजी बैंकिंग फर्म था, जिसके कारण विभिन्न प्रान्तोंमें भी जाना पड़ता था। यह फर्म तत्कालीन सरकारी फौजसे सम्बन्धित था।

सबसे बड़े आश्चर्यकी बात तो यह है कि बाबूजीने जहां जन्म लिया वहां उपासना तो दूरकी बात रही जैन धर्मका नाम

तक सुननेको नहीं मिलता था। पर जिसे सुयोग्य माता मिल जाती है, उसका वातावरण कुछ नहीं कर पाता। वीर अभिमन्युने तो गर्भावस्थामें चक्रव्यूहकी भेदन क्रिया सीख ली थी, "मर्यादा-पुरुषोत्तम राम" और योगीराज कृष्ण अपने जीवनमें जिस आदर्शवादको लेकर आगे बढ़े वह उनकी माताओं ही तो परिणाम था। वीर शिवाजीको उनकी माता जीजाबाईने वीरताकी कहानियाँ सुना सुनाकर वीर बना दिया था। महात्मा गांधीजीने भी धर्मकी सारी शिक्षा माताकी गोदमें सीखी थी। वास्तवमें माताकी गोदी सबसे बड़ी पाठशाला होती है। इस आदर्श पाठशालामें जिसको पढ़नेके लिये सौभाग्य प्राप्त हो जाता है फिर उसको अधिकसे अधिक शिक्षा तो ४ या ५ वर्षकी आयु पूर्ण होते होते ही सीखनेको मिल जाती है।

आचार्य विनोबा भावेको आजीवन ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत कर समाजसेवाका व्रत लेनेका उपदेश मातासे ही प्राप्त हुआ था। वह कहा करती थीं "विवाह होनेसे तो एक पीढ़ी तरती थी, पर ब्रह्मचर्यपूर्वक रहनेसे सात पीढ़ियां उऋण हो जाती हैं।" भला इतनी शिक्षा पाकर विनोबा उसे अपने जीवनमें क्यों न क्रियान्वित करते? यदि उनकी माता भी साधारण आज जैसी जननी रही होती तो विवाहके लिए जिद् करती रहती। मध्य प्रदेशके भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री कैलाशनाथ काटजूने अपनी प्रगतिका सारा श्रेय अपनी माता रामप्यारीबाईको ही "मैं भूल नहीं सकता" नामक पुस्तकमें दिया है।

कामसे लेकर मत्सर तककी कुशिक्षा और ब्रह्मचर्यसे लेकर सन्त बननेतककी सुशिक्षा मातासे ही मिलती है। जो माता जैसी होती है वह अपने बच्चेको वैसा ही बना देती है, उसके सूक्ष्म तत्वोंका समावेश उनकी सन्तानमें न चाहने पर भी हो

जन्म और परिचय

भारतवर्ष सृष्टिके प्रारम्भसे ही जगतगुरु रहा है। जिन दिनोंमें पश्चिमी देश प्रारम्भिक स्थितिमें थे तब भारत अपने आत्मबल और आध्यात्मिक शक्तिके द्वारा मार्ग प्रदर्शन करता था, इसीलिये पुण्यभूमि और कर्मभूमि भारतवर्ष रहा है। महा-पुरुषोंको जन्म देनेवाली खान यह भारत माता सदैवसे पूजनीय और वन्दनीय रही है। यहांके तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्व विद्यालयोंमें विदेशी ज्ञान-पिपासु अध्ययन करनेके लिये आया करते थे। ईसा मसीहने स्वयं अपनी शिक्षाकी विद्यापीठ भारतको ही बनाया था।

यह वीर प्रसूति भारत माता कालीदास, व्यास, वाल्मीकि, चाणक्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसे ऋषियों, भगवान महावीर, बुद्ध जैसे संतों, दशरथ, जनक और अशोक जैसे राजाओं, शिवि, कर्ण, दधीचि और भामाशा जैसे दानियों, जगतगुरु शंकराचार्य, विवेकानंद, दयानंद, लाजपतराय, तिलक, गोखले और गांधी जैसे युगदृष्टाओं, नेताजी बोष, भगतसिंह, आझाद और खुदीराम जैसे क्रांतिकारियों, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद और पं० जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओंको जन्म देती रही है।

ऐसे ही ज्ञानगंगा प्रवाहित करनेवाले देशमें डॉ० कामता-प्रसादका जन्म दिनांक ३ मई सन् १९०१ में केम्पबेलपुर (जो आज पाकिस्तानमें है) हुआ था। इनके पिता पूज्य श्री लाला प्रागदासका निजी बैंकिंग फर्म था, जिसके कारण विभिन्न प्रान्तोंमें भी जाना पड़ता था। यह फर्म तत्कालीन सरकारी फौजसे सम्बन्धित था।

सबसे बड़े आश्चर्यकी बात तो यह है कि बाबूजीने जहां जन्म लिया वहां उपासना तो दूरकी बात रही जैन धर्मका नाम

लाला निर्मलदास
लाला फूलचन्द
लाला परमसुख
लाला कुन्दनलाल
लाला झम्मनलाल
लाला गिरधारीलाल
पं० तेजराय
लाला मन्नामल
डा० गोविन्दप्रसाद
बाबू श्यामाप्रसाद
बाबू अम्बाप्रसाद
श्री आनन्दीप्रसाद
श्री वीरेन्द्रप्रसाद
छत्रूमल
नेमीचन्द्र
नरेशचन्द्र
मिथिलेशचन्द्र
प्रिय ऋषभ
प्रवीण
प्रबुद्ध
मुकुल
ललित

जाता है। बाबूजीकी माता भगवन्तीदेवीने जैन धर्मकी विचार-धारा सिद्धान्त और शिक्षाओंकी अमिट छाप डाली।

जिस तरह सूर्यकी किरणें चन्द्रमा पर पड़ती हैं और उसके दिव्य, और शीतल प्रकाशसे जनता जनार्दन लाभान्वित होती रहती है, ठीक वैसे ही माताजीकी दिव्य आभाका जो प्रतिबिम्ब बाबूजी पर पड़ा, उससे सारे अज्ञानालोकको एक ज्ञानज्योति मिल सकी। बाबूजी द्वारा प्रज्वलित की गई और ज्ञानकी अखण्ड ज्योति तब तक इस भूलोक पर प्रकाश और प्रेरणा देती रहेगी, जबतक एक भी धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण, और सत्य प्रेमी जीवित रहेगा। बाबूजीका बचपन सिंध हैदराबादमें व्यतीत हुआ, जब वे "नवलराम हीराचन्द एकेडेमी" नामक विद्यालयमें शिक्षा ग्रहण करते थे। वहां सिख धर्मकी शिक्षाका बोलबाला था, उसके बीच निर्भयता और साहससे 'सामायिक पाठ' और जैन स्तोत्रोंको बड़े भावसे सुनाया करते थे।

इनके पूर्वज उत्तर प्रदेश प्रान्तके एटा जिलेमें तहसील अलीगंजके अन्तर्गत कोट ग्रामके थे। यह ग्राम अलीगंजसे दक्षिणकी ओर लगभग ३ मील दूर है। उस समय ब्रिटिश शासनके द्वारा इस परिवारको विशेष सम्मान भी मिला हुआ था। बादको धीरे२ गांव छोडकर लोग अलीगंजमें आकर बस गये। इस परिवारकी ४ पीढ़ीकी वंशावली इस प्रकार है। इस वंश वृक्षसे विस्तृत जानकारी पाठकोंके लिए विशेष लाभान्वित सिद्ध होगी, ऐसा मुझे विश्वास है—

लाला निर्मलदास
लाला फूलचन्द
लाला परमसुख
लाला कुन्दनलाल
लाला झम्मनलाल
लाला गिरधारीलाल
ला० गोविन्दप्रसाद
बाबू अम्बाप्रसाद
श्री आनन्दीप्रसाद
श्री वीरेन्द्रप्रसाद
प्रिय ऋषभ
छन्नूमल
नेमीचन्द
नरेशचन्द्र
मिथिलेशचन्द्र
प्रवीण
प्रबुद्ध
मुकुल
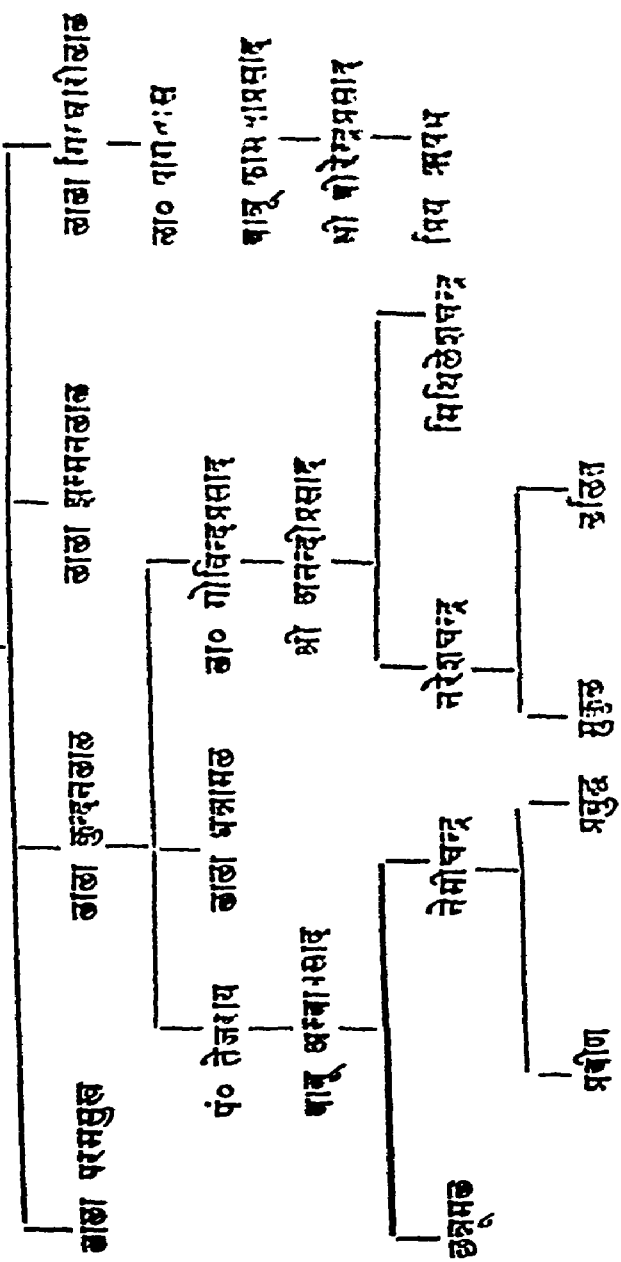
बाबूजीने हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और सिन्धीका प्रायवेट शिक्षकोंसे ज्ञान प्राप्त किया। साहित्य, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रमें बिना कई भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किये कार्य नहीं चलता इसलिये उन्होंने धीरे धीरे कई भाषाएं सीखीं। उनकी प्रतिभासे प्रभावित होकर श्री अनूपचंद न्यायतीर्थने कहा था—

तुम संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश,
हिन्दी अंग्रेजी जानकार।
थे स्वाभिमान गौरव संयुक्त,
प्रतिभाशाली साहित्यकार॥

तुम सफल प्रवक्ता सत्य रूप,
प्रवचन सबहीको मन भाता।
सत्कार्य तुम्हारे देख देख,
श्रद्धासे शीश झुका जाता॥

कलमके धनी

डाक्टर साहबने अपना सारा जीवन साहित्य साधनामें लगाया। रुग्णावस्थामें नित्य ९-९, १०-१० घण्टे स्वाध्यायमें लगाये। अपने शरीर और स्वास्थ्यकी तनिक भी चिंता न करते हुए निःस्वार्थ सेवा करनेवाले बाबूजीमें गजबकी शक्ति और उत्साह था। अंतिम समय तक साहित्यकी सेवामें जुटे रहे। वो मार्च १९६४ को पारसनाथ तीर्थ सपरिवार गये। यह तीर्थ बिहार प्रान्तके हजारीबाग जिलेमें है। वहींसे ही उन्हें एक नवीन ग्रन्थ लिखनेकी प्रेरणा मिली जिसका शीर्षक—

"शिखरजी महात्म" रखनेवाले थे, इस अभूतपूर्व ग्रन्थकी रचनाके लिये अन्तिम समय तक ८-९ घन्टे रोज अध्ययन करते रहे, पर विधाताको यह मंजूर ही नहीं था कि यह ग्रन्थ पूरा हो, उसकी थोड़ीसी पंक्तियां लिख पाई थीं जिसे देखकर ही उनकी साहित्य सेवाकी तीव्र उत्कंठाका परिचय मिल जाता है। जितना वे लिख सकते थे उतना लिखा, और खूब लिखा। लगभग १०० ग्रन्थोंका हिन्दी अंग्रेजीमें लिखना हर साहित्यकारके वसकी बात नहीं थी।

उनका सारा जीवन पुस्तकोंके बीचमें ही व्यतीत हुआ।

इस प्रकार नित्य आनेवाले सैकड़ों पत्रोंके उत्तर भी स्वयं लिखते थे। कार्यालयमें क्लर्क इत्यादि होते हुये भी आधेसे अधिक कार्य वे स्वयं निबटा लेते थे।

सन् १९२२ में बाबूजीकी पहली अनुदित पुस्तक 'असहमत संगम' जो बैरिस्टर स्व० श्री चम्पतरायजीकी विश्रुत कृति Confluence of opposites का अनुवाद थी, प्रकाशित हुई और सन् १९२४ में "भगवान महावीर" नामक मौलिक पुस्तक

सामने आई। वैसे फुटकर लेखनका कार्य तो १८ वर्षकी आयुसे ही प्रारम्भ कर दिया था और छुटपुट लेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओंमें प्रकाशित होने लगे थे। "जैन सिद्धान्त भास्कर" पत्रिकाका सम्पादन तो जीवनभर करते रहे। "वीर" साप्ताहिकका सम्पादन भी बड़ी कुशलतासे तीससे भी अधिक वर्षों तक करते रहे। लगभग ६० पुस्तकें हिन्दीमें तथा तीस अंग्रेजीमें लिखीं। बीसियों ट्रेक्ट सरल भाषामें लिखकर लाखोंकी संख्यामें सर्वसाधारणमें वितरित कराये। हिन्दी भाषा भाषियों तक तो हिन्दीमें लिखे गये ग्रन्थ कार्य कर सकते हैं, पर अहिन्दी भाषियोंके लिये विदेशी विचारकों और साधारण व्यक्तियों तक अंग्रेजीमें बिना लिखे किसी भी प्रकार काम नहीं चल सकता था।

डाक्टर साहब सर्वप्रथम पत्रकार व प्रसिद्ध इतिहासकारके रूपमें हमारे सामने आते हैं। स्वयं अनेक पत्रिकाओंका तो सम्पादन किया ही, अनेक साहित्यकारोंको भी सम्पादनकी कलासे अवगत कराया तथा नई नई पत्रिकाओंके प्रकाशनके लिये प्रेरणा तथा सहयोग दिया।

बड़े आश्चर्यकी बात तो यह है कि बाबूजीने नवलराय हीराचन्द एकेडेमी विद्यालयसे केवल कक्षा ९ तक ही शिक्षा प्राप्त की थी। वह मैट्रिक पास भी न थे पर उनके स्वाध्याय व श्रमने उन्हें जो बना दिया वह किसीसे छिपा नहीं। इतने अल्प शिक्षित होते हुये भी इतना बड़ा कार्य हिन्दी अंग्रेजी संस्कृत आदि भाषाओंमें किया, जिसका कुछ ठिकाना नहीं है।

बाबूजीके दो विवाह हुये थे। पहला विवाह तो
हो हो गया, जिससे कोई सन्तान न
मृत्यु भी ५–६ वर्ष बाद हो गई।
विशेष आग्रहसे दूसरा विवाह

कुशल गृह संचालन

पुत्र पुत्रियोंकी बाल हठों पर न खीजते हुये सदैव प्रेमसे उन्होंको समझाते रहे। और उचित मार्गदर्शन देते रहे। मार-पीटकी कौन कहे कभी नाराज होने तकका नम्बर न आया। क्रोधको जीत ही लिया था। ऐसा उनके जीवनसे प्रत्यक्ष झलक मालूम पड़ती है। प्रेस, मिशन, मन्दिर, प्रकाशन, पुस्तकालय तथा अपना घरेलू आय-व्ययका हिसाब स्वयं ही रखते थे। उनका जीवन तो एक मशीनके समान था। वे चौबीस घण्टेके दिन रातमें अकेले ही ५-६ व्यक्तियोंके बराबर कार्य करते थे। उनकी व्यवहारिक करुणाकी कई बातें पारवारिक जीवनमें मिलती हैं। कई बार नौकरोंके द्वारा ऐसे कार्य हो गये जिनके कारण उन्हें निकाल देना अनिवार्य था, फिर भी उन्होंने ऐसा न किया।

दो पुराने सेवक जो वयोवृद्ध हो गये थे, उन्हें भी अन्तमें हटाना इसलिये उचित नहीं समझा कि जिन्होंने अपना पूरा जीवन परिवारकी सेवामें लगाया, उन्हें किस तरह अलग किया जा सकता है? पारवारिक जीवनसे लेकर दाम्पत्य जीवन तकमें भी पूरी तरहसे कर्तव्यनिष्ठा और आदर्शवादके दर्शन होते हैं। परिवारमें आनेवाले सभी अतिथि आबाल वृद्ध बाबूजीकी करुणा और आतिथ्य सत्कारकी अमिट छाप लेकर जाते थे। पौत्र और पौत्रियाँ ही नहीं वरन् अतिथियोंके बच्चों तथा अन्य बच्चोंसे भी आपको अधिक स्नेह था। बच्चोंमें बच्चों जैसा बन जाना आपका प्रमुख स्वभाव था।

बाबूजीने सन् १९४८ में "कृपण-जगावन चरित्र" नामक पुस्तकका सम्पादन किया था उसके प्रारम्भिक पृष्ठोंको पढ़नेसे बाबूजीके पारिवारिक जीवनकी झांकी मिलती है। उनके पितामह, माता पिताका स्वभाव, समाजकी स्थिति, बाबूजीको उनके द्वारा

मिली प्रेरणा आदिका स्पष्ट ज्ञान होता है इसलिये हम उनके शब्दोंको यथार्थरूपसे ही यहां उल्लिखित किये दे रहे हैं—

"उनके (पिताजी) ही अनुग्रह और उदार भावने हमें यह सुअवसर दिया कि हम समाजकी सेवा कर सके हैं और कर रहे हैं। समाजके लिये उनका यह समुदार कार्य भुलानेकी वस्तु नहीं हो सकती। अच्छा तो सुनिये—संयुक्त प्रान्तके जिला एटामें अलीगंज नगरके पास ही एक कोट नामका ग्राम है। तेरहवें तीर्थंकर भगवान विमलनाथजीकी जन्मनगरी और तपोभूमि कम्पिलासे वह, १०-१२ मील दूर है। अपनी समृद्धिशाली स्थितिमें कम्पिला वहां तक फैला था।

इस कोटके ग्राममें काश्यपगोत्री यदुवंशी कुलके जैनी रहते थे। कोटके जो महानुभाव फर्रुखाबादके नवाबके यहां नायब थे, उनके भंडारीका कार्य जैनी करते थे। जब सन् १७४७ में अलीगंजका जन्म हुआ तब आसपाससे बुलाकर लोगोंको यहां नवाबखान बहादुरने बसाया। तभी कोटके उपर्युक्त जैन कुटुम्बके रत्न श्री निर्मलदासजी यहां आकर बस गये। उनके वंशज कोटवाले जैनी कहलाए। इस कोटवाले वंशमें ही हमारे पूज्य पिताजी श्री प्रागदासजीका जन्म वि० सं० १९२५ में हुआ था। उनके पितामह श्री फूलचन्दजी पराक्रमी पुरुष थे। उन्होंने जाकर फौजमें देन लेन और ठेकेदारीका व्यापार प्रारम्भ किया और उसमें वह अपने पौरुषसे सफल हुये।

हमारे पितामह श्री गिरधारीलालजी तो उस समय दिवंगत हो गये थे, जब हमारे पिताजी अबोध बालक थे। शिखरजीकी ... गया था, सानंद यात्रा करके जब वह लौट रहे थे ... गाड़ियां कानपुर आ गई थीं तब वहां ही ... हो गये। पितामहीजी पर मानो वज्र ही

सामने आई। वैसे फुटकर लेखनका कार्य तो १८ वर्षकी आयुसे ही प्रारम्भ कर दिया था और छुटपुट लेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओंमें प्रकाशित होने लगे थे। "जैन सिद्धान्त भास्कर" पत्रिकाका सम्पादन तो जीवनभर करते रहे। "वीर" साप्ताहिकका सम्पादन भी बड़ी कुशलतासे तीससे भी अधिक वर्षों तक करते रहे। लगभग ६० पुस्तकें हिन्दीमें तथा तीस अंग्रेजीमें लिखीं। बीसियों ट्रेक्ट सरल भाषामें लिखकर लाखोंकी संख्यामें सर्व-साधारणमें वितरित करवाये। हिन्दी भाषा भाषियों तक तो हिन्दीमें लिखे गये ग्रन्थ कार्य कर सकते हैं, पर अहिन्दी भाषियोंके लिये विदेशी विचारकों और साधारण व्यक्तियों तक अंग्रेजीमें बिना लिखे किसी भी प्रकार काम नहीं चल सकता था।

डाक्टर साहब सर्वप्रथम पत्रकार व प्रसिद्ध इतिहासकारके रूपमें हमारे सामने आते हैं। स्वयं अनेक पत्रिकाओंका तो सम्पादन किया ही, अनेक साहित्यकारोंको भी सम्पादनकी कलासे अवगत कराया तथा नई नई पत्रिकाओंके प्रकाशनके लिये प्रेरणा तथा सहयोग दिया।

बड़े आश्चर्यकी बात तो यह है कि बाबूजीने नवलराय हीराचन्द एंग्लोवैदिक विद्यालयसे केवल कक्षा ९ तक ही शिक्षा प्राप्त की थी। वह मैट्रिक पास भी न थे पर उनके स्वाध्याय व लगनने उन्हें जो बना दिया वह किसीसे छिपा नहीं। इतने अल्प शिक्षित होते हुये भी इतना बड़ा कार्य हिन्दी अंग्रेजी संस्कृत आदि भाषाओंमें किया, जिसका कुछ ठिकाना नहीं है।

बाबूजीके दो विवाह हुये थे। पहला विवाह तो अल्पायुमें ही हो गया, जिससे कोई सन्तान नहीं हुई और धर्मपत्नीकी मृत्यु भी ५-६ वर्ष बाद हो गई। तदुपरांत पूज्य पिताजीके विशेष आग्रहसे दूसरा विवाह सरस्वतीदेवीके साथ तेईस वर्षकी

आयुमें सम्पन्न हुआ। जिनसे कई वर्षों जन्में पर आज तीन ही जीवित हैं। सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती सरोजिनीदेवी हैं, उनसे छोटे बाबू वीरेन्द्रप्रसादजी हैं, और सबसे छोटी सुपुत्री श्रीमती सुमन हैं।

जहां तक शिक्षाका प्रश्न है बाबू वीरेन्द्र और श्रीमती सुमन क्रमशः बी० ए० साहित्यरत्न और एम० ए० (हिन्दी) तक सुशिक्षित हैं। बड़ी सुपुत्री श्रीमती सरोजिनीने भी स्वाध्यायसे पर्याप्त ज्ञानार्जन किया है जो शैक्षणिक योग्यतामें सुमनसे किसी भी प्रकार कम नहीं बताया जा सकता है। धन धान्यसे पूर्ण होते हुये भी अपना जीवन सादगीमय ही व्यतीत किया। अपने पुत्रको बी० ए० तक शिक्षण दिलानेके बाद उन्होंने यह उचित नहीं समझा कि नौकरी करवाई जावे।

आज नौकरियोंमें अपनी आत्माका हनन पग पग पर करना पड़ता है अतः घर पर प्रेस खुलवाकर, साहित्य सेवामें लगा दिया। धर्मनिष्ठता, सम्पादन करना, चरित्र, विद्वता, धर्म-प्रचारकी भावना, कवित्व शक्ति, और सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करनेकी प्रेरणा श्री वीरेन्द्रजीको अपने पिताजीसे ही मिली। उन्होंने अपने पिताजीसे बहुत कुछ सीखा, और पूज्य पिताजीने भी अपने होनहार पुत्रको बहुत कुछ सिखाया। सच बात तो यह है कि श्री वीरेन्द्रप्रसाद, वीरेन्द्रप्रसाद नहीं वरन् भविष्यमें होनेवाले दूसरे श्री डॉ० कामताप्रसादजी हैं। प्रेस खुलवानेका प्रमुख ध्येय अधिकसे अधिक प्रचारकार्यमें सुविधा होना ही था, धनोपार्जन तो गौण रूपमें ही रहा। पत्रिकाएँ, ट्रेक्ट तथा अन्य छोटी छोटी पुस्तकें ही छपती रहती थीं, बाहरका काम तः बहुत कम निकल पाता था।

कुशल गृह संचालन

पुत्र पुत्रियोंकी बाल हठों पर न खीझते हुये सदैव प्रेमसे इन्होंने समझाते रहे। और उचित मार्गदर्शन देते रहे। मार-पीटकी कौन कहे कभी नाराज होने तकका नम्बर न आया। क्रोधको जीत ही लिया था। ऐसा उनके जीवनसे प्रत्यक्ष झलक मालूम पड़ती है। प्रेस, मिशन, मन्दिर, प्रकाशन, पुस्तकालय तथा अपना घरेलू आय-व्ययका हिसाब स्वयं ही रखते थे। उनका जीवन तो एक मशीनके समान था। वे चौबीस घण्टेके दिन रातमें अकेले ही ५-६ व्यक्तियोंके बराबर कार्य करते थे। उनकी व्यवहारिक करुणाकी कई बातें पारवारिक जीवनमें मिलती हैं। कई बार नौकरोंके द्वारा ऐसे कार्य हो गये जिनके कारण उन्हें निकाल देना अनिवार्य था, फिर भी उन्होंने ऐसा न किया।

दो पुराने सेवक जो वयोवृद्ध हो गये थे, उन्हें भी अन्तमें हटाना इसलिये उचित नहीं समझा कि जिन्होंने अपना पूरा जीवन परिवारकी सेवामें लगाया, उन्हें किस तरह अलग किया जा सकता है? पारवारिक जीवनसे लेकर दाम्पत्य जीवन तकमें भी पूरी तरहसे कर्तव्यनिष्ठा और आदर्शवादके दर्शन होते हैं। परिवारमें आनेवाले सभी अतिथि आबाल वृद्ध बाबूजीकी करुणा और आतिथ्य सत्कारकी अमिट छाप लेकर जाते थे। पौत्र और पौत्रियाँ ही नहीं वरन् अतिथियोंके बच्चों तथा अन्य बच्चोंसे भी आपको अधिक स्नेह था। बच्चोंमें बच्चों जैसा बन जाना आपका प्रमुख स्वभाव था।

बाबूजीने सन् १९४८ में "कृपण-जगावन चरित्र" नामक पुस्तकका सम्पादन किया था उसके
बाबूजीके पारिवारिक जीवनकी झांकी
माता पिताका स्वभाव, समाजकी रि:

मिली प्रेरणा आदिका स्पष्ट ज्ञान होता है इसलिये हम उनके शब्दोंको यथार्थरूपसे ही यहां उल्लिखित किये दे रहे हैं—

"उनके (पिताजी) ही अनुग्रह और उदार भावने हमें यह सुअवसर दिया कि हम समाजकी सेवा कर सके हैं और कर रहे हैं। समाजके लिये उनका यह समुदार कार्य भुलानेकी वस्तु नहीं हो सकती। अच्छा तो सुनिये—संयुक्त प्रान्तके जिला एटामें अलीगंज नगरके पास ही एक कोट नामका ग्राम है। तेरहवें तीर्थंकर भगवान विमलनाथजीकी जन्मनगरी और तपोभूमि कम्पिलासे वह, १०-१२ मील दूर है। अपनी समृद्धिशाली स्थितिमें कम्पिला वहां तक फैला था।

इस कोटके ग्राममें काश्यपगोत्री यदुवंशी बुन्देले जैनी रहते थे। कोटके जो महानुभाव फर्रुखाबादके नवाबके यहां नायब थे, उनके भंडारीका कार्य जैनी करते थे। जब सन् १७४७ में अलीगंजका जन्म हुआ तब आसपाससे बुलाकर लोगोंको यहां नवाबखान बहादुरने बसाया। तभी कोटके उपर्युक्त जैन कुटुम्बके रत्न श्री निर्मलदासजी यहां आकर बस गये। उनके वंशज कोटवाले जैनी कहलाए। इस कोटवाले वंशमें ही हमारे पूज्य पिताजी श्री प्रागदासजीका जन्म वि० सं० १९२५ में हुआ था। उनके पितामह श्री फूलचन्दजी पराक्रमी पुरुष थे। उन्होंने जाकर फौजमें देन लेन और ठेकेदारीका व्यापार प्रारम्भ किया और उसमें वह अपने पौरुषसे सफल हुये।

हमारे पितामह श्री गिरधारीलालजी तो उस समय दिवंगत हो गये थे, जब हमारे पिताजी अबोध बालक थे। शिखरजीकी यात्राका संघ गया था, सानंद यात्रा करके जब वह लौट रहे थे और संघकी बैल गाड़ियां कानपुर आ गई थीं तब वहां ही पितामहजी स्वर्गवासी हो गये। पितामहीजी पर मानो वज्र ही टूट पड़ा हो।

अब तो जमानेके प्रभावसे विधवा जीवनमें कुछ अंतर भी हुआ है। विधवाओंके जीवन सुधरे भी हैं, किन्तु सौ वर्ष पहलेके समाजमें विधवाके लिये कोई स्थान न था। घर कुटुम्बमें वह अनादरकी वस्तु समझी जाती थी। कुछ हवा ही ऐसी चल रही थी। हमारी पितामही उस संकट कालसे ज्यों त्यों निकलीं थीं।

पितामहीजी देवता थीं। उनकी गोदमें पलकर पिताजीने भी देवरूप पाया था। शांति और स्वावलम्बन उनके स्वभावमें रमा हुआ था। कुमारावस्थामें वह मांसे दूर लखनऊमें रहे और वहां ही विद्याध्ययन किया था। किन्तु मांकी ममताने उनको आगे पढ़ने न दिया। वह घर पर आ गये और अपने पैरों पर खड़ा होनेका साहस उन्होंने प्रकट किया। विधवा मांने जो कुछ दिया उस थोड़ीसी पूंजीसे उन्होंने नमकका व्यापार प्रारम्भ कर दिया था! किन्तु शीघ्र ही उनके भाग्यने पलटा खाया।

उनके अभिन्न मित्र बनारसीदासजीने उनको बुला लिया। वह फौजमें बेंकर कोन्ट्रेक्टर थे। उन्हें साझेकी दुकानके लिये एक विश्वनीय साझीदार चाहिये था। पिताजीको उन्होंने साझीदार बना लिया। श्री बनारसीदासजी धर्मात्मा थे। उन्होंने सं० १९५७ में भोगांव जिला मैनपुरीमें एक बिम्ब प्रतिष्ठोत्सव कराया था। सन् १९४० में पिताजीने अपना निजी फर्म 'मेसर्स प्रागदास एन्ड सन्स' नामसे स्थापित किया था। और अंग्रेजी तोपखाना फौजके साथ भारतकी विविध छावनियोंमें वह गये थे। अफगान युद्धमें भी हमारे धर्मके प्रतिनिधि फौजके साथ मोर्चे पर गये थे। जब सन् १९०१ में पिताजी पश्चिमोद्वार सीमा प्रांतकी छावनी कैम्प वेलपुरमें थे, तभी वहां हमारे शरीरका अवतरण हुआ था। "हमसे आयुमें बड़ी दो बहनें थीं और दो बहनें हमसे छोटी थीं।

उस कालमें भी पूज्य पिताजीने [illegible] । थी। हमारी

बहनें भी हिन्दीका सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकी थीं और सगाई हुई थीं। खेद है उनमेंसे दो दिवंगत हो चुकी हैं। यहांके बाद पेशावर, रावलपिंडी, लाहोर, मेरठ, हैदराबाद, सिंध आदि स्थानोंमें उन्होंने व्यापार किया था। सन् १९२० में हम भी अपने इस फर्ममें कार्य करने लगे थे। हैदराबाद सिंधके अतिरिक्त करांची दिल्ली और बरेलीमें भी फर्मकी शाखाएं थीं। किन्तु सन् १९३० के लगभग फौजी विभागने भारतीय बैंकरोंको फौजमें न रखनेका निश्चय प्रगट किया तथा ठेकेदारी भी विषम हो गई। अतः पिताजीने इस कार्यको करना उचित न समझा। घरपर आकर जमीनदारी आदि कार्यको सम्भाल लिया।

आसामियोंके प्रति उनका व्यवहार इतना सरल था कि वह कठोर शब्दोंमें रुपयोंका तकाजा नहीं करते थे। आसामीकी खुशीमें उनकी खुशी थी। दुकानोंके किरायेदारोंसे किराया इस तरह मंगवाते मानों उनके उपकारमें दबे हों। कुटुम्बी और मित्रजनोंके आपत्तिकालमें उन्होंने निस्वार्थ भावसे सहायता की। स्थानीय मंदिरजीका प्रबन्ध सुचारू रीतिसे वर्षों किया और मंदिरजीकी कायापलट दी—उन्होंने साहू श्यामलालजी और बेनीरामजीके सहयोगसे कर दी। संगमरमरकी वेदियां संगमरमरके फर्श और स्वर्णखचित चित्रकारीसे मंदिरजी चमकने लगा। श्री शिखरजी, गिरिनारजी, जैनबद्रीजी आदि स्थानोंकी उन्होंने एकसे अधिक बार यात्रा की। इस प्रकार उनका जीवन सुखमय बीता था। अलबत्ता अन्तिम जीवनमें सन् १९४० से श्रवण-बेलगोलकी यात्रासे लौटने पर उनको पथरी रोगकी पीड़ाने घेर लिया था जिसको उन्होंने साहससे सहन किया। इसी रोगमें उनका शरीरान्त ता० २० मई १९४८ के प्रातः हो गया।

जनसेवकके रूपमें

अलीगंजमें रहकर बाबूजी समाज-सेवाके कार्योंमें अपनेको निरन्तर लगाये रहे। समय समय पर जनहितके कार्य करते रहे उनमें यथाशक्ति अपना सहयोग दिया। सन् १९३१ से १९४९ तक ऑनररी मजिस्ट्रेट तथा सन् १९४३ से १९४८ तक असिसटेन्ट कलेक्टर रहे। ऐसे पदों पर रहते हुये भी ईमानदारी और सेवा भावनाके बराबर दर्शन होते रहे हैं। तत्कालीन जिलेके उच्च पदाधिकारी तथा सर्वसाधारण जनता आपकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करती रहती थी।

सन् १९४३ के जिलाधीश श्री होबो प्रभो I. C. S. सन् १९४४ के एस० डी० एम० श्री इकरामुद्दीन तथा सन् १९४५ के जिलाधीश श्री के० बी० फैयाजअली बाबूजीकी कार्यतत्परता, तथा चरित्रसे बड़े प्रभावित हुये। श्री इकरामउद्दीनने तो यहां तक कहा था-" मैं श्री जैनको उनको जन सेवाओं और प्रत्येक भले कार्योंमें रुचि रखनेके लिये धन्यवाद देता हूं। कहनेका तात्पर्य तो यह है कि इस क्षेत्रके प्रत्येक राजकीय कार्यमें आप आगे रहे।

मद्य निषेध तहसील कमेटी, महात्मा गांधी निधि-तहसील कमेटी आदिके मन्त्री रहे; पंचवर्षीय योजनाके अंतर्गत विकास योजना क्षेत्रकी शिलान्यास क्रिया समारोहके प्रमुख कार्यकर्ता रहे तथा स्वागत भाषण दिया। इस क्षेत्रमें होनेवाले कवि सम्मेलनों, सभाओं, सोसायटियों, अधिवेशनों, तथा गोष्ठियोंके अध्यक्ष बनते रहे। विभिन्न राष्ट्रीय पर्वो तथा अन्य धार्मिक उत्सवोंपर संभ्रान्त नागरिकके रूपमें अभिनन्दन होता रहा। कितने ही वर्षो तक श्री बैरिस्टर चम्पतरायजी ट्रस्टकी कार्यकारिणीकी समितिके

विश्व जैनमिशन अधिवेशन इन्दौरमें व्याख्यान देते हुए
श्री· डॉ· कामताप्रसादजी जैन, अलीगंज

सदस्य भी रहे। भारतीय इतिहास, परिषद्‌के सदस्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन एटाकी अलीगंज शाखाके संयोजक रहे। कांग्रेसके आन्दोलनोंमें भी सक्रिय भाग लेते रहे।

वैसे तो बाबूजी चुनावके चक्करमें कभी नहीं पड़े फिर भी जबान लोग उन्हें पद देते रहे, ये पद–पदके लिये नहीं और न समाजमें सम्मान अथवा नाम प्राप्तिकी इच्छाके लिये वरन् जिनपदों पर अथवा जिन संस्थाओं और समितियोंमें रहे उनमें जीजानसे तन, मन और धनसे सेवा करते रहे।
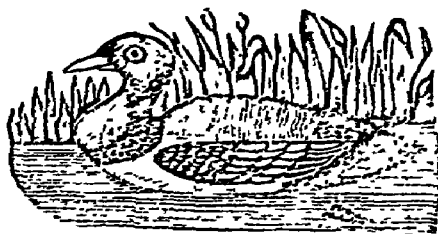
राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान

बाबूजी अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिके महापुरुष थे, जिनके व्यक्तित्वसे सभी प्रभावित तो हुये ही साथ ही भूरिभूरि प्रशंसा भी की गई। 'यशोविजय जैन ग्रन्थमाला'की ओरसे 'भगवान महावीर' विषयक निबन्ध पर 'स्वर्ण पदक' मिला। भारतीय विद्या भवन बम्बईके तत्वावधानमें आयोजित निबन्ध प्रतियोगितामें "हिन्दी जैन साहित्य" निबन्ध पर 'रजत पदक' प्राप्त हुआ। इन्दौर (म० प्र०) की निबंध जांच कमेटीके द्वारा "जैन संख्याके ह्रासके बचनेके उपाय" विषयक निबंध 'सर्वश्रेष्ठ' ठहराया गया।

बैरिस्टर श्री चम्पतरायजी द्वारा संस्थापित जैन एकेडेमीने अपने करांची अधिवेशनमें, जो सन् १९४२ में सम्पन्न हुआ, बाबूजीको डॉक्टर ऑब लोजकी उपाधिसे सुशोभित किया। कनाडाकी ईसाई Pcnmenical Chruch आन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाने सर्व धर्मके तुलनात्मक अध्ययन पर पी. एच. डी. की उपाधि प्रदान की। बनारसकी संस्कृत परिषदने 'साहित्य मनीषी' तथा जैन सिद्धान्त भवन, आराकी स्वर्ण जयन्ती पर 'सिद्धांताचार्य' की उपाधियोंसे सम्मानित किया गया। ब्रिटिश शासनमें अनेक राजकीय प्रशंसापत्र प्राप्त हुये। बादको जनता द्वारा अभिनन्दन पत्र समय समय पर भाषण, अधिवेशन व सम्मेलनोंमें प्राप्त होते रहे हैं।

रॉयल एशियाटिक सोसायटी लन्दनने बाबूजीको सदस्य चुना। जर्मनीकी कीसरलिंग सोसायटीने अपना सम्मान सदस्य तथा मध्य अमेरिकाके अंतर्राष्ट्रीय धर्मसंघने सर्वोच्च सम्मान प्रदान करके अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना व्यक्त की। १५ वें विश्व शाकाहारी सम्मेलनमें उत्तर भारतके देहली अधिवेशनकी स्वागतकारिणी

समितिके मन्त्री रहे। डॉ० राजेन्द्रप्रसाद भूतपूर्व राष्ट्रपतिने जब 'विदेशी शाकाहारी प्रतिनिधियों' के स्वागतार्थ प्रीतिभोजका आयोजन किया उसमें आपको भी सादर आमंत्रित किया गया था।

राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन्से भी कई बार अहिंसा, धर्म तथा दार्शनिक अनेक विषयों पर चर्चा कर चुके हैं। सन् १९५५ में अहमदाबादमें आयोजित ओरिंटियल कान्फ्रेंसमें जैनधर्म और प्राकृतिक विभागके अध्यक्ष बननेका शुभ अवसर प्राप्त हुआ। कितने ही वर्ष तक दि० जैन परिषद् देहलीके वे उ० प्र० के मंत्री भी रहें।
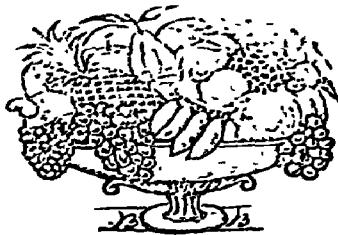
दान धर्मके प्रति निष्ठा

'योग्य पिताजीकी योग्य सन्तान' वाली लोकोक्ति हमने बहुत सुनी है, पर उसके दर्शन हमें बाबूजीमें मिलता है। बाबूजीके पिता, पितामह आदि सभी दान धर्मकी निष्ठाको भली भांति जानते थे। निर्धनोंकी सेवा करना उन्होंने खूब सीखा था। डॉ० साहबके पिता सन् १९४८ में जब अस्वस्थ होगये तो, उन्होंने अपने पितासे कुछ दान पुण्य करनेके लिये निवेदन किया। वह तो पहलेसे ही तैयार थे, अतः १००१) की व्यवस्था उन्होंने कर दी। वैसे बाबूजीकी माताके व्रतोद्यापन प्रसंगमें पिताजीने एक वेदी लगवाकर वेदी प्रतिष्ठोत्सव करवाया था। अतः उस १००१) की दानकी धनराशिको मन्दिर या वेदीप्रतिष्ठामें लगाना उचित नहीं समझा।

जब देशमें हजारोंकी संख्यामें मन्दिर हों, लोग धर्मकी ओरसे विमुख हो रहे हों, चारों ओर पाप कर्म बढ़ रहे हों, अज्ञानांधकार छा रहा हो और वर्तमान मन्दिरोंकी रक्षाका प्रश्न मुंह बायें सामने खड़ा हों, उस समय बाबूजीने यह सर्वश्रेष्ठ कार्य समझा कि जिन व्यक्तियोंकी धर्मके रुचि कम हैं, भौतिकवादकी ओर दौड़ते जा रहे हैं, अज्ञान और अविवेकी हैं, ऐसे लोगोंमें ज्ञानकी ज्योति जलाना उन्होंने पवित्र कर्तव्य समझकर उस पैसेको निर्धन व्यक्तियों तथा सद्‌साहित्य प्रचारमें लगाया।

उस समय शरणार्थियोंकी समस्या अपने देशमें बहुत बड़ी थी, अतः 'शरणार्थी फण्ड' में २२१), गांधी स्मारक निधि १११) तथा १०१) कुन्थुसागर ग्रन्थमालाको प्रदान किये। १०१) उन मन्दिरोंको दे दिया जिनकी स्थिति अच्छी नहीं थी। शेष लगभग पौने पांचसौ रु० ट्रेक्ट छपवाकर देश, विदेशमें वितरित करवानेके लिये सुरक्षित रखा।

बाबूजीका यह विश्वास था कि इससे लोगोंमें ज्ञान, विवेक, सुखशान्ति और प्रेमका वातावरण उत्पन्न होगा। ग्रन्थ प्रकाशनके लिये सुरक्षित धन राशिमेंसे पहला ट्रेक्ट पिताजीकी पुन्यस्मृतिमें 'कृपण जगावनचरित्र' प्रकाशित करवाकर जनता जनार्दनकी सेवामें निशुल्क वितरत करवाया। स्थानीय डी० ए० वी० इन्टर कालेजमें एक कमरेका निर्माण करवाया। स्थानीय मन्दिरमें संगमरमरका फर्श, वाचनालयमें सैंकडों पुस्तकोंका उदारतापूर्वक दान दिया। इसके अतिरिक्त अन्य संस्थाओंके सभासद आर्थिक सहयोगके लिये जब भी आते उन्हें सहयोग देकर कर्तव्य पालन करते रहे। मिशनके प्रचारकार्य, ट्रेक्ट पर्चे, या ऐसी ही अनेक गतिविधियोंमें तीन चारसौ रुपया माह उनका निजी लगता रहा। प्रेसकी आयका आधेसे अधिक भाग धर्मप्रचार व दानमें देनेवाले व्यक्तिके बारेमें क्या प्रशंसा की जावे? स्वयं ही अनुभव करिये कि वह दिव्यमूर्ति कितनी विशाल हृदयी होगी जो दूसरेके दुःखको अपना दुःख समझकर दूर करती थी।

अखिल विश्व जैन मिशनका प्रधान कार्यालयभवन अलीगंजमें निर्मित हुआ जिसमें २० हजारके आसपास रुपया कुल व्यय हुआ। कई हजार रुपयेकी अचल सम्पत्ति बेचकर उसमें लगाकर उस कार्यको पूर्ण किया, इसके साथ ही साथ उच्च स्तर पर वेदी प्रतिष्ठोत्सव भी सम्पन्न कराया जो बाबूजीके जीवनका धार्मिक कार्योंमें अन्तिम कार्य ही माना जाना चाहिए। क्योंकि वह दोनों कार्य मृत्युसे दो माह पूर्व ही किये थे। अपने जीवनमें अनेक ऐसे अनाथ और निर्धन छात्रोंकी सहायता भी की जो बेचारे पढ़नेकी इच्छा रखते हुये भी पढ़नेमें असमर्थ थे, उनके लिये शुल्क, पुस्तकें तथा अन्य जो भी सहायता कर सकते थे, करते रहे।

यशस्वी सम्पादक

आज सम्पादनका अर्थ यह लगाया जाता है कि पत्रिकाओंके लिये आनेवाले लेखोंको वैसाका वैसा ही छाप दिया जावे। यदि कुछ कमी अनुभव हो तो लेखकके पास उस रचनाको वापिस कर दिया जावे, साथ ही एक लेख "सम्पादककी कलम" से किसी ज्वलन्त समस्याको लेकर लिख दिया जावे। पर बाबूजीने सम्पादकका न तो कभी यह अर्थ लगाया और न ऐसा किया ही। ठीक पं० महावीरप्रसाद द्विवेदीकी जो भावना हिन्दी साहित्यके प्रचार-प्रसारकी थी वही बात बाबूजीमें हमें दिखाई पड़ती है। उनका प्रमुख ध्येय नये साहित्यकारोंको जन्म देना रहा है। नवोदित साहित्यकारोंको प्रोत्साहन देना, उनके आये हुए लेखोंके प्रति उदासीनताकी वृत्ति न बनाकर एक कुशल शिक्षककी तरहसे पूरे लेखको पढ़ना, उसमें संशोधन करना, नयी टिप्पणी लगाना और फिर प्रकाशित करवाना था, जिससे प्रत्येक लेखक आशावादी तथा उत्साही बनकर और भी आगे विकासके मार्ग पर पहुंच सके।

'वीर' पत्रके प्रथम सम्पादक नवम्बर १९२३ में बाबूजी ही बने थे। और ३० से भी अधिक वर्षों विशेष आप संपादक बने रहे। लगभग २५ वर्ष तक पं० परमेष्ठीदास जैन ललितपुर (झांसी) भी बाबूजीके साथ वीरके सम्पादक मण्डलमें रहे। इसीलिए उन्होंने कहा भी "बाबूजी इतना लेखन कार्य कर गये कि दूसरे किसीसे भी आशा नहीं" इसके अतिरिक्त सुदर्शन, आदर्श जैन, जैन सिद्धान्त भास्कर, तथा उत्कर्ष (जातीयपत्र) का भी बड़ी कुशलतासे सम्पादन किया। पिछले १४ वर्षोंसे 'वॉइस ऑफ अहिंसा' और 'अहिंसा वाणी' का सम्पादन भी करते रहे। अहिंसा वाणी हिन्दी क्षेत्रोंमें तथा 'वॉइस ऑफ अहिंसा'

अहिन्दी क्षेत्रोंमें खूब लोकप्रिय रही है। 'अंग्रेजी' की पत्रिकाके सैकड़ों अंक तो इंगलैण्ड, जापान, जर्मनी, अमेरिका, और कैनाडा जैसे देशोंको जाते थे। बाबूजीकी 'सम्पादनकला' से ही प्रभावित होकर अहिंसा वाणी और 'वॉइस ऑफ अहिंसा' को पाठक बड़े चावसे पढ़ते थे। अधिकसे अधिक लेखकोंके लेखों, और कविताओंको अन्त समय तक स्थान देते रहे, अपना सम्पादकीय प्रभावशाली छोटा लेख लिखकर ही कर्तव्यको पूर्ण करते रहे।

इतिहाससे प्रेम

बाबूजीने इतिहासका खूब अध्ययन किया। विभिन्न पुस्तकालयों, शोध-संस्थाओं, शिलालेखों तथा अन्य जो भी सामग्री उपलब्ध हुई उसको खूब समझा और परखा। इसीलिए अनेक ऐसे ग्रन्थ हैं जो इतिहासके अनेक तत्वोंपर निर्भर हैं। इतिहासके अध्ययनकी आवश्यकता अनुभव करते हुये श्रद्धेय बाबूजीने "वीर-पाठावलि" की भूमिकामें लिखा है—"जैन इतिहासके अध्ययनमें मेरी रुचि विशेष है और उस दिशामें मैंने कुछ साहित्य निर्माण भी किया है, किन्तु इतिहास एक ऐसा नीरस प्रश्न है कि आबाल वृद्ध वनिता उसे पढ़ना जल्दी स्वीकार नहीं करते। विवेचनात्मक पुरानी बातोंमें कलामय औपन्यासिक सरलता भला कहांसे आये? परन्तु साथ ही यह सच है कि बिना पुरानी बातोंको जाने कोई जाति अपनी उन्नति नहीं कर सकती।" यदि यह कहा जावे कि बाबूजी प्रथम इतिहासकार हैं और बादको समाज सुधारक तो अनुचित न होगा। इनके लोकप्रिय होनेका प्रमुख कारण इतिहाससे प्रेम ही है। जो कुछ भी लिखा है उसमें अधिकतर सामग्री इतिहासके आधार पर ही है। 'जैन जातिका ह्रास', संक्षिप्त जैन इतिहास भाग १, भाग २ खण्ड १, भाग २ खण्ड २, भाग ३ खण्ड १, भाग ३ खण्ड २, ३, ४, ५, और भाग ४ खण्ड १-२, प्राचीन जैन लेख संग्रह, जैन वीरोंका इतिहास, आदि अनेक प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

बाबूजीकी कुछ पुस्तकोंका अनुवाद तो गुजराती, चीनी, जापानी आदि भाषामें हो चुका है। "जैनधर्म चारित्र्य" का अनुवाद गुजराती भाषामें सन् १९५६ में, तथा "बाहुबलि" नामक अंग्रेजी पुस्तकका अनुवाद चीनी भाषामें हुआ है। इस

प्रकार बाबूजीने विदेशियोंके लिए भी अनेक संस्कृत व हिन्दी पुस्तकोंका अनुवाद अंग्रेजीमें किया तथा विदेशियोंके द्वारा लिखे गये अनेक उपयोगी लेखोंका हिन्दी भाषा भाषियोंके लिए हिन्दीमें अनुवाद किया। वैसे अनुवादका कार्य कोई विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं है पर विशेषता तो इसमें है कि उसकी मौलिकलता समाप्त न होने पाये, यही बात इनके अनुवादित ग्रन्थोंमें पाई जाती है।

साहित्य सेवाके क्षेत्रमें

बाबूजीकी धार्मिक पुस्तकोंके स्वाध्यायकी रुचि वृद्धि करनेका श्रेय स्वर्गीय श्री देवेन्द्रप्रसादजीको है जिन्होंने अपने यहांसे प्रकाशित होनेवाली सारी पुस्तकें एकबारमें ही भेज दीं। धीरे धीरे साहित्यके प्रति अभिरुचि बढ़ने लगी और धर्मके प्रति निष्ठा भी गतिशील हुई तो 'जैनमित्र' और 'दिगम्बर जैन' पत्रोंके ग्राहक भी बन गये तथा इनमें लेख लिखकर भी भेजने लगे। बाबूजीने स्वयं ही एकबार कहा था—"जैनमित्रके सम्पादक श्री ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने उत्साह वर्द्धनार्थ किन्हीं किन्हींको मित्रमें स्थान दिया। फलतः लिखना न छूटा, लिखता रहा तो लिखना आ गया।" नियमित अभ्यास करनेसे कठिनसे कठिन कार्य भी सुलभ बन जाते हैं। और दैनिक लेखन कार्यसे बाबूजीका स्थान विश्वके उच्च कोटिके साहित्यकारोंके बीच स्वतः ही बन गया।

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकरने बाबूजीके सम्बन्धमें ठीक ही कहा है—"जैन साहित्य उनका विषय है, जैन इतिहास उनकी विचारधारा है और उनका मिशन है समयके प्रभावसे जैन धर्मके दिव्य दिवाकर पर छाये हुये बादलोंको हटाकर विश्वको उसके प्रकाशसे आलोकित करना।"
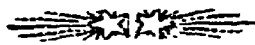
बाबूजीका कृतित्व

बाबूजीने अपने जीवनमें लगभग १०० पुस्तकें हिन्दी व अंग्रेजी भाषामें इतिहास, धर्म, दर्शन एवं साहित्य पर लिखी हैं जिनका हम यहाँ विहंगावलोकन करेंगे।

महारानी चेलनी

जून सन् १९२५ में बाबूजी द्वारा लिखित १७० पृष्ठकी यह पुस्तक महारानी चेलनीके जीवनचरित्र पर प्रकाश डालती है। यह जीवनचरित्र कोई साधारण कहानी नहीं है वरन् प्रत्येक गृहस्थके पढ़नेयोग्य उपदेशात्मक कथाका धर्म-ग्रन्थ है।

भारतमें अनेक ऐसे चारित्रवान व्यक्ति हुये हैं जो प्रकाशमें नहीं आ सके। वीरांगनाओं और विदुषी महिलाओंकी तो इससे बुरी स्थिति है। इसी कारण समाजमें देवियोंका जो पूर्वमें स्थान था वह अब नहीं है। बाबूजीने जिस उद्देश्यको लेकर इस ग्रन्थकी रचना की है वह इस प्रकार है—"अपने घरोंको यदि हमें दिव्य शृङ्गारसे अलंकृत बनाना है तो आदर्श भारतीय रमणियोंके पावन जीवन पुनः प्रकाशमें लाना नितांत आवश्यकता है। प्रस्तुत पुस्तक इस ही बातको लक्ष्यकर प्रकट की जारही है।"

तत्कालीन राज्य और लिच्छिव वंश, गणराज्य और न्यायकी आदर्श व्यवस्थाका इस पुस्तकसे पूरी तरह पता चलता है। चेलनीकी कौमारावस्थाके साथ ही साथ सुन्दरताका वर्णन किया है। गुणहीन सौन्दर्यको वेकार बताते हुये पुत्रीमें भी पुत्र जैसे प्रेमके दर्शन करते तथा पुरातन भारतीय आदर्शको सामने रख-कर माता-पिताको स्वयं सुसंस्कारित बननेकी शिक्षा दी गई है। वैसे चेलनीकी कौमारावस्था, सम्राट श्रेणिकका परिचय, विवाह, चेलनीकी धर्म-परीक्षा, सम्राट श्रेणिक और यशोधर मुनि, सम्राटकी सम्यक्त्वमें दृढ़ता, महारानीका गृह-सुख तथा अन्तिम त्यागमय जीवन आदिकी सुन्दर झांकी तो दर्शनके लिये मिलती ही है। पर साथ साथ माता-पिता अपने बच्चोंके साथ कैसा तरहका व्यवहार करें? विधवाएं अपना जीवन कैसे बितायें?

परिवारके लोगोंका कर्तव्य विधवा स्त्री के प्रति क्या है? वधुओंको अपना गृहस्थ जीवन किस तरह पूर्ण करना चाहिए? विवाहकी रूपरेखा क्या हो? कितना व्यय किया जावे? फैशनसे कौनसी हानियां हैं? और बाल तथा वृद्ध विवाहोंका अन्त महिलाओंके द्वारा कैसे हो सकता है? आदि आदि अनेक तत्कालीन समस्या, कुरीतियों, और कुसंस्कारोंसे छुटकारा प्राप्त करानेके सम्बन्धमें शिक्षा दी गई है, और उपाय सुझाये गये हैं। यदि हम चाहें तो महारानी चेलनीके जीवनसे बहुत कुछ सीख कर अपने जीवनमें गुणोंका समावेश करा सकते हैं। "उनका जीवन परम आदर्शरूप है, परन्तु उससे शिक्षा ग्रहण करना अथवा न करना हमारे आधीन है। लेकिन जो सुखकी खोजमें हैं वे अवश्य ही उनके दिव्य चरित्रसे शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवनको सफल बनायेंगे क्योंकि महापुरुष जिस पथका अनुसरण करते हैं वही ग्राहनीय होता है–'*महाजनाः येन गताः सः पंथः*।"

बाल–चरितावली

यह बालोपयोगी २० पृष्ठकी पुस्तक शिक्षाप्रद तथा सरल भाषाकी है। जिसमें ७ कहानियाँ महावीर वर्धमान, जम्बूकुमार, श्री भद्रबाहु, धीर–वीर चन्द्रगुप्त, ऐल खारवेल, निकलंक और पार्श्वनाथकी हैं। बच्चे इसे मनोरंजनके लिए पढ़ सकते हैं और बहुत कुछ भावी जीवनके लिए सीख सकते हैं। बच्चे भावी जीवनके निर्माता हैं, वे ही आगे चलकर देशके कर्णधार और महान आत्माके रूपमें हमारे सामने आते हैं। इसलिये प्रारंभमें ही उनका जैसा जीवन बना दिया जाता है वैसा ही आगे चलता रहता है। सादा जीवन, प्रेम, वीरता, आज्ञापालन, अनुशासन, संयम, चारित्र निर्माण, परमार्थ, बाल विवाह न करना, और आत्मकल्याण जैसे अनेक विषयोंकी शिक्षा कहानियां तथा महापुरुषोंके जीवनसे सम्बन्धित कर बताई गई हैं, जिन्हें

पढ़कर प्रत्येक बालक और बालिकाके मनमें आदर्श जीवन व्यतीत करनेकी जिज्ञासा उत्पन्न होती है। ब्रह्मचर्यपूर्वक रहने तथा विवाह देरसे करनेकी शिक्षा जम्बूकुमारके जीवन वृतान्तसे इस प्रकार मिलती है—

"बालको! तुम भी जम्बूकुमारके जीवनसे कुछ शिक्षा ग्रहण करो। प्रतिज्ञा करलो कि जब तक तुम खूब पढ़-लिखकर होशियार न हो जाओ, विवाह नहीं करोगे। पढ़ते हुये तुम पूरे ब्रह्मचर्यसे रहोगे और व्यायाम करके शरीरको पुष्ट रक्खोगे। यदि तुम जम्बूकुमारके समान वीर सैनिक बनोगे तो अपने देशकी सच्ची सेवा कर सकोगे तथा लोकका और खुद अपना आत्मकल्याण कर पाओगे। भावना करो, तुममेंसे प्रत्येक जम्बूकुमार हो और मावापका मुख उज्ज्वल करो।"

सत्य-मार्ग

जुलाई सन् १९२६में प्रकाशित ४४० पृष्ठकी यह 'सत्य मार्ग' नामक पुस्तक बाबूजी द्वारा लिखित है। इसमें हिंदी, अंग्रेजी व उर्दूके लगभग ४१ ग्रन्थोंके स्वाध्यायका निचोड़ है। यह ४१ ग्रन्थ सहायक हैं जिनकी सूची भी पुस्तकमें दी हुई है। जन्म लेनेवाला प्रत्येक जीव सुख शान्ति चाहता है पर प्रयत्न करनेके बाद भी वह प्राप्त नहीं कर पाता। संसारके लोग झूठे मार्गको सच्चा मार्ग समझते रहते हैं और असत्य सुखको ही सच्चा सुख समझ कर जीवनके अमूल्य क्षण नष्ट किया करते हैं। इस पुस्तकमें सच्चे सुखको प्राप्त करनेका सच्चा मार्ग बताया गया है। ताकि प्रत्येक प्राणी मूल भुलैयोंमें न पड़कर अपना जीवन पूर्ण रूपसे सफल बना सके। अनेक लोग इन्द्रिय लिप्सा, धनोपार्जन तथा अन्य सांसारिक वैभवोंको सुख समझते हैं पर वे शायद अपने जीवनकी सबसे बड़ी भूल करते हैं। सच्चा सुख कहीं बाहरकी

वस्तु नहीं है वह तो अपनी आत्मामें ही है। आत्म निरीक्षण, आत्मध्यान और आत्माकी भक्तिसे ही सब कुछ प्राप्त हो सकता है। आदर्श गृहस्थ जीवन व्यतीत करनेवालोंको देवपूजा, गुरुदेवकी सेवा, स्वाध्याय करना, आत्मसंयम, तप व दान देना चाहिए। नशीली वस्तुओंसे बचना, मांसाहार न करना, सत्य बोलना, दूसरेकी सम्पत्ति देखकर मनोविकार उत्पन्न न होने देना, दूसरेकी मां बहिनोंमें भी मातृत्वकी भावना रखना, आवश्यकतासे अधिक वस्तुओंका संचय न करना, जैसे आदर्श गुण सन्त महात्माओंने गृहस्थ जीवनके लिये अनिवार्य बताये हैं इन बातोंका पालन करनेवाला गृहस्थ आदर्श जीवन व्यतीत कर लोक और परलोक दोनों ही सुधार सकता है।

श्री ब्र० शीतलप्रसादजी सम्पादक 'जैनमित्र' सूरतने इस पुस्तकके बारेमें लिखा है—"पुस्तकमें अहिंसा और मांसाहार निषेधका कथन हिन्दू, ईसाई, मुसलमान, पारसीकी पुस्तकोंके वाक्य देकर इतना बढ़िया किया गया है, यदि ये लोग अपनेर धर्मग्रन्थोंके वाक्यों पर श्रद्धा रखके चलना चाहें तो उनके लिये यह अनिवार्य हो जायगा कि वे एकदम पशु हिंसा और मांस खाना छोड़ दें। वास्तवमें गृहस्थोंको सत्य मार्ग दिखानेमें इस पुस्तकने एक आदर्श रख दिया है।"

लाला फूलजारीलाल जैन जमीदार करहल जि० मैनपुरी (उ० प्र०) की यह तीव्र इच्छा थी कि सभी गृहस्थोंको सत्य मार्गपर प्रेरित करनेके लिये एक ऐसी पुस्तक लिखवाकर प्रकाशित करवाई जावे, जिससे मानव जातिका बड़ा उपकार हो, पर लालाजीकी इच्छाको पूर्ण करनेके लिये कोई भी जैन विद्वान तैयार न हुआ, तब उनकी यह इच्छा बाबूजीने ही पूर्ण की। और शीघ्र ही इतनी बड़ी पुस्तक लिखकर उन्हें भेंट कर दी। बाबूजीने इस पुस्तकमें अपनी भावना भी इस प्रकार प्रकट की

है—"हमारी यह भावना है कि सर्व साधारण महाशय इससे उचित लाभ उठाकर अपने जीवनको अहिंसा पूर्ण और उन्नतिशील बनावें।" सुखके राजमार्गके विभिन्न उपाय, उपासना और प्रार्थनाकी विधि, मूर्ति पूजाका कारण, हिन्दू, ईसाई, बौद्ध व इस्लाम धर्ममें बलिदानकी भावनाका महत्व, तीर्थयात्राका वास्तविक स्वरूप, संयमकी जीवनमें आवश्यकता, अहिंसाका सैद्धान्तिक विवेचन, अहिंसाव्रतके सहायक साधन, और ब्रह्मचर्य व्रतकी महिमा जैसे अनेक जीवनोपयोगी अंगोंकी इस ग्रन्थमें सविस्तार विवेचना की है। चौर्य कर्मकी भी खूब निन्दा की गई है तथा जुआ खेलनेको भी पापकर्म बताकर उससे छुटकारा पानेके लिये जोर दिया है।

जुआको भी चोरी ही बताते हुए बाबूजीने लिखा है—"विवेक बुद्धिके लिये जुआ खेलनेका त्याग चोरीकी तरह करना ही श्रेष्ट है। चोरीकी तरह यह भी पापका कारण एक तरहसे प्रकट चोरी ही है। इसके अभ्याससे मनुष्यमें सहज ही अन्य आवश्यक दुर्गुण आजाते हैं अतएव जुए और चोरीके त्यागमें उसका कल्याण है।

अपरिग्रह-व्रतकी व्याख्या भी की गई है। इस प्रकारके परिग्रह शास्त्रोंके आधार पर बताये हैं जो यह हैं—क्षेत्र, वास्तु, हिरण्य, सुवर्ण, धन, धान्य, दासी, दास, मांड, कुप्प। इस व्रतके करनेका मुख्य ध्येय तृष्णा व लोभसे बचनेके लिये होता है। सन्तोषके अभावमें जीवन दुःखी होता चला जाता है। व्यक्ति स्वय ही अपने दुःख सुखका उत्तरदायी होता है, उसके सुख दुःखमें अन्य कोई भी भागीदार नहीं हो पाता।

इसीलिये शांति प्राप्त करनेके लिये भी स्वयं प्रयास करना पड़ता है। पर मानवीय स्वभाव पानीके प्रवाहकी तरह होता

है। पानी सदैव नीचेको बहता है और वैसे ही मानव बुरी प्रवृत्तियोंकी ओर अपने आप बढ़ने लगता है। पानीको ऊपर चढ़ानेके लिये कठिनाइयाँ होती हैं वैसे ही मानवीय प्रवृत्तिको सत्मार्ग पर मोड़नेके लिये बाधाओंका सामना करना पड़ता है। सबको अच्छाइयोंकी ओर बढ़ना है, पश्चिमी सभ्यताके स्थानपर अपने अध्यात्मवादको ही टटोलना अच्छा रहेगा।

बाबूजीने इसका कारण भी बताया है—"स्वयं पश्चिमीय देशोंको उसके कटुक फलोंसे भय लग रहा है। वे उससे असंतोषित हैं। किंचित् अध्यात्मवादकी ओर नेत्र फेर रहे हैं। ऐसे समयमें हम भारतीयोंको अपने प्राचीन ऋषियोंके वाक्योंमें श्रद्धा लाना हितकर है।........अपनी आत्माके सच्चे स्वरूपमें विश्वास करके जब शाश्वत सुखकी ओर हम भारतीय दृढ़ बद्ध परिकर होंगे, तभी हमारा कल्याण होगा। हमारा सच्चा आत्मज्ञान और आत्मश्रद्धान हमारा उद्धार करेगा।

जैनधर्म और सम्राट् अशोक

सन् १९२९ में लिखित ४८ पृष्ठीय पुस्तक "जैनधर्म और सम्राट अशोक" को देखनेसे यह ज्ञात होता है कि अशोकका नाम इतिहासमें अमर है उसका प्रमुख कारण जैनधर्मका प्रचार है। यदि अशोक महानकी भांति आजके शासक अपना जीवन उपतोत करें तो वह दिन दूर नहीं जब पुनः सुख और शांतिकी भागीरथी प्रवाहित होने लगे। इसमें मौर्यवंश और अशोकके पूर्वजोंके राज्याभिषेक तथा धर्म प्रचारके कार्यका वर्णन किया है। जनतामें एक धारणा हजारों वर्षोंसे चली आ रही है कि अशोक कलिंग विजयके बाद बौद्ध धर्मका अनुयायी बना, पर डा० फ्लीट, प्रो० मैकफेल, मि० मानहल, मि० हेरस, डॉ० कर्नेल साहब, टूल्स साहब, इस कथनके विरोधमें मत प्रकट करते हैं।

बाबूजीने स्पष्ट ही लिखा है "उसने अहिंसा तत्वका महत्व जैन गुरुओंसे सुना था, इस उपदेशका प्रभाव उसके हृदयपटलपर अंकित था और उसने कलिंग विजयके पहलेसे ही राजकीय रसोईघरमें मांसभोजी सम्बन्धियोंके लिये पशुओंका मारा जाना कम करा दिया था।"

प्रो० कर्न तथा टामसने अशोकको जैनी बताया है। जिन शासनका प्रचार कियाथा, अबुलफजलकी 'आईने अकबरी' राजतरंगिणी, जैसे ग्रन्थ भी जैनत्वको स्वीकार करते हैं। अशोकके द्वारा दी गई सारी शिक्षाएं भी जैनधर्मसे सम्बन्धित बताई गई हैं। अनेक शब्द जैसे श्रावक, प्राण, जीव, श्रमण, प्राण, अनारम्भ, भूत, कल्प, एकदेश, संबोधि, वचनगुप्ति, समवाय, वेदनीय, अपासिनवे, आसिनव, जीवनिकाय, प्रोषध, धर्मवृद्धि आदि शब्द जो शिलालेखोंमें हैं वे जैन साधुओं द्वारा व्यवहृत अथवा जैन ग्रन्थोंके ही हैं। विविध ग्रन्थों तथा शिलालेखोंके आधार पर अशोकका जैनी होना ही ठहरता है, लिजिये आप भी बाबूजीके शब्दोंमें ही सुन लीजिए "अशोकका बचपनसे ही जैनधर्मसे संसर्ग था। अपने प्रारम्भिक जीवनमें वह जैनधर्मानुयायी था, यह बात जैनोंके ग्रन्थोंके साथर बौद्धोंके कथन और उसके शिलालेखोंसे भी प्रकट है। जैन ग्रन्थ तो उसे प्रारम्भमें जैन तीर्थोंकी वन्दना करते हुये और जैन मन्दिर बनवाते हुये प्रकट करते ही हैं......निस्सन्देह अशोक अपने जीवनके प्रारम्भमें जैन श्रावक था।

जैन वीराङ्गनाएं

"जैन वीराङ्गनाएं" नामक ८० पृष्ठका ग्रन्थ बाबूजी द्वारा लिखित सन् १९२० में प्रकाशित हुआ, जिसमें ७ वीर माताओंकी गौरव गाथाओंको अंकित किया गया है। बाबूजी नारियोंको अबला कहना उनका अपमान समझते थे, वे सबला हैं इसलिये प्रगतिके द्वार उनके लिये समान रूपसे खुले रहने चाहिए। महिलाओंकी महिमा तथा उनके उद्धारकी भावना समाजमें जागृत करनेके लिये ही इसकी रचना हुई है। पुरातन महिलाएं खाने, पीने और घर बैठने तक ही अपने कर्तव्यको नहीं माने बैठी थीं, वरन् अपना और जन—सुधारका कार्य कर अमरत्वको प्राप्त हो गई।

सती चन्दनबाला, महारानी सिंहपथा, महारानी वीरादेवी, वीराङ्गना सावियब्बे, वीराङ्गना जक्कमब्बे, विदुषी विजयकुमारी और वीरमाताके जीवनको वीरत्व पूर्ण, सोये मनको जगानेवाली तथा खून खौलनेवाली घटनाओंका वर्णन किया है। इस पुस्तकको पढ़नेसे नर नारी दोनोंके ही हृदयमें वीरताके अंकुर फूट पड़ते हैं और देश धर्मपर कुरबान होनेवालोंकी स्मृतिमें कर्तव्य मार्ग पर अड़े रहनेकी प्रेरणा मिलती है।

श्री ऋषभदेवकी उत्पत्ति असंभव नहीं है

आर्यसमाजके नेता पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री द्वारा रचित ट्रेक्ट "श्री ऋषभदेवजीकी उत्पत्ति असम्भव है" के उत्तरमें उत्पत्ति सम्भव बताते हुये बाबूजीने सन् १९२० में ७६ पृष्ठकी यह पुस्तक लिखी। इस पुस्तकको पढ़नेसे यह ज्ञात होता है कि बाबूजीकी आत्मा यहांके अन्धविश्वास, और सम्प्रदायवादको देखकर आठ आठ आंसू बहा रही है। वे बड़े दुःखी जान पड़ते हैं, इसका प्रमुख कारण यही है कि लोग अपने अपने विचारोंको बिल्कुल

सत्य मान लेते हैं, विभिन्न मन्तव्यों तथा विभिन्न प्रमाणित ग्रन्थोंका अवलोकन किये बिना सच्चाईकी चुनौती भी देते हैं।

शास्त्रीजीके विरोधी ट्रेक्टको देखकर जो शब्द इस पुस्तकमें बाबूजीने लिखे हैं उससे उनकी निर्भीकता और निष्पक्षताकी सहज ही जांच हो जाती है "बड़े नामका काम, बड़ा होगा, यह अन्दाजा लगाना कुछ बेजा नहीं। हमने भी ऐसा ही अनुमान किया और बड़ी उत्सुकतासे इस पुस्तिकाको हमने पढ़ डाला! लेकिन अफसोस, बड़ी दुकान पर फीका पकवान पाया। सिवाय साम्प्रदायिक विष उगलनेके इसमें कहीं भी सत्यको पा लेनेका प्रयत्न नहीं किया गया है। अपितु जैन मान्यताओंका मजाक उड़ानेके अतिरिक्त इसमें और कुछ है ही नहीं। इतने पर भी लेखक महोदयने अपनी इस कृतिको सत्यका दर्पण प्रकट करते हैं, यदि वस्तुतः यह ऐसा होता तो हमारे लिये बड़े हर्षका स्थान था, क्योंकि इससे भारतीय साहित्यका बड़ा हित सध जाता...... भला उनके इस एकपक्षी निर्णयको कौन बुद्धिमान निखिल सत्य स्वीकार कर लेगा?"

अयोध्याको इन्द्र द्वारा बसाने, ऋषभदेवका गर्भमें आना, जन्मकल्याणक, यौवनकाल, विवाह तथा तपश्चर्या, समवशरण, और निर्वाणसे सम्बन्धित जितनी आपत्तियां उठाई गई हैं उनका खोज और तर्कपूर्ण उत्तर दिया है। शास्त्रीजीको भी जैनियोंको उपदेश देनेकी जल्दबाजी न करने, जैन साहित्यका अध्ययन करके ही कलमको कष्ट देने, गल्ती सुधारने, और सरलहृदयी बनानेका सुझाव दिया है। बाबूजीने दावेके साथ यह सिद्ध किया है "हम दावेके साथ यह घोषित करते हैं कि भगवान ऋषभदेव एक वास्तविक महापुरुष थे और उनकी उत्पत्ति बिल्कुल संभव है।"

रत्नत्रय कुँज

५६ पृष्ठकी यह पुस्तक सन् १९३० में प्रकाशित हुई। इसमें विद्यावारिधि जैन दर्शन दिवाकर बाबू चम्पतरायजी जैन बैरिस्टर एटलाके विदेशोंमें दिये गये तीन अंग्रेजी व्याख्यानोंका हिन्दीमें अनुवाद किया गया है। प्रथम भाषण २८ नवम्बर सन् १९२६ को पेरिसमें "जैनधर्मके चारित्र-नियम", दूसरा फ्रांसमें २६ दिसम्बर सन् १९२६ को "जैनधर्म और उसकी अशांति मेटनेकी शक्ति", तीसरा दि० ६ जनवरी १९२७ में इटलीमें "धर्म और तुलनात्मक धर्म" पर दिया गया था। ये व्याख्यान बड़े महत्वपूर्ण हैं, इसीलिए बाबूजीने हिन्दीमें अनुवाद कर सर्व साधारणके लिये उपयोगी बनानेका प्रयास किया है।

वैज्ञानिक और वास्तविक तथ्योंपर जैन धर्मका आधारित होना, सम्यक्चारित्रके वे व्यवहार सिद्ध नियम, निरामिष भोजनकी विशेषता, तीर्थंकरोंकी ऐतिहासिकता, तीर्थंकर शब्दका भाव, आत्माकी अमरता, और प्रेम तथा अहिंसा सिद्धांतकी व्यापकता पर काफी जोर दिया गया है। बाइबिल, हिन्दू ग्रन्थ, तथा अनेक विदेशी विद्वानोंके विचारोंको भी व्यक्त किया गया है।

जैन वीरोंका इतिहास

"जैन वीरोंका इतिहास" नामक यह पुस्तक ८६ पृष्ठकी है, जिसे बाबू कामताप्रसाद जैनने लिखा और अप्रैल १९३१ में प्रकाशित हुई। जैन इतिहासकी अनेक पुस्तकोंसे लोग वंचित हैं, उन्हें पढ़ने-देखने तथा समझने तकका लोग प्रयास नहीं करना चाहते। ऐसे प्रमाणिक इतिहासोंके प्राप्त हुए बिना जैन वीरोंके बारेमें कुछ भी लिखना कष्ट साध्य और कठिन ही सिद्ध होता है। फिर भी अपने अध्ययन और अनुसंधानके बलबूते पर जो

कुछ भी लिखा है वह ठीक तो है ही, पर लिखनेका मुख्य उद्देश्य यही जान पड़ता है कि इसके पढ़नेसे समाजके व्यक्तियोंमें नव चेतना उत्पन्न हो, और वीरता, त्याग, कर्तव्य-परायणता एवं चरित्रकी अनुपम शिक्षा लेकर अपने मार्गपर आगेकी ओर बढ़ सकें।

पुराणकालसे लेकर १६ वीं शताब्दी तकके अनेक जैन राज-कुलों तथा वीर पुरुषोंका वर्णन किया गया है। वीरांगनाओंको भी भुलाया नहीं है। ऋषभदेव, चक्रवर्ती, अरिष्टनेमि, महावीर जैसे तीर्थंकर, श्रेणिक, उदायन, चन्द्रप्रद्योत, नन्दिवर्द्धन, चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, शंकरगण, भोज और नरवर्मा जैसे राजाओं, वीरधवल, पाहिल, भामाशाह, आशाशाह, सेनापति अमरचंद, अमरचंद दीवान, जैसे वीरों तथा खारवेलकी रानी, भैरवदेवी, सवियब्वे और जकमब्वे जैसी वीरांगनाओंका वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों जैसे मैसूर, विजयनगर, बीकानेर, जोधपुर और गुजरातमें जो वीर हुये हैं उन्हें भी भुलाया नहीं गया है।

कलभ्रवंशी, कलचूरिवंशी, पल्लववंशी, चेरवंशी, कोंगलवंशी, चेंगलवंशी, पाण्डवंशी, कोदम्बवंशी, होय्यसलवंशी, गंगवंशी, और आन्ध्रवंशी राजा महाराजाओं, सेनापतियों, दीवानों तथा अन्य वीरात्माओंके जीवन पर प्रकाश डाला है। महापुरुषोंकी जीवनगाथाएं समाजका सार होती हैं। उनके त्याग और वीरताकी कहानी पढ़तेर हर किसीके खूनमें उबाल आ जाता है। जो बातें लम्बे चौड़े भाषणोंसे हमें नहीं मिलती वह अपने आप सादगी-पूर्ण जीवन व्यतीत करनेवाली व पुरुषार्थी बनने आदिके लिये प्रेरणा जीवनियोंसे मिल जाती है। यह देश महिलाओंका भी सदा सम्मान करता था, वह अबला नहीं सबला थीं, उनकी शक्ति बापूजीके शब्दोंमें सुनिए—

"केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगतमें गर्व था।
गृहदेवियां भी थीं हमारी देवियां सर्वथा॥"

× × ×

अबला जनोंका आत्मबल, संसारमें वह था नया।
चाहा उन्होंने तो अधिक क्या, रवि उदय ही रुक गया॥

अन्तमें सच्चे वीरके स्वरूपको बताते हुये प्रेरणा लेनेकी आज्ञा प्रदान की है।

वीर वह है जिसके हृदयमें दया हो, धर्म हो।
पापियोंके वास्ते, निर्दोषोंके हकमें नर्म हो॥
कष्ट हो, दुख हो, न वह लेकिन सचाईसे फिरे।
जख्म खाकर भी न मुँह, उसका सचाईसे फिरे॥

दिगम्बर मुनि

नवम्बर सन् १९३१ में प्रकाशित होनेवाली "दिगम्बर मुनि" नामक ३२ पृष्ठीय पुस्तक बाबूजी द्वारा रचित है। भूमिकामें प्रो० घासीराम जैन विक्टोरिया कालेज ग्वालियरने पुस्तक लिखनेके उद्देश्य तथा समाजकी आवश्यकताको स्पष्ट कर दिया है। "कालदोषसे सर्वसाधारण लोग नग्नताके महत्वको भूल बैठे हैं। और इस कारणसे परम पवित्र, अन्तरंग व बाह्य विकार-शून्य, निष्परिग्रही मोक्षमार्गके साधक, दिगम्बर मुनियोंके विचरनेमें लोगोंके द्वारा रुकावटें डाले जानेकी चेष्टा हो रही है। इस छोटीसी पुस्तकमें लेखक महोदयने बड़े परिश्रमसे प्रमाण एकत्रित कर यह सिद्ध कर दिया है कि सभी धर्मोंके धर्म-ग्रन्थ नग्न अवस्थाको आदर्श मानते आ रहे हैं और इसी कारणसे प्राचीन इतिहासकालसे लेकर आजपर्यंत किसी भी शासनके राज्यमें दिगम्बर मुनियोंके विहारमें कोई बाधा नहीं डाली गई।"

दिगम्बर मुनि अपनी प्राकृतिक वेषभूषामें रहते हैं, उनके

समय सभी नग्न रहते हैं, यह प्रारम्भिक स्थिति मानवकी आदर्श और परमहंस स्थिति है। वास्तविक जीवन जीनेकी कला यदि किसीको आती है तो वे दिगम्बर मुनि ही हैं। जिसकी दिशाएं ही स्वयं अम्बर वस्त्र होती हैं वही तो दिगम्बर मुनि कहलाते हैं। इस प्रकार दिगम्बर शब्दकी व्याख्या, और परिभाषा तो प्रारंभमें ही कर दी गई है। अपरिग्रही जीवन ही सबसे बड़ा जीवन माना जाता है जिसके दर्शन इन मुनियोंमें सबको मिलते हैं। सच्चे साधूके विषयमें बापूजीने कहा है—"दिगम्बर रूप सरलताकी पराकाष्ठा है। उसमें दिखावट नामको नहीं है। जो कुछ है सो वास्तविक—निस्तर सत्य ! और एक साधुको बिल्कुल सच्चा होना ही चाहिये। भीतर बाहर जब यह एकसा होगा तब ही वह साधु एकसा हो सकता है।"

मुनियोंके वस्त्रहीन रहनेकी आवश्यकता पर बल देते हुये लन्दनके अजायबघरमें खुले आम युवतियोंको नंगे चित्र खींचने, माताकी गोदीमें बालकका नंगा पड़ा रहने, निर्वाणकी प्राप्ति करने श्रीमद्भागवत (स्कन्ध ५ अध्याय ५) में ऋषभदेवको केश खोल उन्मत्तकी भांति नग्न होने, हिन्दुओंके कापालिका नागा साधु भृतहरिके 'वैराग्य शतक'में 'दशो दिशाएं जिनके वस्त्र हैं' को धन्य मानने, प्राचीन भारतके आजीविक सम्प्रदायके साधुओंको नग्न रहने, बौद्धोंमें नंगे साधु होने, अबीसिनिया और बेक्ट्रियामें नंगे साधु मिलने, मिश्र और यूनानमें नंगी मूर्तियां मिलने, मुहम्मद साहबसे पूर्व काबाकी नंगे प्रदक्षिणा करने, ईसाई धर्ममें प्रभु द्वारा अभोजके लड़केको नंगे रहनेका आदेश देने, मिश्रदेशकी सुन्दरी सेंट मेरीके नंगे रहने और यहूदी धर्म ग्रंथों आदिकी अनेक तर्क संगत विवेचनाएं भ्रम निवारणके लिये रखी हैं।

मौर्य साम्राज्य, सिकन्दर महान, यवन राजा, नन्दराजा,

सम्राट खारवेल, गुप्तराज, सम्राट हर्ष, राजा भोज, सिद्धराज जयसिंह, सम्राट अमोघवर्ष, शेरशाह, अकबर, औरंगजेब आदि अनेक राज्यकालोंमें दिगम्बर मुनियोंको विहार करते हुए देखा गया है. यह कोई नई चीज नहीं है. बाबूजीने इसीमें लिखा है, "दिगम्बर जैन मुनियोंका सर्वत्र विहार करना धर्म और कानून सब ही तरहसे उचित है। इस पर किसीको आपत्ति हो ही नहीं सकती। अज्ञात कालसे भारतमें नग्न जैन साधु होते आये हैं, और आज भी वह इन पवित्र भूमिको अपने दिव्य भेष और पुण्य चरित्रसे अलंकृत कर रहे हैं। यह इस देशका सौभाग्य है।"

भगवान महावीरका समय

इस ३२ पृष्ठीय पुस्तकका लेखन कार्य जुलाई १९३२ में हुआ। भगवान महावीरके निर्वाण सम्वतके सम्बन्धमें विद्वानोंमें मतभेद था। वैसे अनेक विद्वानोंने इस समस्या पर अपने अपने विचार शोधके आधार पर प्रकट किये। उनका अध्ययन कर तथा इस सम्बन्धमें और खोज बीनकर वीर निर्वाण सम्वतका शुद्ध रूप समाजके सामने रखा। महात्मा बुद्ध और भगवान महावीरके समकालीनता तथा विद्वानोंके विचारोंसे जन्मसे लेकर मृत्यु तकके सभी पहलुओं पर संक्षिप्तमें प्रकाश तो डाला ही है पर साथ ही यह भी नहीं भुलाया गया है कि भगवान महावीरका समय कौनसा है? विभिन्न शास्त्रों, डॉ० जैकोबी, प्रो० जार्ल चार्पेन्टियर और श्री देवसेनाचार्य जैसे शोधियों विद्वानोंके साहित्यावलसे समयकी पुष्टि करनेका भरसक प्रयास किया है।

डॉ० साहबने सभी मतों पर विचार करते हुये यही लिखा है "जैन समाजमें एक थोड़े समयसे ही उनका निर्वाण ई० पूर्व ५२७ में हुआ माननेका रिवाज चल पड़ा है वैसे इस विषयमें

जैनोंके पूर्ववर्ती विभिन्न मत मिलते हैं। और उनमेंसे प्रायः सबका ही ठीक ठीक विचार इस निबंधमें किया जा चुका है और तब एक निश्चित मत इस विषयमें निर्धारित किया गया है अर्थात् भगवान महावीरका निर्वाण ई० पूर्व ५४५ में हुआ था।"

दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि

सन् १९३२ में प्रकाशित ३२० पृष्ठकी पुस्तक "दिगम्बरत्व और दिगम्बर मुनि" बाबू कामताप्रसादजीकी रचित है। इतिहाससे प्रेम रखनेवाले बाबूजीने समयकी पुकारको सुनकर दिगम्बरत्व पर थोड़े ही समयमें एक बड़ीसी पुस्तक लिख डाली। धर्म भावनासे प्रेरणा लेकर सत्य प्रचारार्थ सभी धर्मोंके लिये, चाहें वे हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई क्यों न हो, रची गई। इसकी उपयोगिताकी कसौटी भी यह निर्धारित की गई। "सब ही प्रकारके लोग उसे पढ़ें और अपनी बुद्धिको तराजू पर उसे तौलें और फिर देखें दिगम्बरत्व मनुष्य समाजकी भलाईके लिये कितनी जरूरी और उपयोगी चीज है।"

इस पुस्तकके सम्बन्धमें श्री राजेन्द्रकुमार जैन न्यायतीर्थका अभिमत इस प्रकार है :—"दिगम्बरत्वके समर्थनमें प्रस्तुत पुस्तकमें प्राचीनसे प्राचीन ग्रंथोंके उल्लेखों एवं शिलालेख और विदेशी यात्रियोंके यात्रा विवरणोंमेंसे कुछ शब्दोंका संग्रह भी बड़ी ही गम्भीर खोजके साथ किया गया है, दिगम्बरत्व सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक सत्य है। अतएव वह सर्वतंत्र सिद्धान्त भी है, इसका स्पष्टीकरण भी हमारे सुयोग्य लेखकने महत्वके साथ किया है।"

आप स्वयं ही विचार करिए कि १०६ पुस्तकोंके अध्ययनके बाद लिखा गया यह ग्रन्थ कितना महत्वपूर्ण होगा? प्रकृतिने

धर्मके रूपमें मनुष्यको अच्छी पोशाक देही दी है। फिर प्रकृतिसे निकटरूप जितना जीवन व्यतीत किया जाता है, सुखशांति भी प्राप्त होती है। फिर कपड़े पहनकर अपने दुराचारको छिपाया भी तो जा सकता है। दिगम्बरत्वमें सदाचारकी अधिक मात्रा, आरोग्यका पोषण, साधु प्रकृतिकी अनुरूपता, परमोपादेय धर्म, त्याग वृत्ति, ममताकी उपेक्षा, आत्मोन्नतिकी पराकाष्ठा, मोक्ष-मार्गकी प्राप्ति, और पुद्गलके संसर्गसे मुक्ति होने जैसी अनेक बातोंका समावेश होता है।

श्री ऋषभदेवको दिगम्बरत्वका प्रथम उपदेशक माना जाता है। इन्हें योगी कल्पतरु और महायशस्वी भगवानके रूपमें माना जाता है। हिन्दू धर्मके वेद तथा उपनिषद् जो पुरातन ग्रन्थ हैं, में तो दिगम्बरत्वका वर्णन मिलता है। जाबालोपनिषद्, परमहंसो-पनिषद्, भिक्षुकोपनिषद्, दत्तात्रैयापनिषद्, और याज्ञवल्क्यो-पनिषद् आदिके उद्धरणोंसे अपनी बातकी पुष्टि की है।

मुगलशासक औरंगजेबके समयमें फ्रांससे आनेवाले डॉ० बर्नियरने नंगे हिन्दू सन्यासियोंको देखा था, सन् १६२३ में आनेवाले विदेशी यात्री पिटरडेल्ला वॉल्लाने भी अहमदाबादमें साबरमतीके किनारे अनेक नागा साधुओंके दर्शन किये थे।

जलालुद्दीनके 'मद्दवी ग्रन्थ' तथा यहूदियोंकी पुस्तक Ascensioh of Isaian, से भी दिगम्बरत्वकी झलक मिलती है। दिगम्बर मुनिके २८ गुणों विभिन्न नामों, अतीतकालमें दिगम्बर मुनियोंको स्थिति, भगवान महावीरके समकालीन दिगम्बर मुनि, आदिका विस्तारमें उल्लेख किया है। आपने नन्द साम्राज्य, मौर्य सम्राट, सिकन्दर महान, सुंग राजवंश, राजा मनेन्द्र कलिंग, नृप ऐल खारवेल, गुप्त साम्राज्य, हर्षवर्द्धन परमार राजा, राजाभोज, गुजरातके शासक, चन्देल राज्यमें दिगम्बर मुनियोंकी जो स्थिति रही है उसको भी भ्रमित जनताके सामने खोज करके

रखा है। भारतीय संस्कृत साहित्यमें जिन दिगम्बर मुनियोंकी चर्चा है उनके नाम भी गिनाए गये हैं। अंग्रेजोंके शासनकालमें जितने दिगम्बर संघके तथा उनके अन्तर्गत विहार करनेवाले सभी मुनियोंका वर्णन किया है जो भारतभरमें भ्रमण करते थे। इन मुनियोंके चातुर्मास, निवासस्थान, तथा नाम वगैरहका भी पता लगता है। और धर्मको लेकर जो मुकद्दमेबाजी होती रही हैं, उनके निर्णयोंकी प्रतिलिपियां भी हैं। आजके युगमें पूज्य बापू, श्री बर्फोर्ड, स्विटजरलैंडके निवासी डा० रोलियर, बंगाली विद्वान बरदकान्त, महाराष्ट्रीय विद्वान श्री वासुदेव गोबिन्द आप्टे, आदिके उच्च श्रेणीके विचार भी देखनेको मिलते हैं। सहजतया अनुमान लगाना कठिन है कि कितने परिश्रमसे इस ग्रन्थकी रचना हुई है।

भगवान महावीरकी अहिंसा और भारतके राज्यों पर उसका प्रभाव

मई १९२३ में प्रकाशित ६० पृष्ठीय यह पुस्तक बाबूजी द्वारा रचित है। जिसमें भगवान महावीरकी अहिंसाका विभिन्न राज्यों-पर जो प्रभाव पड़ा है उसका वर्णन किया गया है। देशके अनेक लोग यह कहते सुने जाते हैं कि जैन धर्म अथवा बौद्ध धर्मके आगमनसे देशमें शिथिलता बढ़ने लगी तथा लोगोंमें कायरताका श्री गणेश हुआ, पर यह बात पूरी तरहसे निस्सार है इसी बातको बाबूजीने इस पुस्तकमें सिद्ध किया है। इस पुस्तकके सम्बन्धमें साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथजी रेउ, प्रोफेसर जसवन्त कालेज जोधपुरने भूमिकामें लिखा है "श्रीयुत कामताप्रसाद जैनने जैन शास्त्रोंके अवतरण देकर मनोके मानसिक भावों पर ही हिंसा या अहिंसाकी उत्पत्ति सिद्ध की है। साथ ही आपने ऐतिहासिक उदाहरण उपस्थित कर देश और आत्म-

रक्षा आदिके लिये रागद्वेष वर्जित युद्ध तकको धर्म बतलाया है......यह पुस्तक प्रत्येक भारतवासीके, चाहे वह जैन हो या जैनेतर पठन और मनन करनेयोग्य है।"

भगवान महावीर और अहिंसाका तो घनिष्ठ सम्बन्ध था पर इनसे भी पूर्व देशमें अहिंसाका साम्राज्य था। गीता, यजुर्वेद, उत्तरपुराण, महाभारत, शतपथ ब्राह्मण, मनुस्मृति, बौद्ध शास्त्र सुत्तनिपात, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डोकोपनिषद, कठोपनिषद् और जैन ग्रन्थोंके आधार पर पूर्वमें अहिंसाके वातावरणको बताया है। आजीविक सम्प्रदाय, जो ज्योतिषशास्त्रके आधार पर अपनी आजीविका चलाता था,में भी पूरी तरहसे, अहिंसाका बोलबाला देखनेमें मिलता है।

महात्मा बुद्धने भी अहिंसाका प्रचार किया। मौर्य साम्राज्यमें भी अहिंसाका बोलबाला था, मौर्य साम्राज्यके बाद भी अहिंसक वीरोंमें प्रमुख कलिंग सम्राट, ऐल खारवेल, विक्रमादित्य, कुमारपाल, अमोघवर्ष आदि हैं जिन्होंने अपने शासन कालमें अहिंसा तत्वका विस्तार किया। मुगल सम्राट अकबर तक जैनधर्मसे प्रभावित हो गया था, और शासकीय विशेष आज्ञापत्र निकाल कर जीव हत्या बन्द करा दी थी।

डाक्टर साहबने भगवान महावीरकी अहिंसाको लोकोपकारी बताते हुवे कहा है—"यह बिल्कुल स्पष्ट है कि भ० महावीरकी अहिंसा लोक हितकारी है, जीव मात्र उसके आलोकमें आकर सुख शांतिको पा सकता है। स्थायी सुख और अमर जीवन इस अहिंसा पालनका सुमधुर फल है। आओ उसकी अभ्यर्थना करनेका संकल्प कर लें और याद रखें कि लोकहितका अहिंसासे बढ़कर और कोई साधन नहीं है।"

पञ्च रत्न

सन् १९३३ में प्रकाशित यह ६२ पृष्ठीय पुस्तक "पञ्च रत्न" सम्राट श्रेणिक बिंबसार, सम्राट महानन्द, कुरुम्बाधीश्वर, नृप बिज्जलदेव, और सेनापति बेचप्प कहानीके रूपमें है। इसमें सरल भाषामें कथाएं लिखी गई हैं, ताकि छोटे छोटे बच्चे भी इन कहानियोंसे प्रेरणा प्राप्त कर सकें। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमारके शब्दोंमें भोजनके लिए जो नमकका महत्व है वही जीवनमें कहानियोंका महत्व है। इसके साथ ही बाबूजीके उद्योगको सत् तथा खासा सफल भी बताया है। इसमें लिखी गई कहानियाँ कोई कल्पनापर ही निर्भर नहीं हैं बरन् ऐतिहासिक तत्वोंको आधार मानकर अपनी भाषामें सबके लिए उपयोगी बनाया है। इन कहानियोंके सम्बन्धमें स्वयं बाबूजीने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं "प्रस्तुत कहानियाँ ऐतिहासिक घटनाओंका पल्लवित रूप है। उनसे जैन संघकी उदार समाज व्यवस्था और जैनोंके राष्ट्रीय हित कार्यका भी परिचय होता है। पाठक, उन्हें पढ़ें और उनसे अपने मूल्यमय जीवनको अनुप्राणित करें।"

सच्चा साम्यवाद और सच्चे साम्यवादी भगवान महावीर

यह १० पृष्ठकी छोटीसी पुस्तक है फिर भी थोड़ेमें बहुत कहनेवाली बात चरितार्थ होती है। आज व्यवहारमें जो साम्यवाद है उसे सफल हुआ कैसे कहा जावे ? यह समझमें नहीं आता। भौतिकवादके स्थान पर आध्यात्मवादकी दृष्टिसे साम्यवाद आवश्यक दिखाई पड़ती है और सम्भव भी जान पड़ती है। व्यक्ति बाहरसे भले असमान हो पर अन्दरसे उनमें समानता

है। अन्ध विश्वास और गन्दी आलोचनाको त्यागकर वास्तविक भारतीय साम्यवादकी ओर बढ़ना आवश्यक भी है और कर्तव्य भी। श्री अनन्तप्रसाद जैनने इसकी वास्तविकताको समझकर है "उस आध्यात्मिक साम्यवादको जिसे ढाई हजार वर्ष भगवान महावीरने प्रकाशित किया, विद्वान मनस्वी लेखकने बड़ी पांडित्यपूर्ण रीति पर सीधेसादे और सच्चे रूपमें हमारे सामने अपने इस लेखमें बड़ी उत्तमताके साथ उपस्थित किया है जिसे मनन करना और आचरणमें लाना हमारा धर्म हैं।"

बाबूजीने भगवान महावीरको सच्चा साम्यवादी बताया है। पशु हों या मनुष्य सभी तो सामाजिक प्राणीके रूपमें हमारे सामने आते हैं फिर स्वयं जीवित रहने और दूसरोंको जीनेमें जात प्राकृत धर्मने अन्तर्गत ही आती है। आपने स्पष्ट ही बताया है कि आज जिस साम्यवादकी चर्चा सुनते हैं उसका बाह्यरूप तो बड़ा सुन्दर है पर व्यवहारमें जब उसे प्रयोगमें लाते हैं तभी उसका रूप बिगड़ जाता है। पर कर्मसिद्धान्तका जो अटल नियम पुराने समयसे चला आ रहा है उसे किस तरह समाप्त किया जा सकता है।

कार्लमार्क्सने धर्मको अफीमका नशा बताया था उसका वास्तविक अर्थ, तथा व्याख्या भी की गई है। मार्क्सने अपने साम्यवादको केवल मानव तक सीमित रखा व जैन धर्म उससे भी आगे बढ़कर प्राणी मात्रमें समताकी भावनाके दर्शन करता है। कार्लमार्क्सवाद भौतिकवाद तथा हिंसा और खूनमें विश्वास करता है। बाबूजीने स्पष्ट ही कह दिया है "यह ध्रुव सत्य है कि अहिंसा और सत्यका आश्रय लिये बिना वे लोकमें समता, सुख और शांति स्थापित नहीं कर सकते।"

तीर्थंकरोंकी विभिन्न शिक्षाएं, उनके जीवनके आदर्श तथा वास्तविक साम्यवादको सामने रखा है। अपने देशके आदर्श

साम्यवादको छोड़कर विदेशियोंके साम्यवादको अपनानेकी कोई आवश्यकता भी नहीं है। कार्लमार्क्सके साम्यवाद पर भारतीय साम्यवादका रंग चढ़ावें तो कुछ कारगत होसकता है। लेखकने राजकीय सहयोगकी भी आवश्यकता अनुभव की है सारे समाजको बहकनेसे बचानेके लिये यह करना होगा, "सबसे पहला कदम राज्यको यह उठाना उचित है कि हमारी शिक्षा पद्धति इस आध्यात्मिक साम्यवादके ऊपर निर्धारित की जावे। देशमें ठौर ठौर पर अहिंसा और सत्यकी व्यवहारिक शिक्षा देनेकी व्यवस्था हो, तभी यह देश सुखी और लोक सुखी हो सकेगा।"

वीर पाठावलि

सन् १९३५ में यह १२७ पृष्ठीय पुस्तक लिखी गई। इसमें १७ लेख व ऐतिहासिक जीवन गाथाएं हैं। पूर्वजोंकी गाथाओंको बिना सामने रखे वास्तविक रूपसे मूल्यांकन नहीं हो सकता। इस लिए इस पुस्तकमें धर्म भावना और विभिन्न महापुरुषोंके यशस्वी जीवनका दिग्दर्शन इतिहासके आलोकसे कराया है। भगवान ऋषभदेव और सम्राट भरत, श्रीराम और लक्ष्मण, श्री कृष्ण और अरिष्टनेमि, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर, मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त, सम्राट ऐल खारवेल, वीर संघकी विदूषियां, भगवान कुन्दकुन्दाचार्य, आचार्य-प्रवर उमास्वाति, स्वामी संमतभद्राचार्य और वीर मार्तण्ड चामुण्यराय, तथा श्री महाकलंकदेवका जीवन परिचय तथा प्रभावोत्पादक घटनाओंको समझाकर प्रेरणा उत्पन्न की है। धर्म और वीरता अहिंसा और सैनिक धर्म और पंथ तथा धैर्य नामक चार लेख हैं जिनमेंसे दो लेख 'धर्म और पंथ' तथा 'धैर्य' अन्य स्थानसे उद्धृत किये हैं।

आत्मविश्वासकी आवश्यकता, दुर्भावनायें बचाने पर कार्यमें

जुट जाने, धर्मकी बीभाषा, धर्मका पालन करने, वीर बनकर उद्योग करने, धर्मको रक्षा करने, हिंसा व अहिंसामें भेद, और वर्तमान कर्तव्यके बारेमें भलीभांति समझाया है ताकि कमसे कम पढ़ा लिखा व्यक्ति भी अच्छाइयोंको आत्मसात कर सके। दुर्वासनाओंको जीतते हुवे जीवनके साध्यकी ओर बढ़नेकी सलाह कितने सुन्दर शब्दोंमें दी गई है—"ज्यों ही आपको दुर्वासनाएं सताये त्यों ही सत्कार्यमें लग जाइये। ऐसा न करेंगे तो दुर्वासनाएं आपके जीवनको निकम्मा करके अन्तमें नष्ट कर डालेंगी। अनादिकालसे संसार-वारिधिके विविध विकाल विपत्ति आवर्तोंमें चक्कर खाते खाते बडी कठिनाईसे प्राप्त मनुष्य जीवनरूपी चिन्तामणिको फिर दुर्वासना सागरमें फिर फेंक देना क्या बुद्धिमता है? यही वज्र मूर्खता है और सचमुच ऐसा ही है तो आप मूर्खताके मार्गमें गमन न कीजिये।"

पतितोद्धारक जैन धर्म

सन् १९३६ में पं० जुगलकिशोरजी मुख्तारको यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि लोग जाति और कुलको विशेष महत्व दे रहे हैं। जीव तो एक विश्रामगृह या धर्मशालाके समान होता है, वह तो उच्च और निम्न सभी कुलोंमें चक्कर लगाता रहता है पर साधारण जनता इस ओर सोचती ही नहीं। इसलिये मुख्तार साहबने जैन धर्मके पतितोद्धारक स्वरूपको प्रकट करनेके लिए ग्रंथ लिखने हेतु पुरस्कारकी योजना रखी। पर आश्चर्य तो यह कि बाबूजीके अतिरिक्त और कोई रचना ही नहीं आयी। और शीघ्र ही यह पुस्तक २०४ पृष्ठोंकी प्रकाशित हुई।

इस पुस्तकमें बताया गया है कि महानसे महान पतितों और पापियोंका भी जैनधर्मके माध्यमसे उद्धार किया जा सकता

है। जातिके स्थान पर योग्यताको विशेष महत्व दिया गया है। किसी भी जातिका कोई भी व्यक्ति हो धर्मकी ओर बढ़कर अपना कल्याण कर सकता है। शुरूमें तो जैनधर्मकी उदारताका बखान किया है और बादको विभिन्न बीस कथाएं उद्धारसे संबंधित दी गई हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि किस तरहसे पतितोंका उद्धार किया जाता है। अधिकतर कथाएं जैनधर्मसे ही सम्बन्धित हैं। धर्मकी सार्वभौमिकता और धर्मके स्वरूपको स्पष्ट करते हुवे पाठकोंको बताया है कि जैनधर्म पतितोद्धारक भी है। चारित्रभ्रष्ट तथा शूद्र व्यक्तियोंके लिये जो धर्मकी व्यवस्था है उसको भी सामने रखा है। गिरे हुओंको उठानेके सम्बन्धमें पं० गोपालदासजीका विचार, अथर्ववेद, पद्मपुराण, मज्झिमनिकाय, थेरीगाथा, मिलिन्दपण्ह आदि साहित्यके अंचलसे पुष्टि की है।

यमपाल चाण्डाल, शहीद चण्ड चाण्डाल, चाण्डाली दुर्गन्धा, हरिकेश बल, सुनार और साधु मेतार्य, मुनि भगदत्त, माली सोमदत्त और अंजनचोर, कार्तिकेय, कर्ण तथा धर्मात्मा शूद्रा कन्याओंकी कहानियाँ हैं जिनसे यह स्पष्ट झलक मिलती है कि उनका जीवन परिवर्तित कैसे हुआ? पशुतासे मानवताकी ओर उनके चरण कैसे बढ़ सके? पाप पंकसे निकलकर धर्मकी गोदमें बैठनेवाले अन्य ५ व्यक्तियोंकी कथाएं भी मौजूद हैं जिनके नाम चिलाती पुत्र, ऋषि शैलक, राजर्षि मधु, श्री गुप्त, और चिलाती कुमार हैं। उपाली, वेमना, चामेक वेश्या, रैदास और कबीरका जीवन भी साधारण स्थितिसे उच्च शिखरकी ओर बढ़ते हुये देखा गया है।

जिसने धर्मकी शरण ली, अध्यात्मके रसका पान किया वह क्यासे क्या बन गया। जाति, कुल, वर्ण आदिको पूछता ही कौन है? ईश्वरकी उपासना करनेवाला अन्तमें उसे ही प्राप्त होता

है। जैसे जैसे अच्छे गुणोंको अपनानेकी प्रेरणा दी जावे तो बुरेसे बुरे मनुष्यके जीवनमें परिवर्तन देख सकते हैं। इसी बातकी सार्थकता विभिन्न कहानियों, लेखों, विचारकों और ग्रन्थोंके माध्यमसे बताई हैं। सार रूपमें हम इस तरह कह सकते हैं—

"मनुष्य मात्रका यह धर्म होना चाहिये कि वह जीव मात्रको आत्मोन्नति करनेका अवसर सहायता और सुविधा प्रदान करे—किसीसे भी विरोध न करे। विश्वप्रेमका मूल मन्त्र ही जगदोद्धारक है। निसन्देह अहिंसा ही परम धर्म है।" इस ग्रन्थको सर्वप्रिय बननेका श्रेय श्री मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने जैन साहबकी प्रशस्त लेखनीको ही दिया है। पुस्तकके मुखपृष्ठ पर अंकित पद्यकी चार पंक्तियां भी विशेष प्रभावशाली जान पड़ती हैं—

ऊंचा उदार पावन, सुख शान्ति पूर्ण धारा।
यह धर्म वृक्ष सबका, निजका नहीं तुम्हारा॥
रोको न तुम किसीको, छायामें बैठने दो।
कुल जाति कोई भी हो, संताप मेटने दो॥

संक्षिप्त जैन इतिहास प्रथम भाग

सन् १९४३ में बाबूजी द्वारा १३७ पृष्ठकी पुस्तक लिखी गई। बाबूजी सुप्रसिद्ध जैन ऐतिहासिज्ञके रूपमें हमारे सामने रहे हैं। आपने जो कुछ भी साहित्य और समाजकी सेवा की है उसमें पूरी तरहसे निस्वार्थ वृत्तिके दर्शन होते हैं। जिस तरहसे किसी व्यक्तिके सम्मानके लिए उसके प्रारम्भिक जीवनकी घटनाओंको जाननेकी उत्सुकता रहती है उसी प्रकार देश, समाज अथवा धर्मकी महत्ता और सम्मान उसके इतिहासपर निर्भर रहता है। जैन धर्मके सच्चे इतिहासकी कमीके कारण विभिन्न प्रकारके भ्रम फैले हुये थे, और किसी मात्रामें आज भी फैले हैं। इन भ्रम-पूर्ण कल्पनाओंको दूर करके जैन धर्मका सच्चा गौरव संसारमें बढ़ानेकी इच्छासे ही इतिहास लिखनेकी आवश्यकता पड़ी। इतिहासकी घटनाओंको सत्यताकी कसौटीपर कसनेके लिए विभिन्न शिलालेख, मुद्रायें, ताम्रपत्र, पुरातत्व सम्बन्धी खण्डहर, और इतिहासकारोंके अमूल्य ग्रन्थोंकी आवश्यकता पड़ती है। विद्वान लेखकने बड़े ही परिश्रमसे समस्त सामग्रीका उपयोग करके महत्वपूर्ण बनाया है। साथ ही अपने श्रमकी सार्थकता इसीमें समझी गई है कि लोग इस इतिहाससे लाभ उठावें।

जैनधर्मकी ऐतिहासिक प्राचीनता, ऐतिहासिककालके पहिले जैनधर्म, जैनी भारतके मूल निवासी, जैनियोंका आर्य होना, वेदोंमें यज्ञ विषयकी चर्चा, वेदोंमें गुप्त भाषाके व्यवहारके कारण, आर्य और अनार्यका अन्तर, भारतकी जातियां, भाषाएं, धर्म, आदि अनेक प्रश्नोंका समाधान किया गया है। इतिहासकी आवश्यकता क्यों पड़ती है? जैन इतिहासके आधार क्या हैं? जैन भूगोलमें भारतवर्षका क्या स्थान है? प्राचीन प्रदेश और नगर कौनसे हैं? ऐसे अनेक प्रश्न व्यक्तियोंके मनमें उठते हैं

उन सबके उत्तर इस पुस्तकमें मिल जाते हैं। भगवान ऋषभदेवके अतिरिक्त अन्य सभी तीर्थंकरोंका संक्षिप्त जीवन भी पढ़नेको मिलता है। उनके जन्मस्थान, पारिवारिक परिचय, समाजमें स्थान और साधनात्मक तक परिचय भी साथ ही दिया गया है।

जैनधर्मके सातों तत्त्वों जीव, अजीव, आश्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, और मोक्षका विस्तृत वर्णन किया गया है। आवागमनके छुटकारेके कौनसे साधन हैं? आवागमनमें देव, नरक, मनुष्य और तिर्यंचगति होती हैं उनका सम्बन्ध भी स्थापित किया है। भगवान ऋषभ द्वारा विरक्त नरनारियोंके लिये जो साधु संघकी व्यवस्था की थी उसमें चार संघ रखे अर्थात् मुनि संघ, आर्यिका संघ, श्रावक संघ और श्राविका संघ। इन संघोंकी आवश्यकता तथा सिद्धान्त व नियमोंका वर्णन भी किया गया है।

जैन इतिहास

इस पुस्तकके १०० पृष्ठके लगभग रिप्रिन्ट्स ही देखनेको मिल सके, इसमें इतिहासकी आवश्यकता, आधुनिक इतिहासकारोंकी दृष्टिमें जैनधर्म और जैन परंपराकी प्रमाणिकताके सम्बन्धमें सैंकडों ग्रन्थोंके स्वाध्यायका सार देखनेको मिलता है। कृषिकालको कर्मभूमिका प्रारम्भ बताते हुये समाजवादी रीतिके संस्थापक भ० वृषभदेवको कृषि विज्ञानके आविष्कर्ताके रूपमें समाजके सामने रखा है। ये आत्मज्ञान प्रणेता प्रथम योगी तथा सर्वज्ञ सर्वदर्शी परमात्मा हो रहें, इसलिये उनके उपदेश, विहार, निर्वाण, स्मारक प्रतीक आदि सभीका विस्तृत वर्णन किया है। शिवरात्रिको भगवान वृषभदेवके निर्वाणका प्रतीक माना है। जिनसेनाचार्यने तो उन्हें शिवरूपमें मानकर ही स्तुति की है :—

त्वं ब्रह्मा परम ज्योतिस्त्वं प्रभूष्णु रजोऽरजाः।
त्वमादिदेवो देवानाम् अधिदेवो महेश्वरः॥

अर्थात्—हे वृषभदेव ! आप ब्रह्मा हैं, परम ज्योति स्वरूप हैं, समर्थ हैं, पाप रहित हैं, मुख्य देव अर्थात् प्रथम तीर्थंकर हैं, देवोंके भी अधिदेव और महेश्वर हैं।

ऋषभदेवकी प्राचीनता पर शङ्का की जा सकती है। पर भारतीय गुरु परम्परानुसार गुरु अपने शिष्यको मौखिक ज्ञान सदैव देता आया है। इस वैज्ञानिक शैलीको ही बाबूजीने प्रमाणिक माना है। वैदिक आर्योंसे भी पहले ऋषभदेवका जन्म हुआ था हिन्दू पुराणों, बौद्ध ग्रन्थों और पुरातत्वके आधार पर ऋषभदेवका विस्तृत वर्णन किया गया है। यूनान, सायप्रस, अल्बानिया, सीरिया, सोवियेत, अरमेनिया आदि देशोंमें भी ऋषभदेवको सम्मान प्राप्त हुआ था। तीर्थंकरका अर्थ और इस नामकरणके कारणोंको भी स्पष्ट किया गया है। तीर्थंकरोंकी मान्यताको प्राचीन सिद्ध करते हुये विभिन्न शंकाओंका समाधान किया गया है।

इस प्रकार महाभारत काल, द्राविण काल, जैन और बौद्ध काल, उत्तर जैन काल, और संक्रामक कालकी झाँकीका दिग्दर्शन कराया गया है। वाल्मीकि रामायणके आधारपर भगवान कृष्ण व लक्ष्मणको जैन व वैष्णव धर्मके आराध्य देव मानते हुये शिक्षाएं ग्रहण करनेका भी अनुरोध किया है। राम और लक्ष्मणके बारेमें बाबूजीने लिखा भी है "गृहस्थ दशासे ही भगवान राम-लक्ष्मण और सीता एक आदर्श जैन चित्रित किये गये हैं। अपने अंतिम जीवनमें वह जैन जीवनके आदर्शके अनुरूप मुनि-व्रत धारण करके घोर तपश्चरण करते हैं—तीर्थंकरोंके समान ही वह भी ध्यानमें लीन होकर कर्मोंको नष्ट करते और तुङ्गीगिरि पर्वतकी शिखिरसे सिद्धपदको पाते हैं। प्रत्येक जैन उनको सिद्ध परमात्मा मानकर पूजता है।"
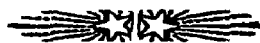
हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास

बाबूजी द्वारा लिखित "हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास" प्रथम बार फरवरी सन् १९४७ में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तकसे पूर्व विभिन्न कालोंका विभाजन किसीसे भी न बन पड़ा था। और न अपभ्रंश साहित्यमें होनेवाले क्रमिक परिवर्तनका उल्लेख अन्यत्र कहीं नहीं हुआ। इस लिये यह पुस्तक अपने ढंगकी प्रथम रचना ही कही जा सकती है। श्रीमान डॉ० वासुदेवशरणजी अग्रवाल एम० ए० डी० लिट्ने प्राक्कथनमें स्पष्ट लिखा है। "हिन्दी भाषाका जो प्राचीन साहित्य विस्तार है उसके विषयमें बहुत सी नई सामग्रीका परिचय हमें इस पुस्तकके द्वारा प्राप्त होगा। अपभ्रंश-कालसे लेकर उन्नीसवीं शताब्दि तक जैन-धर्मानुयायी विद्वानोंने हिन्दीमें जिस साहित्यकी रचना की, लेखकने कालक्रमानुसार उसका संक्षिप्त परिचय इस पुस्तकमें दिया है। यद्यपि भिन्न भिन्न कवियों और काव्योंका मूल्य आंकनेमें उनके जो विचार हैं, उनसे पाठकोंका मतभेद हो सकता है, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि दो दृष्टियोंसे यह नई सामग्री बहुत ही उपयोगी हो सकती है। एक तो हिन्दीके शब्दभण्डारकी व्युत्पत्तियोंकी छानबीन करनेके लिये और दूसरे साहित्यिक अभिप्रायों (मोटिफ) और वर्णनोंका इतिहास जाननेके लिये।"

हिन्दी साहित्य पर धीरे धीरे शोधकार्य करना प्रारम्भ किया जिसमें सफलता भी मिली। घर पर अकेले होनेके कारण यह सम्भव न था कि दीर्घकालके लिये बाबूजी बाहर जाते। अतः जयपुर, दिल्ली, आगरा, इन्दौर आदि प्रमुख स्थानोंके पुस्तकालयोंसे पुस्तकें मंगवाकर सैकड़ोंकी संख्यामें घर पर ही पढ़ीं और इतिहास

तैयार किया। सन् १९४४ के ग्रीष्मकालमें श्री भारतीय विद्याभवन बम्बई द्वारा " सांस्कृतिक-निबन्ध प्रतियोगिता " की सूचना मिली।

यद्यपि प्रतियोगिताका समय केवल चार माह ही शेष रह गया था फिर भी रात और दिन एक करके यह इतिहास तैयार कर लिया गया जिसमें २५० पृष्ठ हैं। यह पुस्तक निबन्ध परीक्षकों द्वारा केवल मान्य ही नहीं हुई वरन् रजतपदकका पुरस्कार भी दिया गया। बादको प्रकाशित हुई और अ० भा० दि० जैन परिषद् परीक्षाबोर्ड, दिल्लीके पाठ्यक्रममें निर्धारित की गई।

विक्रम संवत ७०० से लेकर १९०७ तकका संक्षिप्त जैन साहित्यका इतिहास देखनेको मिलता है। साहित्य श्रुतज्ञानका दूसरा नाम बताया है क्योंकि मनुष्योंने जो ज्ञानार्जन किया, मनन किया, तथा मंथन किया है वह एक प्रकारका साहित्य ही है। प्रारम्भसे ही हमें साहित्यिक, परिमार्जित, मातृभाषा हिन्दीके दर्शन होते हैं " साहित्य सुन्दर सुखकर साकार ज्ञान है, इसीलिए साहित्य जीवन साफल्यका साधन है। उसमें मानव अनुभूतिके चमत्कृत संस्मरण सुरक्षित हैं, और जीवन-जागृतिकी ज्योति जाज्वल्यमान है। साहित्य मानवको सर्वतोभद्र, सर्वांगपूर्ण और सुखी स्वाधीन बनानेके लिये मुख्य साधन है। वह मुक्तिका सोपान है। "

ऊपरकी थोड़ीसी पंक्तियोंमें किस अलंकारिक भाषाका प्रयोग किया गया है यह स्पष्ट ही है। 'स' कार 'ज' कारकी तो झड़ी मन्त्र मुग्ध कर देती है। विभिन्न जैन आचार्यों और विद्वानोंने जैन साहित्यकी जो सेवा की उसे ही इतिहासके रूपमें जाना जाता है। वैसे तो संस्कृत, अपभ्रंश, प्राकृत, गुजराती, कनड़ी, तामिल आदि अनेक भाषाओंमें साहित्यकी रचना हुई, पर इस पुस्तकमें हिन्दी जैन साहित्यके ऐतिहासिक वर्णनको ही प्रधानता

दी गई है। देशमें प्रकाशित होनेवाले हिन्दी साहित्यके अनेक ऐतिहासिक ग्रंथ देखनेको मिल जाते हैं पर उसमें हिन्दी जैन साहित्यको छोड़ दिया है या साधारण सा संकेत करके आगे बढ़ गये हैं। अथवा दो चार जैन कवियोंके नाम देकर इतिहासकारने अपने कर्तव्यकी इतिश्री मान ली है।

जैन साहित्यके साथ यह उपेक्षावृत्ति डॉ० साहब सहन न सके। अतः साहित्यको परिपूर्ण बनानेके लिये जैन साहित्यके समावेशकी सम्मति प्रकट की गयी। "यह देखकर हमें आश्चर्य होता है कि हमारे हिन्दी इतिहास लेखक विविध हिन्दू सम्प्रदायोंके कवियों और उनके साहित्यका उल्लेख करते हुये उनमें सम्प्रदायवादकी गन्ध नहीं पाते, किन्तु जैन साहित्यमें उन्हें साम्प्रदायिकता नजर आती है। वे यह भूल जाते हैं कि हिन्दी साहित्यकी परिपूर्णता जैनियोंके हिन्दी साहित्यका समावेश किये बिना नहीं हो सकती।"

साहित्य जिस उद्देश्यको लेकर चलता है वह आत्मोद्धार ही प्रमुख रूपसे है। साहित्यके अध्ययनसे बुद्धिकी कुशलता बढ़ जावे यह कोई प्रमुख लक्ष्य नहीं है। हां, इसे गौणरूप प्रदान किया जा सकता है, क्योंकि जबतक अपनी आत्माका ज्ञान करानेवाला साहित्य न हुआ तबतक वह कलमकी कसरत मात्र ही रह सकती है। मुक्तिका संदेश देनेवाला साहित्य जैन साहित्य है। यहांसे भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। बाबूजीने स्पष्ट ही कहा है कि, जैन साहित्यके अध्ययनसे व्यक्तिको अपने भाग्यका निर्माण स्वयं करनेका अवसर, स्वावलम्बनकी शिक्षा, स्वाधीन होकर जीने और दूसरोंको जीने देनेकी हृदयको विशाल और उदार बनानेमें सहायक साम्प्रदायिकताकी संकीर्ण गलीसे निकालनेका प्रयास, अहिंसाभावकी जागृति, प्रेम और सेवा जैसी

अनेक उच्च कोटिकी विचारधाराओं और शिक्षाओंकी प्राप्ति होती है।

हिन्दीके प्रथम महाकवि स्वयंभू जैन, जिन्होंने 'हरिवंश पुराण' तथा 'रामायण' की पुरातन हिन्दीमें रचनाका विस्तृत वर्णन किया है। जैनियोंके हिन्दी साहित्य पर जो यह आरोप लगाया जाता है कि इसमें शृङ्गाररसका वर्णन नहीं किया गया है। अरे भाई! मेरे शृङ्गाररसका पान तो लोग बिना बताये करने लगते हैं। जैन साहित्य शान्त रससे लबालब भरा है। भरा भी होना चाहिए क्योंकि मानव शान्तिका पिपासु होता है। सारे जीवनमें शान्तिकी कामना ही किया करता है। साहित्य तो व्यक्तियोंके विचारोंको परिवर्तन करनेवाला होता है। जब जैसे साहित्यका निर्माण हुआ तभी तो उस समय व्यक्तियोंका दिशाओंमें परिवर्तन हुआ। मुगल साम्राज्यमें इश्ककी कविताओंने राजपरिवारोंका दिवाला निकाल दिया। उस समय अनेक हिन्दी कवि भी शृङ्गारके क्षेत्रमें कूदकर वाहवाही लूटने लगे। कवि भी समाजके साथ चले, कितना अच्छा होता यदि वे समाजको अपने साथ लेकर चले होते।

श्री देवसेन द्वारा रचित 'दर्शनसार' 'तत्वसार' और 'सावय-धम्म दोहा', मुनि रामसिंहजी द्वारा रचित 'पाहुड दोहा', महाकवि धवलका 'हरिवंशपुराण', ग्यारहवीं शताब्दिके साहित्यकार पुष्पदन्त द्वारा रचित 'महापुराण' 'यशोधर चरित्र' और नागकुमार चरित्र, कवि धनपाल, मुनि श्रीचन्द्र, श्री हेमचन्द्र, कवि लक्खन कृत अणुवयरयणपईव, मुनि यशःकीर्ति प्रणीत कृत जगत्सुन्दरी प्रयोग माला, विनयचन्द्र कृत 'उवएसमाला-कहाणय-छप्पय, कविवर विबुध श्रीधरकृत 'वड्ढमाणचरिउ' भविष्यदत्त कथा, चन्द्रप्रभ-चरित, शांति जिन चरित और श्रुतावतार, श्वेताम्बर जैनाचार्य मेरुतुङ्ग विरचित सिद्धचक्र, श्रीपाल कथा, कवि महाचन्द्र रचित

शान्तिनाथ चरित्र, राजमलका पिंगल शास्त्र, ज्ञानसागर द्वारा रचित चौबीस तीर्थंकरोंका गीत, आदि कवियों, लेखकों और उनकी साहित्यिक गति विधियोंका विस्तृत वर्णन बाबूजीने इस छोटीसी पुस्तकमें किया है।

इतना ही नहीं कवि या साहित्यकारका काल, रचनाएं, भाषा तथा उनकी कविताओंके उदाहरण भी दिये हैं। रचनाओंके प्राप्त होनेका स्थान, उनके रखनेके स्थानों तकका वर्णन किया गया है। हेमविजय नामके एक अच्छे कवि व विद्वान हुये हैं, कई ग्रन्थोंकी रचना इनके द्वारा हुई है। नेमिनाथ तीर्थंकरकी स्तुति करते हुवे हेमविजयजी कहते हैं—

घनघोर घटा उनई जुनई, इततै उततैं चमकी बिजली।
पियुरे पियुरे पपिहा बिललाती जु, मोर किंगार करंति मिली।
बिच बिंदु परें दृग आंसु झरें, दुनि धार अपार इसी निकली।
मुनि हेमके साहिब देखनकूं, उग्रसेन लली सु अकेली चली॥

इस प्रकारसे जिन कवियोंका उल्लेख किया है उनने उदाहरण भी मिल जाते हैं। कविता ही नहीं गद्य लेखकोंने जो प्रगति की है उसके अनेक प्रसंग भी १७ वीं शताब्दीसे अब तक देखनेको मिलते हैं। कविवर बनारसीदास, मुनि वैराग्यसागर, जगदीश, दीपचन्द, ज्ञानानंद, धर्मदास, टोडरमल और जयचन्द्र आदि गद्य लेखकोंकी पंक्तियों और उनकी भाषाओंके नमूने मौजूद हैं।

इस पुस्तकमें केवल संक्षिप्त रूपसे यही कहा जा सकता है कि अत्यधिक शोध, अध्ययन व परिश्रमके बाद यह पुस्तक लिखी गई है। प्रत्येक पंक्ति बाबूजीकी विद्वत्ताका जोर जोरसे बखान करती है। भारतीय ज्ञानपीठ काशीके सम्पादकने पुस्तकके प्रारंभमें निवेदन करते हुवे जो लिखा है उससे आप स्वयं ही पुस्तकका

मूल्यांकन कर सकेंगे। उन्होंने लिखा है, "हिन्दी जैन साहित्यका संक्षिप्त इतिहास, हिन्दी काव्य परंपराके सम्बन्धमें हमारी जानकारीको कई गुना बढ़ा देनेवाली है ।......इस पुस्तकमें आप पायेंगे कि कैसे अपभ्रंशके माध्यमके द्वारा जैन कवियोंने आजकी इस हिन्दीको अंकुरित किया और उस अंकुरको सींच-सींचकर कैसे उन्होंने वात वृक्ष बना दिया ।"

श्रावस्ती और उसके नरेश सुहल देवराय

८६ पृष्ठीय यह पुस्तक सन् १९५० में प्रकाशित हुई। इसमें बाबूजीने श्रावस्तीकी झांकी, उसके अवशेष, श्रमण संस्कृति, तथा राजवंशोंका वर्णन किया गया है। श्रावस्ती प्राचीन भारतके उन नगरोंमेंसे एक है जहाँ हिन्दू बौद्ध और जैन संस्कृतिका विकास हुआ। इसके आसपास जनरल कनिंघम, वेनेट, होप, फोगल, दयारामसहानी, मार्शल आदिने जो खुदाई करवाई, उससे प्राप्त होनेवाले विहार, स्तूप, मन्दिर, प्रतिमाएं, मूर्तियाँ, ईंटे, मुहरें, ताम्रपत्र, सिक्के, लेख आदि प्राप्त हुये हैं जिनसे प्राप्त होनेवाली जानकारीका लेखक महोदयने लाभ उठाया।

श्रावस्ती नामकरण होनेका कारण विभिन्न राजमार्गों तथा प्रसेनजित जैसे शासकका वर्णन भी पुस्तकमें मिलता है। श्री कृष्णदत्त वाजपेयी एम. ए. अध्यक्ष पुरातत्व संग्रहालय मथुराने इस पुस्तकके बारेमें अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं— "इस महत्त्वपूर्ण नगरीके सम्बन्धमें श्री कामताप्रसादजी जैनने हिन्दीमें प्रस्तुत पुस्तक लिखकर एक कमीको दूर किया है।

श्रावस्तीका संक्षिप्त क्रमबद्ध ऐतिहासिक वृतान्त देनेके साथ आपने नगरीकी स्थापना नामकरण आदि विषयोंका भी विवेचन

किया है। इस नगरीके स्वनामधन्य राजा सुहिलदेवरायका शौर्य-पूर्ण जीवनवृत्त भी दिया गया है। दुर्भाग्यसे इस राजाके सम्बंधमें भारतीय साहित्यमें यथेष्ट विवरण उपलब्ध नहीं होता।

जैन वीर सुहिलदेव विदेशी शासन चक्रको चलता न देख सके। सैयद सालारने जब देश पर आक्रमण किया तो सुहिल देवको सहन न हुआ। वह अपने सभी भाइयोंको लेकर युद्ध क्षेत्रमें जम गया। देश और धर्मकी रक्षाके लिये किया गया प्रण अत्याचारियोंको निकालनेका पूर्ण हुआ, पर दुःखकी बात तो यह है कि ऐसे वीरोंका वर्णन इतिहासकारोंने छोड़ दिया। पर खोज खोजकर ऐसी घटनाओंका वर्णन बाबूजीने किया है ताकि वास्तविक स्थितिसे लोग परिचित हो सकें। बादमें राजा सुहिलदेवने शान्तिपूर्वक धर्म आराधना करते हुये राजकाज संभाला

उन दिनों साहित्यकी उन्नति, व्यापारिक विकास, आपत्ति-विपत्ति, विभिन्न उत्पादित वस्तुओं, धार्मिक स्थिति, धनका सार्वजनिक संस्थाओंके लिये प्रयोग, तथा दुर्ग निर्माण जैसे कार्योंका वर्णन भी मिलता है। सहेठ और महेठसे जो पुरातत्व सामग्री उपलब्ध हुई है उसकी सूची भी दी गई है। लेखक महोदय पुस्तक लिखनेका श्रम तभी सार्थक हुआ समझना चाहते हैं, जब लोग सुहिलदेवसे प्रेरणा लें। आह्वान करते हुये कहा है—"श्रावस्ती महान थी और उनके नरेश श्री सुहेलदेव भी महान वीर थे। उन्होंने हिन्दू भारतको पतन होनेसे बचा लिया, वह हमेशा ही इतिहासमें देशभक्त समाजोद्धारकके रूपमें अमर रहेंगे।.........किन्तु सच्ची कृतज्ञता ज्ञापन तो उनके गुणोंको अपने जीवनमें उतार लेनेमें ही है। अतः आइए, संकल्प कीजिए कि आप वीरनर सुहिलदेव सदृश साहसी, वीर और धर्मदेश एवं जातिके संरक्षक और उद्धारक बनेंगे।"

भगवान महावीर

भगवान महावीर नामक पुस्तक ३६६ पृष्ठकी लिखी गई उत्कृष्ठ पुस्तक है जो प्रथम बार सन् १९५१ में प्रकाशित हुई थी। इससे पूर्व भगवान महावीरका सम्पूर्ण विस्तृत जीवनचरित्रका अभाव था, छुटपुट लेख तथा छोटा छोटा पुस्तकें मिलती अवश्य थी पर प्रमाणिक ग्रन्थकी कमी खटकनेवाली थी। डॉ० कामताप्रसाद जैनने आगे बढ़कर इस कार्यको अपने हाथमें लिया और आशासे अधिक सफलता प्राप्त हुइ। जन्मसे लेकर अन्त तकका पूरा जीवन परिचय तो इसमें मिल ही जाता है फिर भी भगवान महावीरके जीवनको प्रमुख शिक्षाओंका विवेचन भी देखनेको मिलता है। मानव और पशुमें प्रमुख अन्तर जो हमें दिखाई पड़ता है वह बुद्धि और विवेकका ही है। पशुका मानसिक स्तर निम्न श्रेणीका होता है वह अपनी ही सदैव सोचा करता है पर मनुष्य सोचने और विचारनेकी शक्तिसे विभूषित होता है फिर क्यों न अपनी बुद्धिका सदुपयोग करे?

महावीरने अपने जीवनमें प्रतिपलका ठीक ढंगसे उपयोग किया। इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना, उदारता, समयानुकूल परिवर्तनके लिये तैयार रहना, नारी हितको लोक-व्यापी बनाना, दृढ़ता और उद्देश्य सिद्धिके लिये एकाग्रता, क्रियावाद और अहिंसा जैसे अनेक गुण भगवानमें थे, इन गुणोंसे सीखनेकी प्रेरणा लेने पर बाबूजीने विशेष जोर दिया है। निस्संदेह भगवान महावीर लोककी एक महान विभूति थे। उन्होंने लोकके सम्मुख उसकी पूर्णताका आदर्श रक्खा। पूर्ण सुख मानवके भीतर है—उसके बाहर नहीं। उसका विकास इन्द्रिय निग्रहसे होता है। टके खर्च करके उसे कोई नहीं पा सकता न वह किसीकी खुशामदसे मिलता है। और न किसी बिरादरी या संघमें सम्मि-

लित हो जानेसे वह मिलता है। वस्तुतः स्वावलम्बी बनकर महावीरके समान जब साधना की जाती है तब सफलताके दर्शन होते हैं। तब मानव हृदय कषाय–कलुषतासे विमुक्त सुन्दर शुभ्र शुक्ल पक्षके सदृश मोहक बन जाता है, वह सारी परता और स्वत्ता भुला देता है।

तीर्थंकर किसे कहते हैं ?, तत्कालीन परिस्थितियां, युवावस्था और गृहस्थ जीवन, वैराग्यकी भावना, योग साधनाके लिये पर्यटन, धर्म प्रचार और भगवानके मोक्षलाभ जैसे अनेक उपयोगी स्थलोंका सांगोपांग वर्णन किया है। उनके निर्मल चरित्रकी झांकी तो प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित है ही, इसके अतिरिक्त जैन और बौद्ध धर्मके अन्तरको स्पष्ट किया है। बहुतसे लोग जैन धर्मको ही बौद्ध धर्म समझते रहते या उसकी शाखा जाननेका जो भ्रम करते हैं उसका निवारण भी किया गया है। पर दोनों धर्मोंके सिद्धांतोंमें समता होते हुये भी क्रियात्मक जीवनमें अंतर स्पष्ट हो जाता है। उन्होंने लिखा है "आज चीनी और जापानी बौद्ध होते हुये भी आमिषभोजी हैं, परन्तु संसारमें कोई भी जैनी आमिषभोजी नहीं मिलेगा—जैन पूर्ण शाकाहारी हैं। इसीसे जैन और बौद्ध मतोंका मतभेद स्पष्ट हो जाता है। यथार्थतः जैन और बौद्ध दो पृथक और स्वतंत्र मत थे। बौद्ध धर्मकी स्थापना शाक्यपुत्र गौतमने की, परन्तु जैन धर्म तो उससे बहुत पहलेसे प्रचलित था। अतः दोनों मत एक नहीं हो सकते न वह एक थे और न अब हैं।"

अनेक लोग यह समझते हैं कि जैनधर्मके प्रवर्तक भगवान महावीर ही थे, इससे पूर्व जैनधर्मका प्रचार व प्रसार न हुआ था, इस शंकाका हल भी लेखकने बड़े अच्छे ढंगसे किया है। भ० महावीरने तो धर्मका प्रचार व उद्धार पुनः किया था, सर्वप्रथम प्रचारका श्रेय तो ऋषभदेवको ही प्राप्त है, वही जैनधर्मके आदि

प्रचारक थे। इस तरहकी अनेक शंकाओंका समाधान इस पुस्तकमें मिलता है। सैकड़ों पुस्तकों व धार्मिक ग्रन्थोंके गहन अध्ययनके बाद इस पुस्तककी रचना हुई है।

जैन तीर्थ और उनकी यात्रा

डॉ० कामताप्रसाद जैन द्वारा लिखित "जैन तीर्थ और उनकी यात्रा" नामक पुस्तक पौने दो सौ पृष्ठोंकी है। वैसे तो यह पुस्तक भारतवर्षमें दिगम्बर जैन परिषद परीक्षा बोर्डके लिये ही लिखी गई थी पर केवल उत्कृष्ट पुस्तक छात्र छात्राओंके लिये ही उपयोगी नहीं वरन सर्व साधारण जनता लाभान्वित हो सकती है। जैनधर्मके सभी तीर्थोंका ऐतिहासिक उल्लेख किया गया है।

पुस्तकका प्रारम्भ 'तीर्थ' शब्दकी व्याख्यासे किया गया है, तीर्थका संकुचित और विस्तृत अर्थ भी समझाया गया है। "'तृ' धातुसे 'थ' प्रत्यय सम्बद्ध होकर 'तीर्थ' शब्द बना है। इसका शब्दार्थ है—'जिसके द्वारा तरा जाय'। इस शब्दार्थको ग्रहण करनेसे 'तीर्थ' शब्दके अनेक अर्थ हो जाते हैं। जैसे शास्त्र, उपाध्याय, उपाय, पुण्यकर्म, पवित्र स्थान इत्यादि परंतु लोकमें इस शब्दका रूढार्थ 'पवित्र स्थान' प्रचलित है।"

बीच बीचमें अपनी बातकी पुष्टि करने लिये पुराण, श्रावकाचार, श्री गोमट्टसार, तथा चारित्रसारके उदाहरणोंका भी सहारा लिया गया है। जैनधर्मका उद्देश्य, सच्चे सुखकी प्राप्तिके साधन, महान बननेकी इच्छा, तीर्थक्षेत्रोंका महत्व, आत्मोन्नतिके लिये तीर्थ यात्राकी आवश्यकता, तीर्थ वन्दना, तीर्थयात्राके नियम, तीर्थयात्रासे निष्फलताके कारण, सामाजिक उन्नतिमें तीर्थोंका योगदान, स्वदेशके गौरवमें वृद्धि, भारतीय इतिहासकी पर्याप्त

सामग्रीकी तीर्थों द्वारा उपलब्धि और तीर्थोंकी पवित्रताके कारणोंका स्पष्टीकरण इस पुस्तकमें देखनेको मिलता है।

देशके सम्पूर्ण तीर्थोंकी जानकारी इस पुस्तकमें करा देना हर किसी लेखकके वशकी बात भी न थी। कौनसा तीर्थ, किस प्रान्तमें है, जिला, तहसील, डाकघर आदिका वर्णन, सड़क, या रेलवे स्टेशनसे दूरी तकका उल्लेख किया है। पूरी सूची दी गई है। संक्षेपमें यही बात कही जा सकती है कि अशिक्षित और अज्ञानी व्यक्ति तक इस पुस्तकके मार्गदर्शनसे भ्रमण करनेमें सफल हो सकते हैं। कोई तीर्थ क्यों प्रसिद्ध है, यहां पर किन तीर्थकरोंका सम्बन्ध रहा है, कौनसे मन्दिर अथवा दर्शनीय स्थल हैं, उन मन्दिरोंमें किन देवताओंकी प्रतिमाएं हैं? और कहां ठहरे, किस तरह जावें, सभी छोटी छोटी बातें बताई गई हैं। एक बात और भी विशेष है कि सभी तीर्थोंका क्रमशः विवरण भी दिया गया है ताकि एक तीर्थ यात्राके बाद पासवाले दूसरे तीर्थमें जाया जा सके। कमसे कम समय, श्रम, और पैसेमें अधिक तम लाभ उठानेकी ओर ध्यान दिया गया है। जो क्रम तीर्थयात्राके लिये अपनाया गया है, वह एक सुन्दर योजना हम आपके सामने उदाहरणके लिए लिये प्रस्तुत करते हैं जिससे आप यह समझ जावेंगे कि यात्राको कितना सुगम बनानेका प्रयास किया गया है। आप इलाहाबादसे तीर्थयात्राके लिये कौशाम्बी (कौसम) गये तो आप वहां क्या देखेंगे?

प्राचीन कौशाम्बी नगर पफोसाजीसे ४ मील। है यहां पर पद्मप्रभु भगवानके गर्भ-जन्म-तप और ज्ञान कल्याणक हुये थे। यहांका उदायन राजा प्रसिद्ध था। जिसके समयमें यहां जैन धर्म उन्नतशील था। कोसमकी खुदाईमें प्राचीन जैन मूर्तियां मिली हैं। गढवाहा ग्राममें मन्दिरजी और प्रतिमाजी बहुत मनोज्ञ हैं। यहांसे वापस इलाहाबाद पहुंचकर लखनऊ जावे।

लखनऊ

लखनऊका प्राचीन नाम लक्ष्मणपुर है। स्टेशनके पास श्री मुन्नालालजी बाबा कागजीकी धर्मशाला है। यहां कुल ६ मन्दिर हैं, जिनके दर्शन करना चाहिए। यहां कई स्थान देखने योग्य हैं। कैसरबागमें प्रान्तीय म्यूजियममें कई सौ दिगम्बर जैन मूर्तियोंका संग्रह दर्शन है। जैन मूर्तियोंका ऐसा संग्रह शायद ही अन्यत्र कहीं हो। लखनऊसे फैजाबाद जावें और जैन धर्मशालामें ठहरें। यहांसे ४ मील इक्के या तांगेमें अयोध्या जावें।

इस प्रकार उपरोक्त वाक्यमें अयोध्या जानेकी बात सुझाई गई है इसी परिच्छेदसे मिला हुआ आगे अयोध्या तीर्थकी महत्ताको बताया गया है इस तरह तीर्थ प्रेमियोंको इस पुस्तकके अध्ययनसे कितनी सुविधा हो जाती है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजपूताना, मालवा, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, बम्बई, मद्रास, आदि प्रान्तोंमें समस्त तीर्थोंका वर्णन है।

आजका व्यक्ति धन, सम्पत्तिके मायाजालमें पूरी तरहसे ग्रसित दिखाई पड़ता है। छायाको जितना ही प्रयास किया जावे तो वह पकड़नेमें नहीं आती हां यदि उस ओर ध्यान न दिया जावे, उसे पकड़नेका प्रयास न करें तो वह अपने आप पीछे पीछे दौड़ती है ठीक यही व्यक्ति धन सम्पत्तिकी है। यदि आप मायासे अपना मन हटालें तो यह भौतिक सम्पदाएं आपके चरणों पर लौटती फिरेंगी, अध्यात्म तो नकद धर्म है, त्यागका फल तुरन्त मिलता है फिर जिसे आत्मानन्द, या परमानन्द मिल जाता है उसके लिये यह भौतिक सम्पत्तियाँ फीकी लगने लगती हैं।

लोगोंकी रुचि तीर्थोंकी ओर अन्ध विश्वास या अन्ध भक्तिके रूपमें जाती है इसका बड़ा महत्व है धर्मका एक आवश्यक

अंग बाबूजीने बताया है "तीर्थ वह विशेष स्थान है जहां पर किसी साधकने साधना करके आत्मसिद्धिको प्राप्त किया है। वह स्वयं तारणतरण हुआ है और उस क्षेत्रको भी अपनी भव-तारण शक्तिसे संस्कारित किया है। धर्म मार्गके महान प्रयोग उस क्षेत्रमें किये जाते हैं—मुमुक्षी जीव तिलतुष मात्र परिग्रह त्याग करके मोक्ष पुरुषार्थके साधक बनते हैं, वे वहां पर आसन मांड्कर तपश्चरण, ज्ञान और ध्यानका अभ्यास करते हैं अन्तमें कर्म-शत्रुओंका और राग-द्वेषादिका नाश करके परमार्थको प्राप्त करते हैं।"

अतः ऐसे सुसंस्कारित्व पवित्र देव भूमिमें जब हम सब सच्ची भावना, पवित्र आंकाक्षा और निर्मल हृदय लेकर जावें तो अवश्य सद्मार्ग पर चलनेकी प्रेरणा लेकर आ सकते हैं। शरीरको मलमल कर साबुनसे धोने, सुगन्धित तेल-इत्र लगाने, सुन्दर चटकीले-मटकीले वस्त्र पहननेसे शारीरिक सौन्दर्यमें भले ही वृद्धि हो जावे पर ध्यान रहे कि जब तक मानसिक और हार्दिक सौन्दर्यमें वृद्धि नहीं होती तब तक कुछ भी बननेवाला नहीं है।

तीर्थोंमें जाकर अन्तःकरण पवित्रतासे ओत प्रोत हो जाता है, भक्ति और श्रद्धाकी तरंगे हिलोरे लेने लगती हैं, प्रेमका ज्वार उठने लगता है और स्वयं ही अपने मार्गको निश्चित कर अगले तीर्थोंकी यात्रा जारी रखता हुआ घर लौटता है। तीर्थका माहात्म्य सारांशमें बाबूजीने इस प्रकार बताया है—

"यात्री अपना सारा समय धर्म पुरुषार्थकी साधनामें ही लगाता है। वह तीर्थ-स्थानपर रहते हुये अपने मनमें बुरी भावना उठने ही नहीं देता, जिससे वह कोई निन्दनीय कार्य कर सके। उस पवित्र स्थानपर यात्रीगण ऐसी प्रतिज्ञाएं बड़े हर्षसे लेते हैं जिनको अन्यत्र वे शायद ही स्वीकार करते।"

बहुत ही मूढ़ लोग आलस्यवश तीर्थोंको गन्दा करते देखे जाये हैं, मन्दिरोंके पास या तीर्थ-स्थानके निकट ही शौच आदि कर अपवित्रता फैलाते हैं। यह बात भी शायद बाबूजीकी स्मृतिसे ओझल न हुई और लोगोंको पवित्रताका जीवन व्यतीत करनेका सुझाव दिया है।

तीर्थ करनेसे लाभोंकी प्राप्तिका वर्णन भी किया है। तीर्थयात्रासे धर्ममहिमाकी मुहर अपने हृदयपर अंकित करना, नई वस्तुएं देखना, नये अनुभव प्राप्त करना, चतुरता, क्षमतामें वृद्धि, विशाल दृष्टि-कोण बनना, आलस्य और प्रमादके स्थान पर साहसका संचार होना, वर्तमान जैन समाजको परोपकारी उपयोगी संस्थाओंका परिचय, आत्म गौरव बढ़ना, साधु पुरुषोंके दर्शन, सामाजिक रीति रिवाजों और भाषाओंका ज्ञान, भावनामें शुद्धता, घरके मायाजालसे छुटकारा, पिछले इतिहासकी जानकारी शिलालेखों द्वारा, जैसे अनेक क्षणिक व स्थायी लाभ हैं। जिससे जीवनमें युगान्तकारी परिवर्तन सम्भव है। यात्रामें ध्यान रखनेवाली बातोंका भी संक्षिप्तमें संकेत किया है।

यात्रा करते समय मौसमका ध्यान रखकर ठण्डे और गरम कपड़े साथ ले जाना चाहिये, परन्तु वह जरूरतसे ज्यादा नहीं रखना चाहिये। रास्तेमें खाकी टि्वलकी कमीजें अच्छी रहती हैं, खानेपीनेका शुद्ध सामान घरसे लेकर चलना चाहिये। उपरांत निकटके या किसी अच्छे स्थान पर वहांके प्रतिष्ठित जैनी भाईके द्वारा खरीद लेना चाहिये। रसोई वगैरहके लिये बर्तन परिमित ही रखना चाहिये। थोड़ा सामान रहनेसे यात्रामें सुविधा रहती है।

अब आप स्वयं समझ गये होंगे कि यह पुस्तक धर्मप्रेमी तथा देशाटन करनेवालोंके लिये कितनी उपयोगी है। इसी पुस्तकमें एक अन्य परिशिष्ट भी पं० परमानंदजी शास्त्री द्वारा

लिखित जोड़ दिया गया है, इस परिशिष्टमें कुछ क्षेत्र स्थानोंका ऐतिहासिक परिचय दिया है। आगरा, अजमेर, गिरिनार, अतिशयक्षेत्र खजुराहा, देवगढ़, जयपुर, राजगिर, सम्मेद शिखर, ऋषभदेव, तारापुर, ग्वालियर और चन्द्रवाड प्रमुख प्रसिद्ध क्षेत्र हैं।

कम्पिला-कीर्ति

५६ पृष्ठीय "कम्पिला-कीर्ति नामक पुस्तक सन् १९५२ में प्रकाशित हुई। फर्रुखाबाद जिले (उत्तर प्रदेश) में कम्पिला नामक एक ग्राम है। इसे पंचाल देशकी राजधानी बताया जाता है। पुरातनकालसे यह जैन और हिन्दुओंका ऐतिहासिक और तीर्थस्थल रहा है। भगवान विमलनाथका जन्म भी यहीं हुआ था। पुस्तकके नामसे ही यह विदित होता है कि कम्पिल तीर्थकी गौरव गाथासे इसके पन्ने भरे पड़े हैं। सुलझी, सरिस, परिमार्जित हिन्दीकी लड़ियां ऐसी लगती हैं मानों हृदयको कागज और आत्माको स्याही मानकर अंकित की गई हों!

हिन्दीकी एक छटा आप भी देख लीजिए। गंगा आज उसको थपकियां देकर सुख निन्द्राका अनुभव नहीं कराती। वह अधुना कम्पिलासे मानों रूठकर उससे दूर हट गई है—गंगाकी धार अब यहांसे डेढ़ मील दूर है। किन्तु पुरातनकालमें जब कम्पिला समृद्धिशाली था—बाह्य ऐश्वर्यमें ही नहीं; बल्कि सांस्कृतिक श्री वृद्धिमें भी, तब गंगाकी पवित्र धारा उसके पैर चूमती थी।"

कम्पिलाका ऐतिहासिक गौरव, विभिन्न कवि और धर्मग्रन्थोंमें उल्लेख, महान तीर्थ, धर्म प्रभावनाका शांतिनिकेतन, समाज सुधारकी संकेत भूमि, ऐश्वर्यका शीर्ष बताते हुवे अन्तमें वर्तमान रूपको प्रकट किया है। लेखकने छोटीसी पुस्तकमें शासकीय और

अशासकीय सभी भवनों तथा स्थलोंका वर्णन किया है। एक ऐसा खाका तैयारकर दिया है जो वहां जाने पर बड़ी सुविधासे सभी कुछ देख सकता है। खंडित प्रतिमाएं, रामेश्वर मन्दिर, सिद्धपीठ, कपिल कुटी, द्रौपदी कुण्ड, कालेश्वरका मन्दिर, कंपिल-वासिनी देवीका मन्दिर, आदिका अच्छा वर्णन किया है। सर्वश्री विमलनाथ, महावीर, चन्द्रप्रभु, पार्श्वनाथ, आदिनाथ अरहंत, आदि मूर्तियोंका आकार और स्थापना समय आदिकी ओर भी संकेत किया गया है। प्रयाग संग्रहलायके अध्यक्ष श्री सतीशचन्द्र काला एम० ए० ने इस निबन्धको पांडित्य पूर्ण बताकर विद्वत् समाजमें विशिष्ट आदरकी कामना की है।
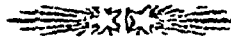
कम्पिलाजीकी पूजा

यद्यपि यह छोटीसी पुस्तक केवल ८ पृष्ठकी है पर कम्पिला तीर्थस्थलीमें जानेवाले श्रद्धालु भक्तोंके लिये बड़ी उपयोगी है, वहां जाकर किस तरह पूजा अर्चना की जावे? इसकी सारी विधि, स्तुति, दोहे, सोरठे, मंत्र और पद हैं। इस पुस्तकको आवश्यकताके सम्बन्धमें बाबूजीने प्रस्तावनामें लिखा है—

"जैन तीर्थोंके पूजासंग्रहमें तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथस्वामीके गर्भ-जन्म-तप और ज्ञान कल्याणकोंसे पवित्र हुए कम्पिला तीर्थकी पूजा न देखकर जीमें आया, यह कमी पूरी होनी चाहिए।" फिर इस कमीको पूरा किया गया। अज्ञानान्धकारको नष्ट करके ज्ञानकी दिव्य ज्योति जलानेकी भावनेसे आरती सजाते समयका एक पद देखिये :—

दिव दीप महिमा ज्ञानमय जिन, तेजसे दर्शाईये।
अज्ञान तमका नाश होवे, विमल ज्योति प्रकाशिये॥
जय विमल तीरथ विमल पद दे, जजहुं मन वच कायसे।
मम विमल मतिकर विमल, सुखवह सुकृत भाव भराईके॥

काकंदीपुरका देव

इस छोटासा ९ पृष्ठका ट्रेक्ट सन् १९५२ में प्रकाशित हुआ। नुनखार रेलवे स्टेशनसे दक्षिण पश्चिमकी ओर दो मील दूर खुखुन्दू नामक ग्राम है जो पुरानी काकन्दी अथवा किष्किन्धा नगरीके नामसे जानी जाती है। काकन्दीकी स्थापना, नगरके राजा, मसान, पुष्पदंत, और उनकी विभिन्न शिक्षाएं बताई हैं। मानवको सुखी बनानेवाली विभिन्न शिक्षाएं प्रेम, सत्य, ब्रह्मचर्य, और कम इच्छा रखने, जैसी बताई गई हैं। जो टीले वहां हैं वह जैन मन्दिरोंके मालूम पड़ते हैं और विभिन्न मूर्तियां भी हैं। वहां लगभग तीस टीले हैं जो इतिहासके खजाने जान पड़ते हैं। यह प्रमुख तीर्थस्थल है।

दिव्य दर्शन

यह १३ पृष्ठीय छोटासा ट्रेक्ट सन् १९५३ में प्रकाशित हुआ। यह एकांकी लघु नाटक है, जिसमें सूत्रधार और उसकी पत्नी नालन्दाके दो बटोही, नरेश और क्षुल्लक पात्र हैं। इसमें भगवान महावीरके निर्वाण कल्याणक उत्सवका वर्णन किया गया है। सत्य, अहिंसा, धर्म और महावीरके ऊपर पात्रोंसे विभिन्न बातें कहलाई गई हैं। क्षु० संसारमें प्रेमका वातावरण फैलानेके लिये प्रतिज्ञा करते हुये कहते हैं—"वैरसे विरोध, वैषम्य बढ़ता है। प्रेमसे प्रेमकी वृद्धि होती है, प्रेम-लोकमें आत्माका अभ्युदय होता है, आत्मा चमकती है, अतः आओ विश्व प्रेम प्रसारित करनेकी प्रतिज्ञा करें।"

पर्वकी कथाएं

"पर्वकी कथाएं" नामक ६४ पृष्ठीय पुस्तक बाबूजी द्वारा लिखित है। इस पुस्तकको देखकर पूज्य वर्णीजी महाराजने कहा था "आपके द्वारा जो कथायें लिखी गई हैं, यदि उनका पाठ ठीकसे किया जाय तो अपनेको संसार-जालसे पृथक् रक्खा जा सकता है"। श्रीमान १०८ पूज्य मुनि समन्तभद्रजी महाराजने शुभाशीर्वादके साथ अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये "जैन सिद्धान्तके रहस्योंको सुलभ रीतिसे सबकी समझमें आवे इस प्रकारसे जो आपने सुबोध और सरल हिन्दी भाषामें लिखनेका कष्ट उठाया है, यह अतीव अनुकरणीय हैं।

सन् १९५३ में भाई हरिश्चन्द्रने अनन्तव्रतके उद्यापनमें व्रतोंकी कथायें छपवाकर जब वितरणकी इच्छा प्रकट की तो बाबूजीने बहुत शीघ्र ही लिखकर उन्हें दीं। इन कथाओंके माध्यमसे अध्यात्मवाद और कर्म सिद्धान्तको बताया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि इन कथाओंमें वास्तविक रूपसे आन्तरिक महत्ता क्या है! सोलहकारण, दशलक्षण, सुगन्ध-दशमी, चौबीसी, और अनन्त व्रत कथाओंका वर्णन किया है।

श्रद्धा, विवेक, क्षमा, वीरता, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चन्य और ब्रह्मचर्य जैसे विषयों पर बहुत कुछ लिखा गया है। प्रत्येक बात मननीय एवं अनुकरणीय है। पर्यूषण पर्व क्षमा और वीरताका सन्देश देता है। इस पर्वके सम्बन्धमें महत्ता इस प्रकार है—"गन्नेकी पोईको भी पर्व कहते हैं।" पोईको निचोड़िये तो बहुत सारा मीठा रस निकल आवे। ऐसे ही पर्युषण पर्व पर स्व-परका, अपने-परायेका और भीतर बाहरका सारा लेखा-जोखा और सार-संभाल की जाती है।

इसीलिए इस अवसर व्यक्ति आत्मशक्तिको विकसित करके वीतराग विज्ञानताकी आराधना करनेमें लीन हो जाता है। इसी प्रकार सभी पर्वोंकी बड़े वैज्ञानिक ढंगसे विवेचना की गई है।

बाहुबली गोम्मटेश्वर

यह बीस पृष्ठकी लिखी छोटीसी पुस्तक है। इसमें साहित्यिक भाषामें बाहुबली गोम्मटेश्वरका ऐतिहासिक वर्णन किया गया है। बाहुबलीका परिचय, उनका भरतसे सम्बन्ध, श्रवणबेलगोलकी बाहुबलि मूर्ति, आदि अनेक प्रसंगों पर प्रकाश डाला है। बाहुबलीकी ५७ फीट ऊंची विशाल मूर्ति है जो विंध्यगिरिके शिखरपर शताब्दियोंसे खड़ी है। यह मूर्ति केवल आश्चर्यकी वस्तु नहीं है इससे महात्मा गांधीने बहुत कुछ सीखा था। बापूजीने लिखा है "सत्य और अहिंसा–शिवं और सुन्दरंका यह जीवित विग्रह है जो इससे खिलवाड़ करेगा–सत्य और अहिंसाके प्रेरणा स्रोतकी पवित्रताको भंग करेगा वह सफल मनोरथ नहीं बल्कि लोकके लिये अकल्याणकारी अनिष्ट सिद्ध होगा।"

मूर्ति तक पहुंचने विभिन्न सीढ़ियां और द्वारोंको पार करनेका सारा वर्णन बताया गया है। मूर्ति इतनी प्रेरणादायक है कि उसमें सत्यं शिवं सुन्दरम्‌के स्वरूपको देखते ही बनता है, उनकी पूजा करके दर्शनार्थी तथा पूजा करनेवाले भक्तगण अपना जीवन धन्य ही मानते हैं। दर्शनोंकी सार्थकता भावनाकी प्रभावनापर निर्भर है। जीवहत्या, नशा न करने, स्वयं जीने तथा दूसरोंके जीवित रहने देने, सदा सच और मधुर बोलने, मानवी कर्तव्योंका पालन करने, रिश्वत और कालेबाजारसे बचने, इन्द्रिय निग्रह करने, फैशनी वस्तुपर धन बरबाद न करने और बचे हुवे धनको पुन्य परोपकार तथा दानमें लगानेकी भावनाओंसे ओत प्रोत हृदयसे भगवान बाहुबलिके चरणोंमें जलाञ्जलि पुन्य बढानेवाले ही दर्शनोंकी सार्थकता मान सकते हैं।

दिव्य–दर्शन

सन् १९५३ में लिखित बाबूजी द्वारा 'दिव्य दर्शन' नामक पुस्तक ट्रेक्टके रूपमें वीर निर्वाणोत्सव एकांकी है। जिसमें यद्यपि १२ पृष्ठ ही हैं फिर भी कथोपकथन, चयन तथा विभिन्न कविताओंको सम्मिलित करनेमें इन्हें पूर्ण सफलता मिली है। दीवाली त्यौहारकी सार्थकता तथा उसके महत्वको बड़े ही शिक्षाप्रद ढंगसे लिखा गया है। सूत्रधार तथा उसकी पत्नीके वार्तालापके बाद श्री सुवेशजीकी एक कविताका पाठ किया जाता है। भगवान महावीरका वो पार्थिव शरीर ही शेष रह जाता है फिर भी लोग उनसे नूतन उत्साह ग्रहण कर संसारमें फैले अज्ञानान्धकारको दूर करनेका प्रयास करते हैं। दीपोत्सव मनाकर जनताके सम्मुख प्रकाशका आदर्श रखा जाता है।

इसी प्रकाशसे अज्ञानरूपी राक्षसका अन्त करके ज्ञानरूपी लक्ष्मीको आत्मसात करनेकी सबको प्रेरणा दी जाती है। उत्सव मनानेके बाद अनेक लोग उनके जीवनसे शिक्षा ग्रहण करते हैं। एक राहगीर मद्यपान न करने, मांस, मछली और अण्डा न खाने, सबसे प्रेम करने, सन्तोष और सत्यताको अपनाने, इच्छाओंको सीमित रखने, अनाजकी खत्तियां न भरने, पशु-पक्षियोंकी रक्षा करते हुवे चमडेकी वस्तुओंको त्यागने और दिनमें ही स्वच्छ जल तथा पवित्र भोजन करनेकी प्रेरणा लेता है और ऐसे अच्छे संकल्पोंको जीवनभर निभानेके लिये प्रतिज्ञाबद्ध होता है। अन्तमें विश्वप्रेम फैलानेकी कविताका सामूहिक गाना होता है और पटाक्षेप हो जाता है। लीजिए उस कविताका एक पद आप भी देखिये—

विश्वप्रेमका दीप जलाएं।
निर्वाणोत्सव दिव्य दिवालीका शुभ पर्व मनाएं।

जैसे हम वैसे सब प्राणी
अतः प्रेमकी सीखें बाणी
कुत्सित हिंसा दूर भगाकर मैत्री भाव जगायें ॥

जैनधर्म परिचय

सन् १९५३ के दिसम्बर मासमें पूर्वीय अफ्रीकाके केनिया प्रान्तके अन्तर्गत मोम्बासा नगरमें आर्यसमाज द्वारा एक सर्वधर्म परिषदका आयोजन हुआ जिसमें भारतसे श्री सोमचन्द छाघाभाई शाह जैन धर्मके प्रतिनिधि बनकर वहां गये वहीं यह पुस्तक जैन धर्मके परिचयके सम्बन्धमें वहां सुनाई। इसमें जैन धर्मका ठीक स्वरूप सबके सामने रखा है ताकि सभी धर्मोंके व्यक्तियोंको इसके बारेमें पूर्ण जानकारी मिल सके।

जैन तीर्थंकरोंकी वैज्ञानिक और सरल विचारधारा, धर्म तत्वकी सबके लिये समानता, तत्वज्ञान और धर्मके क्षेत्रमें जैन धर्मका स्थान, जैन धर्मकी मौलिक मान्यताएं, प्राचीनता, आदि तीर्थंकर ऋषभ ऋगवेद और पुरातत्वके प्रमाण, तथा अन्य सभी तीर्थंकरोंका वर्णन संक्षिप्तमें किया गया है।

जैन संस्कृति, साहित्य और कलाका देश विदेशमें प्रचार, तथा विभिन्न धार्मिक पर्वोंका उल्लेख किया है। जैनियोंकी विशेषता बाबूजीने इस प्रकार बताई है—" जैन बननेके लिये सबसे पहले अहिंसक शाकाहारी बनना पड़ता है। दुनियांमें जैन ही वे लोग हैं जिन्होंने कभी मांस, मदिरा और मधु नहीं खाया है। इसीलिये वे सदा शान्तिके रक्षक और सुखके विस्तार करनेवाले रहे हैं। अन्य धर्मोंने भी अहिंसा और दयाका उपदेश दिया, परन्तु उसे अपने धर्मका मूल आधार नहीं माना। "

मानव जीवनमें अहिंसाका महत्व

सन् १९५४ में ४४ पृष्ठीय इस पुस्तकका प्रकाशन हुआ। इसमें मानव जीवनमें अहिंसाके महत्वको स्पष्ट किया गया है। मानवको अहिंसासे सम्बन्ध, अहिंसाका स्वरूप, और जीवन व्यवहारमें अहिंसाका प्रभाव बताया गया है। लोकके महापुरुष भगवान महावीर, वैदिक ऋषिगण, भगवान कृष्ण, तुलसी, कबीर, नानक, पिहित गुरु नामक यूनानी तत्ववेत्ता, ईरानके महात्मा जरदस्त, हजरतमूसा, रसूलल्लाह, हजरत जौक, शेखसादी, बर्नर्डशा, जर्मनके कवि गेयटे, अमेरिकन तत्ववेत्ता रस्किन, आदि सभीने अहिंसातत्वको भली-भांति समझा और अपनी वाणी तथा व्यवहारके द्वारा सबको उस आदर्श मार्गपर चलनेकी प्रेरणा दी। बाबूजीने बड़ी बुद्धिमानीसे अनेक विचारकोंकी बात कही है।

राष्ट्रीय जीवनको स्वस्थ बनानेके लिये भी अहिंसाकी कसौटीसे ही विचार किया है। स्वास्थ्य खराब होनेके कारण, शक्तिशाली बननेके उपाय, विभिन्न खाद्य पदार्थ तथा संयम जैसी आवश्यक बातोंको समझाया है। मांसाहारको पूरी तरहसे अप्राकृतिक और अग्राह्य बताया है। शाकाहारको विदेशी चिकित्सकों तथा देशी शरीर शास्त्रियोंके विचार मन्थनसे ही उपयोगी सिद्ध किया है। साथ ही राम, कृष्ण और बुद्धके उन उपासकोंको धिक्कारा भी है जो मांसाहार करते हैं।

साधारण जनताको जैनियोंके जीवनसे शिक्षा ग्रहण करनेके लिये बाबूजीने कहा है—"जो लोग अच्छा स्वास्थ्य और सुखी बनना चाहते हैं उन्हें अहिंसा धर्मका पालन करके शुद्ध शाकाहार करना चाहिये। जैनोंका जीवित उदाहरण पाठकोंके सन्मुख है, जैन लोग अहिंसोपजीवी और दयालु प्रकृति अज्ञात कालसे ही रहे हैं।"

भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध

इस ८ पृष्ठीय ट्रेक्टमें दोनों पुरुषोंका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिस पुस्तकको मैं खोलता हूं उसमें बड़ी अजीब अजीब बातें दिखाई पड़ती हैं। उनका अध्ययन बड़ा गजबका था, सारा जीवन ही साहित्य सेवा, शोध कार्यमें लगाने-वाला दूसरा व्यक्ति हमें कोई दिखाई ही नहीं पड़ता। इस पुस्तकको देखनेसे यह बात स्पष्ट होती है कि भगवान बुद्ध स्वयं पहले जैन मुनि थे और उनकी दिनचर्या दिगम्बर मुनिकी दिन-चर्यासे मिलती जुलती थी। पर जब वे इन कठोर नियमोंका पालन न कर सके तो नया मार्ग ढूंढने लगे और बोधि वृक्षकी छायामें ज्ञान प्राप्त कर 'मध्य मार्ग'का ही सबको उपदेश दिया। एक बड़ी अजीब बात और यह देखनेको मिलती है कि दोनों महापुरुष एक ही क्षेत्रमें प्रचार कार्य करते थे, फिर भी आपसमें कभी मिल न सके। जैन ग्रन्थ प्रवचनसार, योगसार, सूत्रकृतांग तथा दश वैकालिकसे बौद्धग्रन्थ धम्मपद, दीघनिकाय, व महावग्गके उपदेशों तथा सिद्धांतोंसे तुलना भी की गई है।

अहिंसा और उसका विश्वव्यापी प्रभाव

सन् १९५५ में १३२ पृष्ठकी यह प्रभावशाली पुस्तक बाबूजी द्वारा लिखित प्रकाशित हुई जो जैनसमाजमें ही नहीं वरन् मानव-जातिमें विशेष लोकप्रिय सिद्ध हुई। श्रीमान् १०५ क्षुल्लक गणेशप्रसादजी बर्णीने इस पुस्तकके बारेमें जो लिखा है उससे इसकी महत्ता प्रकट हो जाती है "मेरी सम्मति है कि इस पुस्तकका प्रत्येक मनुष्य अध्ययन करे जिससे उतने काल स्वच्छ उपयोग रहे ......इसमें अहिंसातत्त्वके ऊपर उत्तम विवेचन है

और विवेचनमें प्रत्येक मतवाले महात्माओं द्वारा अहिंसातत्वको' सिद्ध किया है। पुस्तक पढ़नेके बाद अहिंसक आत्मा हो सकता है।......प्रत्येक भाषामें अनुवाद होना चाहिये।"

डॉ० दशरथ शर्मा दिल्ली विश्व विद्यालयने भूमिकामें लिखा है "ज्यों ज्यों प्राणी अपने हिंसाजन्य विचारों और कर्मोंसे दुःख पाता है त्यों त्यों उसे भान होता है कि अहिंसामें श्रद्धा अहिंसा तत्वोंके ज्ञान और अहिंसाका सम्यक् आचरण ही विश्वशान्तिका एक मात्र मार्ग है। श्री कामताप्रसादजी इसी अहिंसाके पुजारी और उपदेशक हैं। आपका लक्ष्य अत्युत्तम है और 'अहिंसा और उसका विश्वव्यापी प्रभाव' नामकी इस पुस्तककी रचना उस लक्ष्यकी साधनाके लिये आपके बहुतसे उपायोंमेंसे एक है। पुस्तक अपने ढंगकी एक ही है। अहिंसाके सिद्धान्तोंके सार्वत्रिक प्रसारको इतना उत्तम तात्विक और ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत कर श्री कामताप्रसादजीने ऐतिहासिक और धार्मिक साहित्यकी एक बहुत बड़ी कमी पूर्ण की है।"

मानव स्वभावका अहिंसावृत्तिसे सम्बन्ध, अहिंसा और हिंसाके तात्विक विचार भारतीय संस्कृतिमें अहिंसाका महत्व, अफगानिस्तान, अरब, ईरान, फिलिस्तीन आदि मध्य एशियावर्ती देशोंमें, अफ्रीका, अबीसीनियां, इथोयोपिया, मिश्र, तुर्किस्तान, यूनान, यूरुप, अमेरिका, चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा, लंका आदि देशोंमें अहिंसाकी प्रगतिकी पूर्ण विवेचना की गई है। पुरातत्वको अहिंसासे जोड़ते हुये आजके जीवनमें अहिंसाकी आवश्यकता और विश्व-शांतिके आधार स्तम्भपर भली भांति विचार प्रकट किया गया है। देश विदेशके महापुरुषों तथा धर्म ग्रंथोंके उद्धरणोंसे यह पुस्तक भरी पड़ी है। मांसाहारका खुले रूपसे ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक तत्वोंके आधारपर विरोध किया गया है।

श्री पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ अध्यक्ष दिगम्बर जैन संस्कृत

कालेज जयपुरने तो यहां तक लिखा है "प्रस्तुत पुस्तकमें अहिंसाके विश्वव्यापी प्रभावका जो विवेचन है वह पाठकको अपनी ओर खींचता है और अहिंसाके प्रति उनकी आस्था उत्पन्न करता है। इसमें ऐतिहासिक एवं व्यापक दृष्टिकोणसे अहिंसाका वर्णन है। न केवल भारतवर्षमें अपितु विदेशोंमें भी अहिंसाकी जो प्रतिष्ठा हुई है उसका ऐतिहासिक विवेचन है। संसारके विभिन्न प्रख्यात धर्मोंमें अहिंसाको शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ है। श्री बाबू कामता-प्रसादजीको धन्यवाद है कि उन्होंने भगवती अहिंसाके प्रचारमें यह योगदान देकर दूसरोंको भी इस ओर आकृष्ट होनेकी प्रेरणा दी है।"

गिरिनार–गौरव

सन् १९५५ में लिखित ६६ पृष्ठीय पुस्तक गिरिनार तीर्थक्षेत्रकी गौरव गरिमाको प्रकट करती है। इस पुस्तकके लिये बाबू कामताप्रसादजीने बड़े ही अथक परिश्रमसे विदेशी विद्वानोंके संस्मरण, व लिखित पुस्तकें, शिलालेख, श्वेताम्बर व दिगम्बर जैनोंके ग्रंथ, हिन्दू शास्त्र तथा अन्य उपयोगी ग्रंथोंका अध्ययन करके इसकी रचना की। इसीलिये इतिहास प्रेमियों, तथा जैन समाजके लिये बहुत बड़ी देन सिद्ध होती है। जहां एक ओर इतिहासकी झलक है वहीं दूसरी ओर भक्ति, प्रेम और श्रद्धाका खजाना भी है। जिस तरह कोई गूंगा व्यक्ति मिठाई खाकर भी उसका वर्णन नहीं कर सकता, वैसे ही धर्म प्रेमी व्यक्ति पढ़कर आनन्दसागरमें डूबता और उतराता दिखाई पड़ता है पर उस आनन्दका वर्णन करनेमें असमर्थ पाता है।

प्राचीन तीर्थंकरों तथा पूज्य आचार्य और सन्त महात्माओंने साधना और तपके लिये प्रकृतिके रमणीय स्थलोंको चुना था, उनमें रहकर ही अपने जीवनको साधना व त्यागका पाठ विश्वको

पढ़ाते रहे। यही स्थान आगे चलकर सुसंस्कारित तीर्थके रूपमें हमारे सामने आये। ऐसी बात नहीं कि समाजकी श्रद्धा इन तीर्थोंके प्रति न हो, अवश्य है और इसीलिये तन, मन, धन सभी कुछ निछावर भी किया। पर उतनी महिमा, वास्तविकता, तथा पूर्ण स्थितिको सर्व साधारणके समक्ष रखनेका प्रयास नहीं किया। यह धर्मकी बहुत बडी कमी रहती है। इसीलिये लोगोंमें अन्ध विश्वास बढ़ता है। यह कमी बहुत ही खटकनेवाली थी जिसकी पूर्ति बाबूजीने 'गिरिनार-गौरव' लिखकर की।

गिरिनारका वर्णन इतिहास, शिलालेख, जैन साहित्य, व वैदिक साहित्यके अंचलसे लिखा गया है। तीर्थकी वर्तमान स्थिति, उसके जीर्णोद्धारमें विभिन्न दान दातारोंका सहयोग और वेदी प्रतिस्थापनाका वर्णन भी किया है। भगवान नेमिनाथके गिरिनारमें मुनि होने. और भगवन् समन्तभद्र स्वामी द्वारा गिरिनार पहुंचनेपर आत्माह्लादसे विभोर होनेका उल्लेख भी मिलता है।

केवल तीर्थ स्थलोंकी महिमामें उलझ गये हो ऐसा नहीं है, इसी पुस्तकमें जैनधर्मकी प्राचीन मौलिक मान्यताओं, प्रारम्भिक स्थितिका वैज्ञानिक वर्णन, २४ तीर्थंकरों, प्राचीन जैनधर्ममें दिगम्बरत्वका विशेष महत्व, और धर्मकी प्राचीनता पर भी प्रकाश डाला है ताकि तीर्थ महिमाके साथ२ अन्य बातोंकी भी जानकारी मिल सके।

भगवान महावीर और अन्य तीर्थंकर

बड़े आकारकी १४ पृष्ठीय पुस्तक सन् १९५६ में प्रकाशित हुई। इसमें यह बताया गया है कि जैनधर्म भगवान महावीरसे प्राचीन है, तीर्थंकरकी विशेषताएं आदि कालीन धर्मके सिद्धांतों तथा भगवान महावीरके अतिरिक्त अन्य तीर्थंकरोंके कार्यों, उपदेशों, तथा विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। भगवान महावीर

वो जैनधर्मको पुनः प्रकाशमें लाये थे। इन्हें आप्तदेव तो इसलिये माना जाता है कि वे सर्वज्ञ परमात्मा थे।

शान्तिका सन्देश

सन् १९५६ में १५ पृष्ठकी इस पुस्तकका प्रकाशन हुआ। राजीव और उसके पिताके बीच इस पुस्तकमें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथके सम्बन्धमें बातचीत करवाई गई है। बेटा राजीव जिज्ञासुकी तरह अपने पितासे सब कुछ पूछता जा रहा है और पिताजी बड़े प्रेमसे बताते जा रहे हैं। शुरूमें भगवान शान्तिनाथके पुण्यधाम हस्तिनापुरके महत्व तथा ऐतिहासिकता पर प्रकाश डाला है। और बादको भगवानकी धर्मसाधना, मोक्ष, महान बननेका साधन, हस्तिनापुरमें मेला जुड़नेका कारण, जीवात्माका साक्षात्कार, रेशमके कपड़ोंसे हानि, धनरथ नामक राजाका परिचय, उनके पुत्र मेघरथ व दृढ़रथ द्वारा मुर्गोंको लड़ाया जाना, उन मुर्गोंके पूर्व जन्मके संस्कारोंको बताना, आजकलके शासनकी हिंसक नीति, राजा धनरथका वैराग्य धारण करना, पशुबलिकी कुरीतिकी भयंकरता, मेघरथके जीवनका शान्तिनाथ होना, देवों द्वारा शान्तिनाथ तीर्थंकरके जन्मोत्सव मनाना, बादको राजकुमार बनने, आदर्श राजाकी स्थापना करने, तपस्याके लिये बनको जाने तथा अंतमें महान बनकर अमरत्व प्राप्त करनेकी बातें बताई गई है।

तीर्थंकरकी जीवनीके साथ साथ आधुनिक समस्याओं तथा कुरीतियों पर बीच बीचमें प्रकाश डाला गया है। सूक्ष्म दृष्टिसे देखें तो बाबूजी जहां तीर्थंकरकी जीवनीको लेकर चले हैं वहां वर्तमान वातावरणमें पनपनेवाली बुराईयोंको भी उसमें नत्थी करके पाठकोंको छोड़नेकी प्रेरणा दी है। क्रोध और राग द्वेषको बदलेसे नहीं वरन् प्रेमसे जीतनेकी शिक्षा सीखिये। वैरसे वैर

नहीं मिटता, बदलेसे बदला नहीं चुकता, आगसे आग नहीं बुझती। प्रेमकी शीतलधारा ही वैरकी अग्निको बुझाती है। जीव इस सत्यको पहचान कर सीखे और उस पर व्यवहार करे तो जीवनमें शान्ति मिलती है।

मोटरमें बैठे हुवे चार यात्रियोंसे जो हस्तिनापुरका मेला देखने जा रहे हैं शान्तिनाथकी जीवन झांकीके बीचमें ही फैशन पर कटाक्ष करवाया है ?" एक यात्री बोला......आज तो महिलाएं फैशनके पीछे दिवानी हो रही हैं।' 'अजी, धर्म कर्म कौन करे वह तो शृङ्गारके मारे पेटके धन्धेसे भी चुनती हैं। तीसरा बोला 'अरे भाई, क्या कहूं ? नहाधोकर क्रीमादि जाने क्या क्या लगाती हैं, जो चर्बी, मछलियों, केपरों, अंडोंकी सफेदी आदि अपवित्र पदार्थोंसे बनाई जाती है।'

चौथेने कहा—"समयकी बलिहारी है।"

वह पहला आदर्श विवाह

यह एक बहुत छोटी १२ पेजकी पुस्तक है जिसमें बाबूजीका एक लेख भगवान ऋषभदेवके शुभ विवाह पर है। १ दिसम्बर सन् १९५७ में आयुष्मती सत्यवती जैन व चिरंजीव सन्तलाल जैनका विवाह संस्कार नई दिल्लीमें हुआ था। उस समय विवाह पक्षीय लोगोंके निवेदन पर यह पुस्तक नवम्बर ५७ में लिखी गई थी जिसमें अन्य कवियोंकी कविताएं भी दो तीन संकलित हैं।

प्रारम्भमें तो संक्षिप्त जीवन परिचय है और बादको विवाहकी आवश्यकता तथा उसके आदर्श स्वरूपकी व्याख्या की है। भगवान ऋषभके यह शब्द कितने शिक्षाप्रद हैं जरा विचारिये

तो सही "मानव सन्ततिको बढ़ानेके लिये और परस्पर
संगठित समाज-सहयोगकी सिद्धिके लिये विवाह एक परम धर्म
है। नर और नारीको गृहस्थ धर्मरूपी रथके दो पहिये बनकर
अपनेको मिटा देना होगा। विवाह मानवको भोगसे ऊपर उठाकर
त्याग धर्मका पाठ पढ़ाता है। एक दूसरेको सुख दुःखको अपना
मानना और सेवा करनेमें आनन्द लूटना नवदम्पतिका जीवन
ध्येय होता है।"

आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव

डॉ० कामताप्रसादजी जैन द्वारा रचित "आदि तीर्थंकर भ० ऋषभदेव" नामक पुस्तकका प्रथम संस्करण सन् १९५९में प्रकाशित हुआ। १७६ पृष्ठकी यह पुस्तक 'आदिनाथ' के जीवनका सांगोपांग वर्णन करती है। इसमें विभिन्न प्रकारका पुरातन साहित्य, शिलालेख, पुरातत्व विभागकी शोध, तथा जनश्रुतियोंके आधार पर यह बतलाया गया है कि प्रथम तीर्थंकरने अपने चरित्र, साधना तथा वाणीके प्रभावसे जन मानसको किस तरह झाक-झोर दिया।

श्री कृष्णदत्तजी वाजपेयी एम. ए., अध्यक्ष प्राचीन इतिहास और पुरातत्व विभाग, सागर विश्वविद्यालयके शब्दोंमें "भगवान ऋषभदेवके बहुमुखी जीवनके सम्बन्धमें यह ग्रन्थ निःसन्देह एक नवीन व्यवस्थित प्रयास है।"

आदिकालमें मानवताकी झांकी, भगवानका अवतरण, तीर्थंकर बननेकी ओर प्रयास, प्रारम्भिक जीवन, समाज कल्याणकी इच्छा, गृह त्यागकर तपस्याका जीवन और जन सुधार जैसे अनेक पहलुओंका विस्तृत रूपसे विवेचन किया है।

ऋषभदेव जैनधर्मके अधिष्ठाता रहे हैं ऐसी बात नहीं है, हिन्दु धर्मके प्रमुख ग्रन्थोंके आधार पर वैदिक मान्यताएं भी बताई हैं। ऋगवेद मंडल ३ के मंत्रों द्वारा वृषभको आदि तीर्थंयर सिद्ध किया है। पौराणिककालमें ऋषभदेवको ८ वां अवतार माना गया। उन्होंने लिखा है "भगवान ऋषभ अथवा वृषभ उस प्रागैतिहासिक कालीन अखण्ड भारतके महापुरुष हैं जिसमें श्रमण और ब्राह्मणोंमें कोई भेद न था। यही कारण है कि ऋषभ श्रमणोंके आदि पुरुष हैं। और वैदिक आर्योंके ८ वें अवतार।"

ऋषभ वेदोंके द्वारा आदि देव माने गये। अथर्व वेद (१९, ४२, ४), भक्तामरस्तोत्र भी इसी प्रकारकी पुष्टि करते हैं। भागवत पुराण स्कन्ध ५, मार्कण्डेय पुराण, कर्म पुराण, शिवपुराण, विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, लिंगपुराण, ब्राह्मण पुराण, स्कन्धपुराण, वाराह पुराण, वायु महापुराण, प्रभास पुराण, मनुस्मृति और महाभारतके प्रसंग देकर विभिन्न धर्म ग्रन्थोंमें भगवान ऋषभका स्थान बताया है।

५

वैदिक साहित्यके अतिरिक्त प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ 'धम्मपद' 'आर्यमन्जु श्री मूल कल्प', 'न्याय बिन्दु'के नामोल्लेखोंका वर्णन किया है। सिक्खोंके गुरु गोविंदसिंहने अपने 'दसम ग्रन्थ साहिब' में भी ऋषभदेवको सम्मान दिया है। तामिल और कन्नड साहित्य भी इससे अछूता नहीं रह सका। डा० राधाकृष्णन् और डा० ए० पी० कारमारकरने भी ऋषभके अद्वितीय योगी बताया है।

अब तक जितनी मूर्तियां और शिलालेख खुदाईके द्वारा प्राप्त हुये हैं उन शिलालेखोंका वर्णन अच्छी तरहसे किया है। मूर्तियोंको देखनेसे स्पष्ट होता है कि ५-६ हजार वर्ष पूर्वकी ऋषभदेवकी मूर्तियां बनने लगी थी। विभिन्न प्रकारकी पुरातत्व विभाग द्वारा उपलब्ध सामग्रीकी ओरसे भी इतिहासकार लाभ नहीं उठाना चाहते इसीलिये डॉक्टर साहबको कहना पड़ा।

"संभव है कि अब आदि भगवानके जीवनचरित्रकी महत्ताको समझकर हमारे इतिहास लेखक अपनी भूलको पहिचान लगे। विदेशी विद्वानों प्रो० डी० हाजिमें नाकामुरा, इटलीके प्रो० ज्योसेपटुरशी, डॉ०सिल्वालेंवीने भी अपने विचार प्रकट किये हैं। विदेशोंमें जहांसे ऋषभदेवकी मूर्तियां मिली हैं या आज भी मौजूद हैं उनका वर्णन भी किया गया है।

अनेक ग्रंथोंमें भगवान ऋषभ और शिवको ए

ग्रहण किया गया है। शिवपुराण, प्रभासपुराण और महाभारतको 'अनुशासन पर्व' सिद्ध भी करता है। दोनोंमें समता बताते हुये बाबूजीने लिखा भी है "भगवान ऋषभका चिह्न बैल, उधर शिवजीका वाहन मिलता है। जैसे शिव जटाजूट युक्त थे, वैसे ही भगवान ऋषभकी जटाजूट युक्त मूर्तियां बनानेका विधान जैन शास्त्रोंमें है।

कहते हैं कि शिवजीके निमित्तसे गंगाजीका अवतरण पृथ्वी पर हुआ, जैन शास्त्र भी बताते हैं कि गंगा जहां भूतल पर अवतीर्ण हुई वहां गंगाकूटमें भ० ऋषभकी जटाजूट मूर्तियां मौजूद हैं। त्रिशूलधारी और अन्धकासुर विध्वंशक शिवजी जैसे कहे गये हैं वैसे ही अर्हतदेव ऋषभ हैं। ऋषभदेवकी प्रायः सब बातें शिवजीसे मिलती हैं।

अतः उन्हें अभिन्न समझना चाहिए। ऋषभ ही प्रतीकरूपमें शिव कहे गये हैं। इस तरहसे यह बात विदित होती है कि यह पुस्तक बड़ी ही तथ्यपूर्ण तथा अत्यधिक प्रयासके बाद संसारके समस्त धर्म ग्रन्थोंके अध्ययनके बाद लिखी गई है।

सर्वोदयका सार्वभौम स्वरूप

सन् १९५९ में प्रथमबार प्रकाशित ८ पृष्ठीय ट्रेक्ट सर्वोदय विचारधारा पर बाबूजी द्वारा लिखा हुआ है। इसमें यह बताया गया है कि आज जो सर्वोदयका रूप महात्मा गान्धीने समाजके सामने रखा और आचार्य विनोबा जिसे आगे प्रसारित करनेमें लगे हैं उसमें श्रमकी प्रधानता ही स्पष्ट झलकती है। वैसे पुराने इतिहासके आधार पर यह जाना जाता है कि भगवान ऋषभदेव कृषि आदि कर्मोंका आविष्कारकर जनताको श्रमका पाठ पढ़ाया

था। और प्रत्येक क्षेत्रमें प्रकाश दिखानेवाला प्रमुख व्रत अहिंसा ही सबको दिया। अहिंसाके विकासके लिये लोगोंमें शाकाहारका प्रचार किया गया अहिंसाका साम्राज्य चहुंओर फैला इसीलिये भगवान महावीरके तीर्थ स्थलको समन्तभद्राचार्यने 'सर्वोदय' कहकर पुकारा क्योंकि वहां बिना किसी भेदभावके प्रत्येक जीवको सुख शान्ति देनेकी कोशिश की जाती थी।

पुरातन सर्वोदय तीर्थसे आजके सर्वोदय आन्दोलनकी विशेषताओंमें समानता बताते हुये, सर्वोदय तीर्थकी अन्य अनेक विशेषताएं भी समझाई हैं। प्रत्येक नागरिकको ७ बातें माननेके लिए कहा गया है जिसमें प्राकृतिक भोजन, समताका व्यवहार, प्रिय वचन, शोषण न करना, इन्द्रिय निग्रह, स्वदेशी वस्तुओंका प्रयोग और आत्मशक्तिमें विश्वास प्रमुख है। बाबूजीने स्पष्ट ही कहा है—"मैं भगवान महावीरके सर्वोदय तीर्थकी तरह जीवमात्रके प्रति कल्याण भावना रखकर मानव आगे बढ़ें और विवेकसे काम ले तो महान लोककल्याण हो।"

अहिंसाकी तात्विक विवेचना

इस २३ पृष्ठकी पुस्तकमें जिनेश तथा राकेशके बातचीतके माध्यमसे बाबूजीने अहिंसाकी तात्विक विवेचना की है। राकेश अहिंसाकी मखौल उड़ाता है और नई नई शंकाएं सामने उपस्थित करता है। मैं तो यही समझता हूं कि समाजके उन लोगोंका जो अहिंसामें विश्वास नहीं करते, उसका उपहास करते हैं, आलोचक तथा व्यर्थकी बकवाद करनेवाले हैं, राकेश प्रतिनिधित्व करता है। तथा ऊटपटांग की हुई बातोंका जिनेश बड़े शांतता और धैर्यतासे उत्तर देता है। और बीच बीचमें तुलसी, कबीर, हजरत मुहम्मद, कन्फ्यूशस, कवि फरदौसी, सिकन्दर, पिथागोरस

और प्रो० क्लान्क आदिके उदाहरण भी दे देकर दकियानूसी विचारधाराओंको पनपानेवालोंकी आंखे ही खोल दी हैं।

अहिंसा भाव बढ़ाने, अभक्ष्य वस्तुएं न खाने और लोक हितकारी बननेकी सलाह दी गई है। साथ२ उन व्यक्तियोंको जो शक्तिवर्द्धकके लिये मांसाहार आवश्यक मानते हैं, अण्डेको शाका-कार बताते हैं, डॉ० बोसके आधार पर शाकाहारको भी हिंसक कहते हैं, मुंहतोड तर्कसे जवाब दिया है। सारी शंकाएं मिटाती हैं, कुतर्कको एक ओर ताकमें रख दिया है। साधुओंको उनके आदर्श जीवनका बोध भी कराया है। और कुतर्की भी अन्तमें शंका-समाधानके बाद यही कहता है—"समझमें आ गया कि अहिंसा और हिंसाका मापदण्ड मानवके हृदयगत भाव हैं। दयासे अनुरंगित भाव जिस व्यक्तिके होंगे उसमें सदा मानवता जागृत रहेगी, वह इन्द्रिय वासनाका दास नहीं बन सकेगा।"

अहिंसामें कायरता नहीं है

सन् १९५९ में २४ पृष्ठीय पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें अहिंसाको जीवन तथा परमार्थ और हिंसाको मरण तथा स्वार्थ बताया गया है। मानव जीवन भी निरन्तर बहनेवाली नदीके समान है, जो बराबर कठिनाइयाँ उठाते रहनेके बाद अपने लक्ष्यको पहुंच जाता है। जैसे नदी दो किनारोंको बांधकर आगे बढ़ती है वैसे मानव जीवनके दो किनारे सत्य और अहिंसा है। मानव जीवन इन्हीं दो किनारोंके बीच रहकर सुरक्षित रह सकता है। पश्चिमी देश आतंक फैलानेमें लगे हैं। आजके लोग अहिंसाके बाह्य रूपको देखकर उसमें कायरताकी गन्ध पाते हैं पर आन्तरिक शक्तिको जो बिरले देख पाते हैं, उनका अज्ञानांध-

कार ही छूमन्तर हो जाता है। अरे भाई अहिंसा तो एक ईश्वरीय शक्ति है।

स्वामी समन्तभद्राचार्य, अंग्रेज कवियत्री इलाव्हीलर विलकॉक्स, शेक्सपियर, जीसस, भगवान ऋषभ, राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, सुकरात, ईसा. और सन्त तानियाळने अहिंसाका महत्त्व नहीं समझा वरन् उसे अधिकतर अपने जीवनमें भी स्थान दिया। हिंसक जीव जन्तुओंमें अहिंसक तत्वोंको रखा गया है। अहिंसाकी व्यवहारिक उपयोगिता और परिमाण बताकर इतिहासके आलोकसे अहिंसाकी विशेषता स्पष्ट की है। जो लोग अहिंसाके सम्बन्धमें जानते नहीं हैं वही आलोचना करते समय कायरता बताते हैं। बाबूजीने स्पष्ट ही लिखा है "अहिंसामें निष्क्रियताके लिए कोई स्थान नहीं है—वस्तुतः अहिंसा तो वह सक्रिय शक्ति है जो हताश हृदयोंमें नवजीवनका संचार करती है और उनको अभय बना देती है।"

विवाह—सुमनोजलि

सन् १९६० में बाबूजीने अपनी सुपुत्री सौ० सुमनलताके विवाहोत्सव पर इस "विवाह सुमनांजलि"का सम्पादन किया था। इसमें ९० पृष्ठ हैं। इस अभूतपूर्व ग्रन्थमें श्री वर्णीजी, ब्रह्मचारिणी चन्दाबाई, महात्मा भगवानदीन, स्वामी शिवानन्द, स्वामी आर० पी० अनुरुद्ध, डा० राधाकृष्णन, श्री वी० वी० गिरी भूतपूर्व राज्यपाल उत्तर प्रदेश, श्री दशरथ जैन उपमन्त्री म० प्र०, श्री सौभाग्यमल जैन राजस्वमन्त्री मध्यभारत, प्रो० तानयून-शान अध्यक्ष चीन भवन, उपन्यासकार श्री काहकर फ्रांथ, अमेरिकन प्रख्यात लेखक श्री वेयन ऐच० स्टील, अमेरिकामें शाकाहारकी

अनन्य प्रचारिका डा० कैथेरीन निम्मो, प्रो० अर्नोल्ड कोसरविंग जर्मनी, प्रो० लोथर वेन्डेल पिलानी, श्री यूजेन जैसियथिधा वारसा पोलैण्ड, डा० नाग कलकत्ता, डा० गुलाबराय, श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० हीरालाल जैन, श्री अगरचन्द नाहटा, डा० हरदेव बाहरी, श्री महेन्द्र, डा० पद्मसिंह शर्मा जैसे सैकड़ों विश्वविख्यात, सन्त महात्माओं, विद्वानों, और साहित्यकारोंके शुभ सन्देश तथा वैवाहिक जीवन-पर महत्वपूर्ण विचार हैं।

दूसरे भागमें प्रिय पुत्री सुमनसे सम्बन्धित ही अनेक कविताएं हैं, जिनमें श्री मिलफोर्ड अमेरिका, पद्मश्री विभूषित डॉ० लक्ष्मी-नारायण साहू, श्री हरिशंकर शर्मा, गुंजन, शशि, सुवेश, पुरन्दर, भास्कर, कुसुम, रूपचन्द्र गार्गीय, ठा० लोकपालसिंह एम. एल. ए, वीरेन्द्र, सुरेन्द्रसागर प्रचण्डियाकी प्रमुख रूपसे पठनीय हैं। इस तरहसे हम प्रत्येक कवि व विचारकके शब्दोंसे बड़ी प्रेरणा प्राप्त करते हैं। अमूल्य बातों व सुभाषितोंका इसमें समावेश किया गया है। विवाहकी पावनता तथा जीवनके लक्ष्यको भुलानेवाले व्यक्ति सुखी नहीं रह सकते। जो व्यक्ति कामवासनाकी पूर्तिमात्र ही विवाह बन्धनमें समझते हैं उनसे पतित और नीच शायद ही कोई हो। बापूजीने स्पष्ट ही कर दिया है—"विवाह पुरुष और कन्याके लिये त्यागमय जीवनकी साधनाका प्रतीक है। वह भोगके सीमित आनन्दकी परिधिसे मानवको ऊँचा उठाकर शाश्वत स्नेह और सुखके द्वारपर पहुंचा देता है।"

तीर्थंकर महावीर और आधुनिक युगमें उनकी शिक्षाका महत्व

यह २४ पृष्ठीय ट्रेक्ट सन् १९६३ में प्रकाशित हुआ। इसमें भगवान महावीरका संक्षिप्त जीवन चरित्र तथा उनके द्वारा बताई गई विभिन्न शिक्षाओंका आजके युगमें महत्व पर प्रकाश डाला है। अंतिम दो पृष्ठोंमें महावीर वचनामृत हैं। गागरमें सागर भरनेकी कहावत चरितार्थ हुई दिखती है। महावीरकी शिक्षाओं पर लोग शंका करने लगते हैं और यही सोचते रहते हैं कि इन बातोंसे भला क्या देश, जाति और विश्वका कल्याण होगा ?

ऐसे शंकाग्रस्त व्यक्तियोंके लिये डाक्टर साहबने लिखा है "हम स्वयं इनका उत्तर कुछ नहीं देना ठीक समझते हैं क्योंकि इसका उत्तर बड़े बड़े महापुरुष यही देते हैं कि भगवान महावीरका आदर्श जीवन और उनके सिद्धान्त आज भी जीवनमें आगे बढ़ानेके लिये मार्गदर्शन करनेमें समर्थ हैं........। डॉ० राधाकृष्णनने कहा था कि "यदि मानवताको विनाशसे बचाना है और कल्याणके मार्ग पर चलना है तो भगवान महावीरके सन्देशको और उनके बताये हुये मार्गको ग्रहण किए बिना कोई रास्ता नहीं है।

भ० महावीर वर्द्धमान

यह ३३ पृष्ठीय ट्रेक्ट भगवान महावीरके जीवनसे सम्बन्धित है। इसमें भगवानके जीवनसे सम्बन्धित समस्त घटनाओंका संक्षिप्त रूपमें वर्णन किया है। जन्मसे लेकर निर्वाण तककी बातोंका संकेत किया है। भगवानका अपूर्व ज्ञान, अनूठा चरित्र, निर्भयता, प्रेमका प्रभाव, विवाहका प्रसंग, वैराग्यकी ओर बढ़ते

कदम, बारह वर्षोंकी घोर तपस्या, उपसर्गोंकी साधना, अनार्योंको अहिंसाका शिक्षण, दलित दासों और तिरस्कृत महिलाओंका उद्धार, केवलज्ञानकी महान घटना, उपदेशामृतके चातकोंको स्वाति बून्दकी पूर्ति, अहिंसाका प्रभाव, और अनेकांतमें एकता जैसी अनेक बातोंको बड़े अच्छे ढंगसे समझाया है। बाबूजीने हिंसाको विदेशियोंकी देन मानते हुये लिखा है—

"जिस प्रकार आज भारतमें अंग्रेज नहीं हैं। भारतीय स्वाधीन हैं, परन्तु अंग्रेजोंके चले जाने पर भी भारतीय अंग्रेजी सभ्यताकी दासतामें अंधे हुए बहे जा रहे हैं, हिंसा और अपराधको बढ़ा रहे हैं, उसी प्रकार राजा वसुके समयमें आसुरीवृत्तिका प्रभाव भारतमें आ घुसा था। यह भारतीय संस्कृतिकी देन नहीं है।

इस पुस्तकमें भगवान महावीरकी अनेक शिक्षाएं हैं जिनमेंसे यदि एकका भी पालन कर लिया जावे तो कल्याण हो सकता है। भगवानने प्रमादियोंको चेतावनी दी है—"जैसे वृक्षके पत्ते पीले पड़ते हुये समय आने पर झड़कर पृथ्वी पर गिरजाते हैं, उसी तरह मनुष्य जीवन भी आयु शेष होने पर समाप्त हो जाता है। अतः हे मानव ! समय भरके लिये भी प्रमाद न कर।"

भक्ति और उपासना

यह ७६ पृष्ठीय पुस्तक सन् १९६४ में प्रकाशित हुई। संसारके सभी धर्मोंमें भक्ति और उपासनाका बहुत महत्व है पर उसका रूप बिगड़ जानेके कारण ही लोगोंमें घृणा और उपेक्षाकी भावना आ गई है। बिना इस रूपको भली भांति समझे हुये लोगोंका ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं हो सकता। श्री चैनसुखदास जैन आचार्य संस्कृत जैन कालेज जयपुर (राजस्थान) ने इस पुस्तकके सम्बन्धमें कहा है—"भक्ति और उपासना एक सुन्दर आख्यान है.........इस पुस्तकका विवेचन मनोवैज्ञानिक है।"

इस तरह नाटकीय ढंगसे लिखा गया है। राकेश आजकी सभ्यताके चकाचौंधसे प्रभावित युवक है उसकी जीवन साथी श्रद्धा विवेकशील नारी है। दोनोंके विचारोंमें भिन्नता है फिर भी सुखी दाम्पत्य जीवनका आनन्द ले रहे हैं। साकार उपासनाका महत्व, मूर्ति स्थापनाकी आवश्यकता, सच्चे ज्ञान और श्रद्धाकी महत्ता, अपूर्व आदर्श और भक्तिके विभिन्न चमत्कारोंका वर्णन किया है। राकेश अपनी पत्नीसे बड़ी अजीब अविश्वाससे भरी हुई शंकास्पद बातें पूछता है और पत्नी उसका बड़े प्रेमसे और सहृदयतासे उत्तर देती है। झुंझलाहट तो नाम मात्रको भी दिखाई नहीं पड़ती, उपहास करनेपर भी चेहरा बिलकुल भी खिन्न नहीं होता।

प्रश्नोत्तर ढंगसे समझानेकी प्रणालीके कारण पुस्तकमें चार चाँद लग गये हैं। पत्थरकी मूर्तिको देखकर राकेश अपनी पत्नीकी मजाक उड़ाता है उस समयकी स्थिति संक्षिप्तमें देखिये—

राकेश—छिः पत्थरको भगवान कहती हो।

श्रद्धा—पत्थरको भगवान नहीं कहती। निस्सन्देह पत्थर भगवान नहीं होते।

राकेश—तो फिर?

श्रद्धा—तो फिर क्या? सच्ची श्रद्धा, सच्चे ज्ञान और सच्चे कर्मसे पत्थर भी भगवान हो जाते हैं।

जापकी आवश्यकता, शिक्षाके प्रमुख दोष, समयका दुरुपयोग, और कालेज जीवनके खिलवाड़ोंकी ओरसे सचेत करते हुये, आदर्श बनने, धार्मिक श्रद्धाको जनता तक रखने, आध्यात्मिक विकासकी रूपरेखा, और प्रभुनामके अपार बलको समझाया है। सबसे बड़ी परेशानी तो यह है कि जब कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति श्रद्धालु उपासक बन जाता है तो उसके मित्र उसका खूब उपहास करते हैं। पर आगे चलकर एक बात यह भी दिखाई पड़ती है

कि अपने विचारों पर दृढ़ रहनेसे विरोधी या मजाक उड़ानेवाले साथी या साधकके रूपमें सामने आते हैं। बीचमें कविताएं तथा पद भी दिये गये हैं जैसे—

सोचा करता हूं भोगोंसे बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन मानों पावकमें घी डाला॥
तेरे चरणोंकी पूजासे इन्द्रिय सुखकी ही अभिलाषा।
अबतक न समझ पाया प्रभु, सच्चे सुखकी परिभाषा॥

विभिन्न संस्कृताचार्यों, वैज्ञानिको तथा सन्त महात्माओंके उद्धरण उपदेशात्मक ढंगमें पढ़कर जीवनकी दिशा बदलती हुई दिखाई पड़ती है। ह्यूफलैंड, हडसन, मैथलीशरण गुप्त, स्वामी रामतीर्थ, और डॉ० कैरेल जैसे अनेक देशी विदेशी विद्वानोंके विचार भी दिये गये हैं। लीजिए बाबूजीने राकेशके मुंहसे अपनी बात किस तरह कहलवाई है। राकेश अपने मित्रोंको विनयकी आवश्यकता समझा रहा है—

"लीजिए आप अधिक 'बोर' न होइये। मैं संक्षेपमें ही आपको बताता हूं। विनयभाव मनुष्यमें स्वभावसे है—विनयसे मनुष्यमें पात्रता आती है। विनयभाव जगते ही मानवके अन्तरमें अनुशासन, सत्यता, श्रद्धा और भक्ति उमड़ पड़ती है जिसका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति गुरुजनोंकी संगतिमें रहकर अपने जीवनको शुभ परिणतिमें लगा लेता और सुखी होता है।"

मानवका प्राकृतिक भोजन फल, शाक और अन्न है

२४ पृष्ठीय छोटी पुस्तक जिसका नाम "मानवका प्राकृतिक भोजन फल, शाक और अन्न है।" बाबूजी द्वारा लिखित यथा नाम तथा गुणके अनुरूप ही दिखाई पड़ती है। लोगोंमें शुरूसे यह धारणा चली आ रही है कि आदिकालमें मानव हिंसक प्रकृतिका था पर इस मान्यताको गलत बताकर यह सिद्ध किया है "प्रारम्भमें मानव ही नहीं, पशु पक्षी भी अहिंसक थे और प्रेमसे रहते थे।" पुरातन कालके प्राणी प्रकृतिके आधार पर अपना जीवन व्यतीत करते थे। बागे अदनमें आदम और हव्वा तथा बहिश्तमें जन्मनेवाले पुण्यात्मा सभी जलाहार पर जीवन व्यतीत करते थे। सुमेरियाके ३६०० वर्ष पुराने लेख, अमेरिकाके रिसर्च विश्व विद्यालयके प्राध्यापक श्री एशले मानटेगूके प्रयोग, महात्मा गांधीके विभिन्न परीक्षणके आधार पर बाबूजीने व्यक्तियोंको शाकाहारी बननेका परामर्श दिया है।

वेद, मनस्मृति, महाभारत, ईसाई, इस्लाम, पारसी, कन्फ्यूशस, शिन्टो, जैन, बौद्ध और लाउसे धर्म तथा विभिन्न ग्रन्थोंके उन प्रसंगोंको स्पष्ट रूपसे खोल खोलकर उन धर्म-प्रेमियोंके लिये रखा है जो अन्ध विश्वासी तथा ढोंगी हैं और धर्मके नाम जीवोंकी हत्यामें लगे हैं। मांसाहारको समाजोन्नतिमें बाधक बताते हुये वैज्ञानिक, शारीरिक और आर्थिक दृष्टिसे आवश्यक घोषित किया है। दीर्घायु और आनन्दका जीवन व्यतीत करनेके लिये तो शाकाहार महत्वपूर्ण है ही, साथ ही उन बुद्धिहीन व्यक्तियोंको जो खाद्यकी समस्या हल करनेकी हामी मांसाहारसे भरते हैं उन्हें उत्पादन तथा खाद्य समस्याकी पूर्णताके लिये शाकाहारी बनने तथा उसका प्रचार करनेके लिये कहा है।

"मांस और मछलीसे अन्न संकटकी दशा दूर नहीं हो सकती थी। फिर भी मांस खानेको प्रोत्साहन देना जानबूझकर अपने पैरमें कुल्हाड़ी मारना है। आवश्यकता तो जगह२ पर शाकाहारी क्लब और होटल खुलवानेकी है।" सरकार द्वारा मत्स्य व्यापारको प्रोत्साहन देनेकी स्थितिसे बाबूजी बड़े दुःखी थे। उनको हार्दिक पीड़ा इन शब्दोंसे प्रकट होती है—"खेद है कि भारत सरकार उल्टे मांस बटेरोंको लाद रही है। उसने मत्स्य व्यापारादिको प्रोत्साहन ही नहीं दिया है बल्कि मांस खानेका प्रचार भी कर रही है जो घातक है। वस्तुतः खाद्य समस्याका हल खेतकी उपज बढ़ानेसे ही होगा।"

दिवा भोजन

दिवा भोजन ट्रेक्टके रूपमें लिखी गई २४ पृष्ठीय छोटीसी पुस्तक है जिसके अबतक कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। दिवा भोजनका संस्कृति एवं स्वास्थ्यके लिये क्या महत्व है इसका पूरा वर्णन शिक्षाप्रद और उपदेशात्मक ढंगसे किया गया है। विद्वान लेखकने कुसुम और मनोजको पात्र बनाकर बड़े नाटकीय ढंगसे सर्वसाधारणकी उपयोगिताको ध्यानमें रखकर लिखी है। प्रायः मनमें जो शंकाएं दिवा भोजनके सम्बन्धमें लोगोंमें उठा करती हैं वह मनोजके मुंहसे कहलवायी गई हैं और उनका समाधान कुसुमसे कराया गया है।

यजुर्वेद आह्निक, वसुनन्दि श्रावकाचार, सुभाषित रत्न सन्दोह, चंद्रप्रभपुराण, 'पुरुषार्थ सिद्धयुपाय', योगवाशिष्ठ, महाभारत (शान्तिपर्व), मार्कण्डेय पुराण, पद्मपुराण, मनुस्मृति, आयुर्वेद शास्त्र, चरकके आयुर्वेद सूत्र जैसे अनेक उपयोगी और प्रचलित ग्रन्थोंके आधार यह सिद्ध किया है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपना भोजन शामको, सूर्यास्तसे पूर्व ही कर लेना चाहिए।

आध्यात्मवादियोंके लिए जहां एक ओर भगवान मह॰

और स्वामी शिवानंद सरस्वतीका विचार दिया है वहां भौतिकवादके संगीत अलापनेवालोंको आल्ट्रावायलेट किरणोंसे संबंधित वैज्ञानिक तथ्य उपस्थित किये हैं। अन्तमें धर्मकी व्यवहारिकता पर लिखा है—"जैन धर्म महान व्यावहारिक धर्म है वह ठीक कहता है कि जीवनरूपी कारको ठीकसे चलानेके लिये व्रत और नियमका ब्रेक जरूर लगाओ। ब्रेकके बिना जीवन संकटमें पड़ सकता है।"

जैन धर्म: उसकी विलक्षणता और विश्वको देन

यह २० पृष्ठीय छोटीसी पुस्तक है। इसमें बुद्धिजीवी व्यक्तियोंके लिए ऐसी सामग्री प्रस्तुत की गई है जो तर्ककी कसौटीपर खरी उतर सके। आज दैनिक जीवनसे लेकर राष्ट्रीय जीवन तकमें ऐसी ही अनेक समस्याएं विद्यमान हैं जिनका निराकरण जैन धर्मके माध्यमसे हो सकता है। इसमें जैनधर्मकी झांकी प्रस्तुत की गई है। मानवको पुरुषार्थी बनने, अपने आपको पहिचानने, इन्द्रियवासनाकी आसक्तिको त्यागने, अपना ही मनन करने, ईश्वर बननेके लिए अज्ञान और अश्रद्धाके परदेसे बाहर निकलने, विवेकसे काम लेकर सत्यको पहिचानने और सबसे प्रेम करनेकी अनूठी शिक्षाएं इस पुस्तकमें भरी पड़ी हैं। दुःखका कारण और उससे छुटकारा मिलनेके उपाय, अणुवाद, अपरिग्रहवाद तथा अनेकांतवाद जैसे प्रमुख सिद्धांतोंको स्पष्ट रूपमें समझाया है।

जैनधर्मके प्रमुख आधार स्तम्भ अहिंसाको बलवानोंका शृङ्गार और शक्ति बताते हुये अपने समान सबको समझने, अंडा और मांसके प्रति घृणाकी दृष्टि रखते हुए शाकाहारी बने रहनेकी बात सुझाई गई है। इसकी विलक्षणताके संबंधमें बाबूजीने लिखा भी है—"जैनधर्मके सिद्धांत विलक्षण होते हुए भी तर्क सिद्ध तथा बुद्धि ग्राह्य हैं। सर्वोपरि उनका ठीकसे पालन करके मानव

अपना तथा लोकका हित साध सकता है। वह संकीर्ण समुदाय-वाद अथवा राष्ट्रवादसे ऊपर उठकर लोक कल्याणवादी बन सकता है तथा हिंसकसे अहिंसक हो सकता है।"

× × ×

नव रत्न

बाबूजी द्वारा रचित इस पुस्तकमें अरिष्टनेमि, चंद्रगुप्त, खारवेल, चामुण्डराय, मारसिंह, गंगराज, हुल्ल, सावियब्बे और सती रानीकी नौ ऐतिहासिक कहानियां हैं। ये जैनधर्मके ही नव रत्न नहीं हैं वरन् विश्वके विभिन्न रत्नोंमेंसे प्रसिद्ध हैं। अहिंसामें आस्था रखनेवाले जैन वीरोंकी वीरता, साहस, धैर्य, पराक्रम, राज्य संचालनकी कुशलता और युद्धमें बड़े गजबकी बहादुरी दिखानेवाली भुजाओंकी यशगाथा इन कहानियोंसे प्रकट होती है। मजबूरी और कायरताका कलंक लगानेवालोंके लिये बाबूजीकी यह पुस्तक खुली चुनौती है।

स्वामी कुन्दकुन्दाचार्यकी सूक्तियां

१४० पृष्ठीय इस पुस्तकका प्रकाशन सन् १९६२ में हुआ। प्रारम्भके ३५ पृष्ठोंमें स्वामीजीके जीवनके सम्बन्धमें बताया गया है। तीर्थंकरोंकी महत्ता भी बताई है। तीर्थंकरोंके बाद ज्ञानका प्रचार जिन जिन सन्त महात्माओं द्वारा हुआ उनका भी विवरण दिया हुआ है। श्रीधरसेनाचार्यने अन्तमें संघ सम्मेलन करके बचे अंगज्ञानको लिपिबद्ध करनेका प्रस्ताव रखा। क्यों श्रुतज्ञान धीरे धीरे लुप्त होने लगा है अतः आगे आनेवाली पीढ़ियोंको ज्ञानार्जनके लिये लिपिबद्ध करनेकी अत्यन्त आवश्यकता अनुभव की गई। उसी समय स्वामी कुन्दकुन्द महाराज अवतरित हुये।

पंचमकालमें स्वामीजी पूज्यनीय माने गये और आज भी दिगम्बर सम्प्रदाय ही नहीं वरन् पूर्ण जैन समाज उन पर गर्व करता है। विभिन्न पट्टावलियोंके द्वारा लेखकने उनके जन्म तथा अन्य जीवनसे सम्बद्धित घटनाओंको बताया है। स्वामीजीके चरित्र पर 'पुण्यास्रव तथा 'कुन्दकुन्दाचार्य चरित्र' के आधार पर बताया गया है। स्वामीजी पूर्वजन्मके संस्कारोंके प्रभावसे आचार्य, महाज्ञानी, और तपस्वी बनकर सामने आये। विभिन्न हस्त लिखित ग्रन्थों, शिलालेखों, जनश्रुतियों और गाथाओंके आधार पर स्वामीजीका व्यक्तित्व लिखा गया है। स्वामीजी द्वारा रचित अब तक जितने ग्रन्थ उपलब्ध हुवे हैं उन १४ ग्रन्थोंके नाम भी दिये हैं।

सूक्तियोंको प्रकाशित करनेका प्रमुख उद्देश्य बाबूजीने यह बताया है कि जैन परम्पराके जो महान प्रकाश स्तम्भ रहे हैं और जो महान योगिराज एवं सन्त होनेके साथ साथ सर्वज्ञतुल्य वाणीके अधिकारी रहे, उन परमपूज्य प्रातःस्मरणीय भगवान् कुन्दकुन्दाचार्य स्वामीकी अमूल्य श्रुत सूक्तियां उपस्थित करना, मानव मानवको सम्यग्ज्ञानके आलोकमें ले आना है। इस लिये उनके 'पाहुड़' एवं 'अनुपेक्खा' ग्रन्थोंसे सूक्तियोंका संग्रह किया जा रहा प्रस्तुत सूक्तियां रत्नत्रय धर्मको लक्ष्यकर संग्रह की गई हैं।"

इसमें संस्कृतकी सूक्तियोंको बाबूजीने अंग्रेजीमें अ[illegible] किया है ताकि स्वामीजीकी वाणीका लाभ केवल संस्कृत [illegible] वाले ही न उठाकर अंग्रेजी वाले भी ले सकें। पह[illegible] संस्कृतकी सूक्ति दी है, बादको हिन्दी पद्यमें श्री वीरेन्द्र [illegible] अनुवाद है और नीचे अंग्रेजीमें अनुवाद है। इसमें [illegible] सूक्तियोंका संकलन है। एक सूक्तिको उदाहरण स्वरूप [illegible] सामने रख रहे हैं—

णियसत्तिये महाजस भत्तीराएण णिचकालम्मि ।
तं कुण जिणभत्तिपरं विज्जावच्चं दसवियप्पं ॥

निज बल अनुसार महायश हे ।
रह भक्ति राग रत दिन प्रति दिन ॥
कर तू परम जिनेन्द्र भक्तिको—
दशविध वैयावृत्य सुमुनि जन ॥

Oh the great fortunate soul! imbibe (the spirit of) love and devotion aceording to your strnegth, Absorb your self in the devotion of Jinas (spiritual conquerors) and perform ten kinds of selfless service (callas) vaiyavratya

(सूक्ति नं० १०१)

समाधि–शतक

यह ८२ पृष्ठीय पुस्तक "समाधि शतक" आचार्य श्री पूज्यपाद (देवनन्दि) स्वामी कृत है। इसका अंग्रेजी अनुवाद वाङ्मय प्रदीप श्री रावजी नेमचन्द शाह सोलापुर निवासीने किया है। तथा हिन्दीमें अनुवाद बाबू कामताप्रसादजी जैनने किया है। इस पुस्तकमें मानवको परमात्माकी ओर जानेके लिए प्रेरित किया गया है।

योगी अपने मन, मस्तिष्क, आत्मा और हृदयको इतना विकसित कर लेता है कि उसे बाह्य साधनोंकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती। वह तो दूर बैठे बैठे भी बड़ेसे बड़ा ज्ञानार्जन कर सकता है।

अणुशक्तिके आविष्कार पर विश्वास करनेवाले व्यक्तियोंके लिए आध्यात्मिक सत्यकी पहचान करानेके लिए इस पुस्तकका बड़ा ही महत्व है। बाबूजीके शब्दोंमें इस पुस्तकका महत्व इस

प्रकार है—"योगिराज पूज्यपाद देवनंदिजीकी आत्मानुभूति इसके पद पदमें छलछला रही है। इस अमृतका रसपान करके मानव अमरत्वका अनुभव लक्ष्य करता है। श्लोकोंका पद्यानुवाद करते हमें जो आत्माह्लाद हुआ वचनातीत है।

सच पूछिए तो 'समाधिशतक'का मूल्य शब्दोंके द्वारा आंका ही नहीं जा सकता है। क्षितिजसे भी महान और विशाल अनंत और अद्वितीय गुणशील आत्माका वर्णन जो करता है वह तो अनुभवमें ही लानेकी चीज है। गुड़ और मिश्रीके स्वादको रसना द्वारा जब नहीं कहा जा सकता तो अतीन्द्रिय आत्माके स्वरूपका बखान कैसे, यह चर्म लपेटो जीभ कर सकती है?"

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके विख्यात प्रो० डा० बी० एल० आत्रेयने इस ग्रन्थको अपूर्व तथा स्वामीजी द्वारा बताये गये आत्मसिद्धिसे सम्बन्धित उपायोंका व्यवहारिक बताते हुये कहा है—

"Shri Katmaprasad jain has made the work more useful to the modern reader by adding a Hindi metrical translation of it, which is indeed very beautifully done—"

श्री कामताप्रसाद जैनने हिन्दीमें पद्यानुवाद करनेवालोंके लिये अधिक सरल बता दिया है जो सचमुच ही बड़ा सुन्दर है।

इस पुस्तकमें बाबूजीने श्री रावजी शाह तथा श्री पूज्यपादाचार्यजीकी जीवनी पर भी संक्षिप्तमें प्रकाश डाला है। इसमें १०५ संस्कृतमें श्लोक हैं। ८८ नम्बरका पद आपके सामने रख रहे हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि मदमें अन्धे होनेवाले व्यक्ति जन्म जन्मान्तर तक दुःख ही भोगते रहते हैं।

जातिर्देहाश्रिता दृष्टा देहएवात्मनो भवः।

न मच्यन्ते भवान्तरमाते ये जातिकृताग्रहाः ॥

ब्राह्मण आदि जाति मदमाते, हैं देहाश्रित वे मति हीन।
ये मद केवल भवके कारण, करें आत्म संसृति लीन॥
हो नहिं पाते मुक्त कभी वे, जो रहें सदा मदमें लवलीन।
जाति बडप्पनके आग्रहसे जन्म मरण करते नित्य नवीन॥

तीर्थङ्कर महावीर

यह ३४ पृष्ठकी अंग्रेजीमें लिखी पुस्तक है, जून ६१ में इसका प्रकाशन हुआ। इसे दो विद्वानोंने मिलकर लिखा है, एक तो बाबूजी स्वयं ही हैं और दूसरे श्री जय भगवान जैन हैं। इसके आधे भागमें भगवान महावीरका परिचय है तथा शेष भागमें मानवताके लिए उनके जो जो संदेश हैं वह बताये गये हैं। इसके सम्बन्धमें विचारक श्री वुललेन्ड काहलर (The Marquis of st. Innocent and the Preident of the international vegetarian union) ने लिखा है—

"This brochure about Lord Mahavira, The last of the Tirthankars, has been written with such admirable clearness and simplicity, it needs no prefaee......May this brochure find its way into other countries where Mahavira's name is yet to be known.

('तीर्थंकर महावीर' नामक पुस्तक, जोकि अन्तिम तीर्थंकरके विषयमें लिखी गई, वह ऐसी प्रशंसनीय स्पष्टता एवं सरलतासे लिखी गई है कि इसके लिए किसी भूमिकाकी आवश्यकता नहीं। मैं कामना करता हूं कि यह पुस्तक अन्य देशोंमें भी

मेरी भावना

इस छोटीसी पुस्तकमें २२ हिन्दीके पद हैं जो पं० जुगल-किशोरजी द्वारा रचित है। इन हिन्दी पदोंका अनुवाद अंग्रेजीमें बाबूजीने सन् १९४९ में किया था। हिन्दीके पदोंको लाखों व्यक्तियोंने पसन्द किया। इसलिये यह आवश्यकता अनुभव हुई कि इसे अंग्रेजीमें लिखकर और अधिक प्रसारित किया जावे। श्री अजितप्रसादजी सम्पादक जैन गजटने अंग्रेजीमें अनुवादकी प्रेरणा दी और बाबूजी द्वारा बादको पूर्ण हुई। इसमें व्यक्तिकी ईश्वरके प्रति आदर्श प्रार्थना है जो एक भक्त सच्चे हृदयसे नित्य सुबह शाम कर सकता है। सत्संग, सन्तोष, शान्त स्वभाव, सत्य व्यवहार, जीवोंपर दया, न्यायमार्ग और सहनशीलताकी प्रार्थनाकी भावना इन पदोंमें है। मधुर वाणीके लिये मेरी भावनाके स्वर देखिये :—

फैले प्रेम-परस्पर जगमें, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय-कटुक कठोर शब्द नहिं, कोई मुखसे कहा करे॥

May Universal love pervade the world and may ignorance of attachment remain far away, May no body speak unkind, bitten and harsh word!

[अहिंसा-संसारकी समस्याओंका सही निदान]

Ahimsa

Right Solution of World Problems

सन् १९५०में ४० पृष्ठकी अंग्रेजीमें यह पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें सांसारिक समस्त समस्याओंका समाधान अहिंसा द्वारा सुलझानेके उपायों पर ही प्रकाश डाला गया है। अहिंसाके द्वारा खाद्य, युद्ध समस्याका निराकरण कैसे हो? आदर्श समाजमें अहिंसाका महत्व विश्वशांतिके लिये अहिंसाका योगदान और भयभीत लोगोंमें अहिंसा द्वारा सान्त्वना जैसी अनेक व्यक्तिगत और राष्ट्रीय समस्याओंके विषयमें बताया गया है। विश्व भारती चीन भवन शांति निकेतनके संचालक श्री तान यून शान (Tan yun shan)ने इस पुस्तकके बारेमें लिखा है—

" Shri Kamtaprasad Jain " fonnder-convener of The World Jain Mission, needs no introduction to the Indian pablic. He is a devoted follower of Lord Mahavira and a staunch votary of the cult of Ahimsa......In this paper—"Ahimsa : Right solution of World Problems" —Shri Jain has diseussed the subject in all its vartous aspects and told us how the gospel of Ahimsa could be applied in every phase of human life."

[श्री कामताप्रसाद जैनसे पाठक अखिल विश्वजैन मिशनका भारतीयोंके लिये परिचय देनेकी आवश्यकता नहीं। वे महावीर स्वामीके सच्चे अनुगामी और अहिंसाके विश्वासपात्र भक्त थे। इस पत्र "अहिंसा–संसारकी समस्याओंका सही निदान"में श्री जैनने

★

Life Story of Shri Parshvanatha

श्री ज्योतिषमार्तण्ड मुनि हर्षविमलजीकी पुस्तक 'श्री पार्श्वनाथका जीवनचरित्र'का अंग्रेजी अनुवाद इस ४६ पृष्ठीय पुस्तकमें है। मुनि हर्षविमलजी यह चाहते थे कि इसका अंग्रेजी अनुवाद हो और सभी लोग लाभ उठा सकें। बाबूजीने लिखा भी है—

As such the life story of Lord Parshva is a fine piece of narrative literature which inparts a right lesson to erring humanity and so we hope that a perusal of the present brochure will prove instrcetive and beneficial to the reader."

[इस प्रकार पार्श्वनाथकी जीवन गाथा वर्णनात्मक साहित्यका महत्त्वपूर्ण अंश है। जो कि भयभीत मानवताको सच्चा मार्ग प्रदान करती है। इस लिये हम आशा करते हैं कि उक्त पुस्तकका निरीक्षणात्मक अध्ययन पाठकोंके लिये शिक्षाप्रद एवं लाभदायक सिद्ध होगा]

★

Mahavir and Buddha
(महावीर और बुद्ध)

यह २८ पृष्ठीय अंग्रेजीमें लिखी पुस्तक भगवान महावीर और बुद्धका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करती है। दोनों महापुरुषोंका प्रारम्भिक जीवन, वैराग्यकी प्रवृत्ति, भगवान महावीरके जीवनका विशेष परिवर्तन, धर्म चक्रका महत्त्व, राजा बिम्बसार,

भगवान महावीरके उपदेश, भगवान बुद्ध द्वारा मध्यमार्गका प्रचलन। दोनों धर्मके तुलनात्मक सिद्धान्त, दोनों धर्मोंके द्वारा जनसेवा कार्य आदि बातों पर प्रकाश डाला है। और यह भी स्पष्ट किया है कि जैनधर्म भी बौद्धधर्मकी तरह एक विश्वधर्म है। दोनों महापुरुषोंने समाजको जिन नियमों और शिक्षाओं पर चलनेके लिये आदेश दिया है उन्हें भी तुलना करके बताया है। इस पुस्तककी Dr. Miss Eharlotte Krause Ph. D. (Geipsig) ने भूरि२ प्रशंसा की है।

LORD MAHAVIRA

The greet Saviour of the world.

यह ३४ पृष्ठीय पुस्तक अंग्रेजीमें लिखी हुई है। जो महावीर जयन्ती १९६३ को प्रकाशित हुई। इसमें भगवान महावीरका प्रारम्भिक जीवन, त्याग और तपस्याकी कहानी, उनके उपदेश, अन्य तीर्थंकर, महावीरका निर्माण और भारतीय संस्कृतिको जैन धर्मकी देन जैसे उपयोगी अंगोंको लेकर पुस्तकको सुन्दर बनाया गया है। अनेकांत और अपरिग्रहका महत्व भी बताया है। जैनधर्मकी प्रमुख विलक्षणताएं और सत्मार्ग पर चलनेकी प्रेरणा की है। अपने शत्रुओं पर विजय कैसे प्राप्त की जावे? महावीर जयन्तीका क्या महत्व है? उसे कैसे मनाया जावे? और महावीर जयन्ती पर हम क्या सीखें ऐसे अनेक प्रश्न व शंकाओंका समाधान भी किया है। प्रत्येक देशमें शांति स्थापनाकी समस्याका हल प.बूजीने इस प्रकार बताया है—

"May His Sacred memory inspire in us the spirit of Ahinsa, the vision of Anekanta and the humanitarian feeling of Apatigraha, so that we

may be succesful in establishing peace on earth peace in every country and peace every home."

[उनकी पवित्र स्मृति हममें अहिंसाकी भावना प्रेरित करे, अनेकान्त, अपरिग्रह तथा मानव धर्मको पालन करनेकी भावना पैदा करे, ताकि हम पृथ्वी पर प्रत्येक देशमें, तथा प्रत्येक घरमें शान्ति स्थापित कर सकें]

☆

(जैन धर्म और संस्कृति पर विचार)

Reflections on Jains Religion and Culture.

सन् १९५३ में पेरिसमें २२ वां स्थायी विश्वधर्म सम्मेलन हुआ जिसमें यह निबन्ध प्रस्तुत किया गया। इसमें धर्मकी व्याख्या सत्यका विज्ञान करके की है। विभिन्न धर्मोंके साथ जैनधर्मकी महत्ता, तथा प्रमुख ५ सिद्धांतोंकी व्याख्या भी की है। जैन सभ्यता और संस्कृतिका अहिंसासे सम्बन्ध स्पष्ट किया है। समस्त प्राणियोंको आह्वान करते हुये लिखा है—

Love all and serve all under the light of Truth and Ahimsa in our motto and we invite you all cordially to cooperate with us in its achievement.

(हमारा उद्देश्य सत्य और अहिंसाके प्रकाशसे सबको प्रेम करने तथा सबकी सेवा करनेका है तथा इस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए हम सबके सहयोगकी हृदयसे कामना करते हैं।)

☆

Vira Nirvana Day

वीर निर्वाण दिवस

यह १६ पृष्ठीय अंग्रेजी भाषामें लिखा गया ट्रेक्ट है जो सन् १९५०में प्रकाशित हुआ। २२ अक्टूबर सन् १९४९को भगवान

महावीरका निर्वाण दिवस इंग्लैण्डके जैन समाज द्वारा Caxton Hall. भवन लन्दनमें मनाया गया। प्रोफेसर वाई. जे. Padmarajiah उसके अध्यक्ष बनाये गये। मिस्टर जाल्फ्रेड मास्टर C. I. E. का व्याख्यान "भारतमें जैनियोंकी स्थिति" विषय पर हुआ था। वह भाषण भी लोगोंकी जानकारीके लिये इस ट्रक्टमें दिया गया है। बीच बीचमें बाबूजीने संक्षिप्त नोट देकर अपने विचार प्रकट किये हैं। जिससे पद ज्ञात होता है कि विदेशोंमें भी जैन धर्मकी आस्था कितनी है। और प्रचारकार्यमें कितनी रुचि लेते हैं।

आत्मसिद्धि

(Self–Realization)

४८ पृष्ठीय यह पुस्तक श्रीमद् राजचन्द्र द्वारा रचित है पर इसका संस्कृत रूपान्तर पं० बेचरदासजी, हिन्दी रूपान्तर श्री वीरेन्द्रप्रसादजी और अंग्रेजी रूपान्तर कविताके रूपमें ब्रह्मचारी श्री गोवरधनदासने किया है। जिसका परिचय प्रारम्भमें २७ पृष्ठोंमें अंग्रेजीमें सितम्बर सन् ५२ में बाबूजीने लिखा है। वैसे इसका प्रथम संस्कारण ५७ में निकाला था जिसमें लेखकका प्रमुख उद्देश्य, लेखककी जीवनी, प्रमुख शिक्षाएं, सादा जीवन और उच्च विचारकी भावना, महात्मा गांधी और कवि राजचन्द्रजीकी भेट तथा प्रेरणाप्रद प्रसंगोंका वर्णन किया है। जब महात्मा गान्धी दक्षिणी आफ्रिका गये वहां उन्हें अपना जीवन सुचारू रूपसे चलानेमें कठिनाई हुइ तो उन्होंने कवि राजचन्द्रको पत्र लिखकर अपनी शंकाएं समाधान करवाई। लगभग २७ प्रश्न पूज्य बापूने कविराजसे पत्र व्यवहार द्वारा पूछे थे। उन सब प्रश्नोंका उत्तर जो कविराजने बापूको दिया। उनके उत्तर भी

बापूजीने प्रकाशित किये हैं। वास्तवमें बापूने अपने प्रारम्भिक जीवनमें कविराजसे काफी प्रेरणा भी प्राप्त की थी।

आत्मा, कर्मका बन्धन, ईश्वर, मोक्ष, मोक्षकी सम्भावना, मृत्युके बाद जन्म लेनेकी स्थिति, आर्य धर्मोंकी व्याख्या, वेदोंकी महिमा, भगवद्गीता, ईसाई धर्म, बाईबिल और क्राइस्ट, पिछले और अगले जन्मकी बातें, सत्य, भाग्य, भक्ति, राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु और महेशका परिचय, अहिंसाकी सफलता आदि विषयों पर प्रश्न और उत्तर भी दिये हैं। साथ ही आत्मसिद्धि "शब्दकी व्याख्या करके भी विचारोंको स्पष्ट किया और आशा की है :—

"Though the book is small but it will certainly prove a guide and solace to many a forlorn wayfarer of the rough road of life."

[यद्यपि पुस्तक छोटी है फिर भी जीवनके ऊबड़ खाबड़ मार्गसे विचलित व्यक्तियोंके लिये निश्चित रूपसे मार्गदर्शक तथा सान्त्वनाकारी सिद्ध होगी।]

★

Bahubali

बाहुबली

And his wonderful colossal statue

और उसकी आश्चर्यजनक तथा विशालकाय मूर्ति।

सन् १९४९में ८ पृष्ठीय इस ट्रेक्टका अंग्रेजीमें प्रकाशन हुआ। इसमें प्राचीन संत श्री बाहुबली (जो भुजबली और कामदेवके नामसे भी विख्यात हैं)का जीवन चरित्र दिया है, साथ ही इनके भाई भरतका भी वर्णन है दोनोंके राज्य कार्यका हाल भी इसमें दिया है। साथ ही बाहुबलीकी विशालकाय और आश्चर्यमें

डालनेवाली ५७ फोट ऊंची मूर्तिका वर्णन भी मिलता है जो आज भी Sravanabelagola श्रवणबेलगोल (मैसूर) में स्थित है। इस ट्रेक्टके सम्बन्धमें Matthew Mekay (Brighton Sussex) ने लिखा है—

My Dincere wish is that all readers of this tract will investigate the truth contained in the Jaina Scriptures. By so doing they will find that which convlys all that is necessary for the purification of soul and progress of Mankind.

मेरी उत्कृट आकांक्षा यह है कि इस पुस्तिकाके पाठक पायेंगे कि इसमें जैन शास्त्रोंमें निहित सत्यका वर्णन है। ऐसा करनेसे वे पायेंगे कि इसमें आत्माकी पवित्रता और मानव जातिकी प्रगतिकी सभी आवश्यक बातें उपलब्ध हैं।

☆

[महावीर स्वामीके कथन]

The Sayings Lord Mahvira

यह १२ पृष्ठीय अंग्रेजीका ट्रेक्ट महावीर जयन्ती १९५४को प्रकाशित हुआ। भगवान महावीर "जैन धर्मके अन्तिम तीर्थंकर हुवे थे जिनका जीवन समाजके सुधारके लिये ही समाप्त हुआ। उनका जीवन एक आदर्श जीवन था। जिसके जैन धर्मको या भारतवर्षको ही नहीं वरन् विश्वके प्रत्येक नागरिकको बहुत कुछ सीखनेको मिल सकता है। प्रारंभके ८ पृष्ठोमें भगवान महावीरका जीवन चरित्र लिखा गया है। शान्ति और सत्यके इस पुजारीका जीवन ही न पढ़ा जावे वरन् उन्होने समाजके लिये जो भी कहा, अथवा बताया उसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े, समझे, विचारे और करे इसलिये बाबूजीने १२ पृष्ठोंमें भगवान महावीरके उपदेश संकलित कर लिखें हैं।

डॉ० रवीन्द्रनाथ टैगोर और डॉ० बी. सी. लाके जो विचार भगवानके सम्बन्धमें रहे उनका उल्लेख भी किया गया है। लगभग ५० सुभाषित इसमें संकलित है। बाबूजीने कहा है—

I hope that the readerr will appreciate my humble attemptand benefit by the healing and soothing words of the great teacher.

मैं आशा करता हूं कि पाठकगण मेरे नम्र प्रयासोंका मूल्यांकन करेंगे और महान उपदेशकके सान्त्वना प्रदायक शब्दोंसे लाभान्वित होंगे।

☆

Lord-Mahavira and Some other teachers of his time.

३८ पृष्ठीय इस अंग्रेजीकी पुस्तकका प्रकाशन सन् १९२७ में बाबूजीकी धर्मपत्नीकी स्मृतिमें हुआ। इसमें भगवान महावीरके जीवन और उनके उपदेशोंका तो वर्णन है ही, साथ ही साथ समकालीन अन्य ६ शिक्षक निम्न लिखित हैं—

(1) Gotam Bnddha
(2) Purana kassapa
(3) Makkhli-Gosala
(4) Ajita Kesa Kambali
(5) Pakuda Katyayana
(6) Sanjava Vairathiputra

जैनधर्म और बौद्ध धर्मके प्रमुख सिद्धांतोंमें कहांतक समानता और कहांतक अन्तर है? उसे भी स्पष्ट किया गया है। इलाहाबाद विश्वविद्यालयके प्रोफेसर डॉ० बेनीप्रसाद एम. ए. पी. एच. डी. ने प्रस्तावनामें लिखा है—

In this brief dissertation Mr. Kamtaprasad Jain M. R. A. S. has attempted to give a lucid account of Mahavira, the twenty-fouth jains Tirthankara and other teachers who revolted against the dominont Brahmanie system and chalked out or re-fashioned other lines of thought and conduct."

(डॉ० कामताप्रसाद जैन एम. आर. ए. एस. ने चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीरके बारेमें तथ्यपूर्ण वर्णन किया है और समकालीन अन्य प्रबल शिक्षकोंका भी वर्णन किया है जिन्होंने ब्राह्मणवादके विरोध नूतन विचार एवं व्यवहारोंको जन्म दिया।)

☆

Some Historical Jaina Kings and Heroes

(कुछ ऐतिहासिक जैन रागी और वीर)

१०८ पृष्ठवाली इस पुस्तकका प्रकाशन १९५१में हुआ था। विभिन्न जैन राजाओं, वीरों और सेनापतियोंका वर्णन इस पुस्तकमें हैं। जो लोग अहिंसाका गलत अर्थ निकालते हैं तथा जैन धर्मके सिद्धान्तोंको बिना समझे बूझे आलोचनाका विषय बना देते हैं उन्हें इस पुस्तकके अध्ययनसे अपनी शंकाको समाधान करनेमें काफी सुविधा मिलती है। जैन धर्मका अहिंसाका सिद्धांत यह नहीं बताता कि युद्धभूमिमें शत्रुओंको पीठ दिखाकर घर वापिस चले आओ। अहिंसा सैद्धांतिक ही नहीं वरन् व्यवहारिक रूप भी हमें जैन वीर और राजाओंमें देखनेको मिलता है।

महावीर वर्धमान, श्रेणिक बिंबसार, चन्द्रगुप्त मौर्य, राजा बीजल, राजपूत राजाओं, विभिन्न सेनापतियों, रानी चेलना और भैरवदेवी आदिकी गौरव-गाथाओंसे यह पुस्तक भरी पड़ी हैं। जिनके जीवनकी शिक्षा हमें वीर और बहादुरीकी ओर

प्रेरित करती है। Miss Elisabeth Praser ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं—

"The object of the book has been achilved and it is open to all to see that once Jainism was a real force and power in India."

[पुस्तकका उद्देश्य प्राप्त हो चुका है और यह सभी लोगोंके देखनेके लिए खुला है कि एक समय जैनधर्मकी प्रबल शक्ति और प्रवाह भारतमें मौजूद थे]

☆

The Religion of Tirthankaras.

यह अंग्रेजी भाषाका ५१४ पृष्ठका विशाल ग्रन्थ १९६४ में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थके आधार पर समूचे जैनधर्मका मूल्यांकन किया जा सकता है। जीवनका आदर्श, धर्मोंकी व्याख्या, धर्म जीवनका आधार स्तम्भ, जैन सिद्धांत, जैनधर्मकी स्वतंत्रता, जैन और बुद्ध धर्मोंकी तुलना, व्यक्तिकी महानता, समयका चक्र, अहिंसा संस्कृति और धर्मसूत्रिका प्रारम्भ, तीर्थंकरका अर्थ, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव, भरत और बाहुबलि, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, भगवान महावीर वर्द्धमान, भगवान महावीरके बाद जैन धर्मकी स्थिति, शिशुनाग और जैन धर्म, मौर्य, कलिंग व अन्य राजा, मध्यप्रदेश, आन्ध्र और मालवामें जैन धर्मकी स्थिति, दक्षिण भारतमें जैनधर्म, धर्मका विज्ञान–जैनधर्म, अनेकांत सिद्धान्त, शरीर और आत्माका सम्बन्ध, मनुष्य और ईश्वर, प्रकृतिके सार्वभौतिक सिद्धान्त, कर्म सिद्धान्त, जैन संस्कृतिका विश्लेपण, राष्ट्रीय कल्याण और आंतरोष्ट्रिय शांतिकी स्थापना, प्रतिक्रमण, जैनधर्ममें मोक्षका महत्त्व, जैनके मुख्य विभिन्न तीर्थस्थान, विभिन्न पर्व और और जैनधर्मका प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, तामिल, कन्नड़,

अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओंमें साहित्य, जैन कलाकी व्याख्या, जैनधर्मका सामाजिक और राजनैतिक दृष्टिकोणसे कल्याण हेतु मूल्यांकन, गुप्तकालमें जैन धर्म, गुप्तकालीन पुरातत्व पृथ्वीराज और अन्य राजपूतोंके शासनकालमें जैनधर्मका प्रचार, गुजरात, सौराष्ट्र, काठियावाड़ और दक्षिणी भारतमें जैन धर्म और मुस्लिम व अंग्रेजी शासनकालमें धर्मका महत्व जैसे अनेक आवश्यक विषयोंपर सरलता तथा उपदेशात्मक शैलीमें विस्तृत प्रकाश डाला है। सैकड़ों ग्रन्थोंके अध्ययन व शोधोपरांत लिखा गया यह विशाल ग्रन्थ अधिक महत्वपूर्ण है। इसे बाबूजीके जीवनकी अन्तिम सबसे बड़ी कृति कहा जा सकता है।

(Chapter V)

(Extract from B. C. law's Buddhistic Studics)

☆

Mahavira & Buddha

यह ६६ पृष्ठीय सन् १९३१में प्रकाशित अंग्रेजीकी पुस्तक है। जिसमें भगवान महावीर और बुद्धका विस्तृत विवेचन है। दोनोंकी समकालीनता, दोनोंके जीवनका तुलनात्मक वर्णन, विभिन्न शिक्षाएं और विभिन्न घटनाओंका उल्लेख किया गया है।

☆

श्री दशलाक्षणिक धर्म जयमाला

१६ वीं शताब्दीके अपभ्रंश साहित्यके महाकवि श्री रयधूकी प्रसिद्ध कृति 'दशलाक्षणिक धर्म जयमाला' का प्रकाशन तो वैसे बहुत पहले हो चुका था, पर बाबूजीकी यह इच्छा थी कि इसका हिन्दी पद्यानुवाद तथा अंग्रेजीमें अनुवाद हो तो यह कृति अधिक लोकप्रिय हो सकती है। अस्वस्थताके दिनोंमें बाबूजी द्वारा इसका अंग्रेजी अनुवाद चल रहा था, थोड़ा अंश शेष रह

गया था जिसकी पूर्ति उनके पुत्र वीरेन्द्रप्रसाद जैनने की। जो इच्छा बाबूजीकी थी वह तो पूर्ण हुई पर बाबूजी स्वयं अपनी इच्छाको साकार होते देख न सके, यह एक दुःखका विषय है। क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन और ब्रह्मचर्य जैसे धर्मके दशलक्षणोंका वर्णन सभी हिन्दी अंग्रेजी पढ़ेलिखे व्यक्तियोंके लिये बहुत ही महत्वपूर्ण है।

इस पुस्तकमें जो अगस्त ६४ में प्रकाशित हुई, कवि श्री रइधूके अपभ्रंश भाषाके पद हैं जिनका हिन्दी पद्यानुवाद श्रीमती सरोजनीदेवी जैनने किया है तो अंग्रेजीमें अनुवाद बाबूजीने किया है।

*

प्रतिमा लेखसंग्रह

वि० सं० १९९४में सम्पादित की हुई ४० पृष्ठकी पुस्तक है। इसमें मैनपुरी उ० प्र० के दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा, कटरा, लोहिया अग्रवाल, भगतजी, के मन्दिरोंमें जो मूर्तियां हैं, उन सभी मूर्तियां, जिनमें लिंग और चिह्न प्रकट नहीं होते, का वर्णन किया है। मूर्तियोंका रंग, विभिन्न चिह्न, आकार, ऊंचाई, स्थापना समय, और पाषाणकी किस्म आदि के बारेमें विस्तार में लिखा गया है। ताम्रपत्रोंकी प्रशस्तियों, लिंग, चिह्न सहित प्रतिमायें, यंत्रोंकी प्रशस्तियों, यंत्रके लेखसंग्रहों, कुटुम्ब श्रावक-श्राविकाओं, पंडित, राजा-महाराजाओं, नगरों [अडली, अटेर, अजमेर, आरा, इष्टिकापथ, ऐंखरो, कम्पिलाग्राम, जोधपुर, बनारस, विलसी, महिदपुर, मैनपुरी आदि २२ नगरों], और जातियों [अग्रोत कर्केस, खंडेलवाल, गोलानार, गोलसिंगारा, जैसवाल, धाकौ, पोरवाड, बुते जाति, भाहिमवंश, राइत, और श्रीमाल आदि १८ जातियोंका वर्णन भी किया गया है।

*

कृपण जगावन चरित्र

यह ६० पृष्ठीय पुस्तक बाबूजी द्वारा सम्पादित है जो सन् १९४८ में उनके पिताजीकी पुण्य स्मृतिमें प्रकाशित हुई। ऐसे तो यह पुरानी हस्तलिखित पुस्तक थी पर उसकी ऐतिहासिक भूमिका तथा टिप्पणी लिखनेका श्रेय बाबूजीको ही है। बाबूजी सदैव यह चाहते थे कि पुराने जितने भी ग्रन्थ पुस्तकालयोंकी शोभा बढ़ा रहे हैं उन्हें यदि समाजके समक्ष प्रकाशित कर रखा जा सके, तो संसारका बहुत बड़ा हित होगा और साथ ही महानात्माओंके ऋणसे थोड़े बहुत उऋण भी हो सकेंगे।

यह रचना मौलिकरूपसे कविवर ब्रह्मगुलालजी द्वारा लिखित है इसमें धार्मिकता और नैतिकताका शिक्षण है। लोभवृत्तिकी भयंकर हानियां तथा दानके सद्परिणामोंको बताया है। इस पुस्तककी एक प्रति दिल्लीमें तथा दूसरी अलीगंज मिली दोनोंका तुलनात्मक अध्ययन कर मूल पाठ तैयार किया है। दोनोंमें जहां अन्तर प्राप्त हुआ वह फुटनोट देकर पाठकोंके समक्ष स्थिति स्पष्ट कर दी है। मूल पाठको समझनेमें सुविधा हो इस दृष्टिसे प्रारम्भमें राजगृह नगरमें वसुपति राजाके राज्यमें रहनेवाले एक सेठकी कहानी संक्षिप्तमें लिख दी है।

उस समय सामाजिक और धार्मिक स्थिति कैसी थी? इसका स्पष्ट चित्रण हमें मिलता है। साथ ही कवि ब्रह्मगुलालका जीवन परिचय तथा साहित्यिक कृतियोंके सम्बन्धमें भी उल्लेख किया गया है। साथ ही अपने पिताजीका भी संक्षिप्त जीवन पढ़नेको मिल जाता है। 'कृपण जगावन चरित्र' कविने श्लोक, दोहे और भाषा और चौपाईयोंमें रची है। इसकी भाषा पुरानी हिन्दी अथवा ब्रज भाषा है। कवि अलीगढ़ (उ० प्र०) जिलेके रहनेवाले थे इसलिये आसपासकी भाषाका प्रभाव भी उनकी रचना पर पड़ा है।

★

श्री महावीर स्मृति ग्रन्थ

बाबूजीके सम्पादनमें "श्री महावीर स्मृति ग्रंथ" सन् १९४९ में प्रकाशित हुआ जिसमें ३३६ पृष्ठ हैं। इस ग्रंथके लिये देश-विदेशके कितने ही विद्वानोंने लेख एकत्रित कर प्रकाशित किये गये हैं। वैसे तो डॉ० विमलाचरण लाहा, प्रो० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, श्री रावजी नेमचन्द्र शाह भी सम्पादन मण्डलमें रहे हैं पर बाबूजीने विशेष उदारता दिखाई है। श्री मैथ्यू-मैकके साहब ब्राइटन इंग्लैण्ड, डॉ० विलियम हेनरी टॉलबोट, फेयर हाम, इंग्लैण्ड, और श्री हर्बर्ट वॉरन साहब विदेशी विचारकों तथा श्री हरिसत्य भट्टाचार्य एम. ए. पी. एच. डी. हावड़ा, राहुल सांकृत्यायन प्रयाग, डॉ० राजबलि पांडेय काशी, पी. के. गोडे पूना, प्रो० बलदेव उपाध्याय, श्री चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० बनारसीदास आदि भारतीय गण्य-मान्य विद्वानोंके खोज तथा प्रभावपूर्ण लेख हैं। कुल मिलाकर ७१ लेख व कविताएं हैं।

डॉ० कामताप्रसाद जैनका "ऋषभदेव और महावीर शीर्षक लेख तुलनात्मक अध्ययनके लिये आवश्यक है। दोनों तीर्थंकरों विचारोंमें समता और भिन्नता प्रकट की है। अन्तमें लिखा है-"ऋषभदेव आर्य सभ्यता और अहिंसा संस्कृतिके प्रतिष्ठापक और जैन धर्मके संस्थापक हुये तो महावीर अहिंसा संस्कृतिके शोध उन्नायक और जैन धर्मके पुनरोद्धारक हुये।

दूसरा लेख 'महावीर और बुद्ध' शीर्षक है। इसमें तीर्थंकर व तथागत शब्दोंकी व्याख्या की गई है। इस लेखमें बुद्ध और महावीरकी जीवनगाथाओंको लेकर तर्क पूर्ण विचारोंसे भगवान महावीरको उच्च स्थान प्रदान किया है। विभिन्न ग्रन्थों तथा अनेक विदेशी विचारकोंके विचारोंको भी काममें लिया है।

एक स्थल पर बाबूजीने लिखा है "बुद्ध स्वयं और अपने अनुयायियोंको प्राणी हत्यासे दूर रहनेके लिये जैनोंके समान ही सुविधान रखते थे, किन्तु जब कोई गृहस्थ उनको वह मांस देता था जो उनके उद्देश्यसे नहीं मारे गये पशुकी हत्यासे प्राप्त हुआ है, तो वह ले लेते थे......जैन धर्ममें ऐसा कोई संदिग्ध स्थल नहीं है। उनमें मांस भोजनका सर्वथा निषेध है।"

दूसरे स्थल पर भी भगवान महावीरकी शिक्षा लौकिक और पारलौकिक जीवनको सुधारनेवाली बताई है—"बुद्धदेवने लोक और परलोककी ओर ध्यान नहीं दिया। उन्होनें संसारके दुखों और उनसे मुक्त होनेके लिये इस जीवनको संयमित बनाने पर जोर दिया। यह जीवन सुधार लिया तो भविष्य भी सुधर जायेगा।... महावीरने जीवन विज्ञानका निरूपण किया—मानवको इस जीवन और भावी जीवनका वैज्ञानिक बोध उन्होने कराया। इससे मानवके मन और बुद्धि दोनोंको संतोष हुआ और वह इस जीवनके साथ ही भावी जीवनको भी सफल बनानेमें समर्थ हुआ।"

इसी स्मृति ग्रंथमें एक अन्य लेख बाबूजीका "भगवान महावीर और महात्मा गांधी" है। इसके पढ़नेसे यह मालूम पड़ता था कि महात्मा गांधीका जीवन जैन धर्म और महावीरकी शिक्षाओंसे पूरी तरह प्रभावित था। क्योंकि बापू जानते थे कि अहिंसाके सिद्धांतको विश्वमें सबसे अधिक विकसित करनेवाले महावीर ही थे। और इसी अहिंसाके गांधीजी पुजारी थे। विलायत जाते समय गांधीजीकी माताने जिन तीन प्रतिज्ञाओंको करवाया था, वे एक बेचरजी जैन साधुके परामर्शसे ही हुई थीं। बापूके जीवनमें श्रीमद् राजचन्द्रभाईके साहित्यने—वाणीने तथा पत्रोंने बड़ी सान्त्वना दी। भगवान महावीरकी शिक्षाका पूरा परिचय उन्हें श्री राजचन्द्रसे ही हुआ। जिस प्रकार भगवान महावीरने अहिंसाको सबसे बड़ा धर्म माना और अपने जीवन तथा

समाजमें प्रतिष्ठापित किया ठीक वैसे ही महात्मा गांधी अहिंसा व्रत पर जीवनके अंत तक डटे रहे।

एक अन्य लेख अंग्रेजीका है जिसका शीर्षक है—"The Significance of the Name Mahavir."

इसमें बाबूजीने यह बताया है कि अंतिम तीर्थंकरका नाम वैसे तो वर्द्धमान था पर महावीरके नामसे वे क्यों विख्यात हुए? इसका कारण यही मालूम पड़ता है कि वे वीर थे, वीर ही नहीं वरन् महावीर थे। उनमें वीरता थी, वीरत्वकी भावना थी, इसलिये महावीर नामसे विख्यात हुए। संगमदेवने परीक्षाके बाद उन्हें 'महावीर' कहा। रुद्रने तो उनको अतिवीर महावीर कहा था। इस प्रकार इस लेखमें भगवान महावीरके नामकी वितृत व्याख्या की गई है।

★

मंगल प्रभात

सन् १९५२ में जब डो० कामताप्रसाद जैनके सुपुत्र श्री वीरेन्द्र जैनका शुभ विवाह संस्कार हुआ तभी ६० पृष्ठीय इस काव्यका सम्पादन स्वयं बाबूजीने किया था। यह विशुद्ध काव्य ही नहीं है, वरन् देश विदेशके विद्वानोंकी सम्मतियां आशीर्वाद तथा वैवाहिक जीवनसे सम्बन्धित विचार हैं।

श्री सुधेश, श्री शशि, श्री गुञ्जन, सुरेन्द्र प्रचंडिया, तन्मय बुखारिया, वीरेन्द्रप्रसाद जैन, हरिऔध, आदि कितने ही कवियोंकी सुन्दर कविताएं हैं। हरिऔधकी कविता 'किसीका दिल काहे छीले' तन्मय बुखारियाकी 'चाहता जीवन किसीके प्यारकी पहिचान', गुञ्जनकी 'जहां पूजा जाता नारीत्व वहीं पर अमरोंका घर है' और सुधेशकी 'प्यार पानेकी पिपासासे किसीको प्यार मत दो' आदि कविताएं बड़ी मर्मस्पर्शी हैं।

महात्मा भगवानदीन, श्री जैनेन्द्रकुमार, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, गुरुदयालजी मल्लिक, श्री रिषभदासजी रांका आदि भारतीय विद्वानों तथा सन्त योनोसुके ताकानोजी (जापान), डा० रिचर्ड डेली (लन्दन), श्री तानयून शान (चीन), प्रो० टुश्शी (इटली) और डा० विलियम हेनरी (इंग्लैण्ड) आदि विदेशी विद्वानोंके गृहस्थ धर्म, तथा वैवाहिक जीवनसे सम्बन्धित पत्र भी प्रकाशित हैं। डा० रिचर्डने विवाहको यथार्थ प्रेम, सन्त योनोसुकेने 'पवित्र संस्कार', जैन जगतके सम्पादकने 'प्रवेशद्वार', श्री मल्लिकने 'विवाह दो स्वर मिलकर समरस होनेका संगीत' तथा 'द्विवेदी आशाका संदेशवाहक' बताया है।

इस प्रकार यह पुस्तक मनोरंजक, प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद है। यद्यपि इस पुस्तकका प्रकाशन साहित्यिक प्रेमोपहारके रूपमें हुआ था, पर अब भी सबके लिये समानरूपसे उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

★

तत्वार्थसूत्र सार्थ

यह गुटका साइजकी ११४ पृष्ठवाली बाबूजीद्वारा सम्पादित तथा अनुवादित की हुई है जो १९५०में प्रकाशित हुई। ईसाई धर्ममें बाइबलको जो महत्व है तथा आर्य :संस्कृतिको माननेवालोंकी जितनी आस्था भगवतगीता पर है ठीक उतनी ही आस्था जैन धर्मवाले संस्कृत भाषाके प्राचीन जैन ग्रन्थ 'तत्वार्थसूत्र' पर रखते हैं। ईसाकी प्रारंभिक शताब्दियोंमें जब संस्कृतका विशेष प्रचार हुआ तो जैनियोंने भी संस्कृत भाषामें ग्रन्थ रचनाका विचार किया। इस कार्यका प्रारंभ सौराष्ट्रके गिरिनगर नामक शहरके द्वैपायक नामक जैन गृहस्थने किया और दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग:" नामक सूत्र रचकर घरके खंभे पर लिख दिया। जब उनकी अनुपस्थितमें उमास्वाति आचार्य आहार लेने घर गये

तो उस सूत्रको देखा और 'सम्यक्' शब्द बढ़ा दिया। गृहस्थ जब घर लौटा तो बड़ा प्रसन्न हुआ और आचार्यकी खोज कर 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थकी रचनाके लिये उनसे प्रार्थना की, जो बादमें पूर्ण हुई। इसमें चारों अनुयोगों अर्थात् प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोगका समावेश किया गया। इसमें १० अध्याय हैं।

पहले अध्यायमें तत्त्वबोध पाने योग्य ज्ञानकी विवेचना की गई है तथा मोक्षमार्गकी सिद्धिके लिये जिन सात तत्त्वों, रत्नत्रय धर्म, नय निक्षेप, तथा पांच ज्ञानका वर्णन किया है जो इसके अन्तर्गत है द्वितीय अध्यायमें जीवके औपशमिक, क्षायिक, मिश्र, औदयिक और पारिणामिक भावोंकी विवेचना की है। तीसरे अध्यायमें सात भूमियों उनकी नदियों पर्वतों देवों, देवताओं, रंगों तथा विभिन्न दिशाओंका वर्णन है। चौथे अध्यायमें देवताओंके चार निकाय भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक बताये हैं।

पांचवें अध्यायमें धर्म, अधर्म, आकाश, काल और पुद्गल चार द्रव्योंकी व्याख्या, छठे अध्यायमें आस्रवतत्त्वकी व्याख्या करते हुवे कर्म सिद्धांतकी वैज्ञानिकताको, सातवेंमें व्रतोंकी व्याख्या तथा आदर्श जीवन व्यतीत करनेके तरीके, आठवेंमें कर्मोंके बंधसे सम्बन्धित, नवमें आस्रवोंका निरोध तथा अंतिम अध्यायमें केवलज्ञानकी चर्चा की गई है। पहले प्रत्येक मंत्र संस्कृतमें लिखा है और फिर सरल भाषामें हिन्दीमें अनुवाद किया गया है।

बाबूजीने 'तत्त्वार्थ सूत्र' की महत्ताके सम्बन्धमें लिखा है, "मानव इस पर विश्वास लाये और ज्ञान पाये और शक्तिको न छिपाकर इसका पालन करे। वह स्वयं सुखी होगा और लोकको सुखी बनावेगा।

★

जैनधर्म और तीर्थंकरोंकी ऐतिहासिकता एवं प्राचीनता

विदेशी विद्वान प्रो० डॉ० गुस्टाफ रोठके अंग्रेजी निबन्धका हिन्दीमें अनुवाद बाबूजीने किया जिसमें केवल २२ पृष्ठ हैं। फिर भी यह छोटी पुस्तक बड़े महत्वकी है। प्रत्येक पंक्तिसे परिश्रम और अनुसन्धानकी आभा प्रकट होती दिखाई पड़ती है। जो व्यक्ति भगवान महावीरसे पूर्व किसी भी तीर्थंकरको नहीं मानते उनके लिये बड़ी जबर्दस्त फटकार तथा चुनौती है और अपनी भूल स्वीकार करनेके लिये विवश करती है। जैन-धर्मको एक ऐसा निराला धर्म बताया है जो मूल निवासियों द्राविड़, असुर आदिके समयमें प्रचलित है। इसमें जैनधर्म और उसके सिद्धान्तोंकी मौलिकताको ऐतिहासिक कसौटी पर कसकर खरा उतारा है।

☆

मैं जैनी क्यों हुआ !

यह तीस पृष्ठकी पुस्तक बाबूजी द्वारा अंग्रेजीसे हिन्दीमें अनुवादित तथा सम्पादित है। इसमें श्री हर्बर्ट वैरन सा० लन्दनकी "मेरी श्रद्धा जैन सिद्धान्तमें कैसे हुई ?" श्रीमती ई० एस० क्रोनसि'मट अमेरिका, का "मेरा वक्तव्य", डबल्यू० जी० ट्रार साहब इंगलैण्डका "सच्चा धर्म", श्री मैथ्यू मैके साहब लन्दनका "मैं जैन क्यों हुआ ?" श्री फ्रैंक आर० मैनसेल, इंगलैण्डका "सत्य और आनन्दकी खोजमें", श्री एन० जे० स्टीवर्ट चेम्बर्स लन्दनका "सच्चा धर्म" श्रीमती मिस कौमकी ीयनीका "जैन धर्मकी विशेषता" स्वर्गीय मि० अलेक्जेण्डर गार्डन इंग्लैण्डका "सच्ची रथयात्राएं" श्री लुई डी० सेन्टर इंग्लैण्डका "मैं जैन क्यों हुआ" प्रो० लोथर वेन्डेल जरमनीका "जैनधर्ममें मेरा प्रवेश" और वुडलेण्ड काइलर अमेरिकाका "हम शाकाहारी

जैन कैसे हुये" जैसे उच्च कोटिके ११ लेखोंका संकलन है।

इन लेखोंका अंग्रेजीसे हिन्दीमें बड़ी सरल भाषामें अनुवाद किया गया है जिससे हिन्दी पढ़ेलिखे व्यक्ति धर्मकी विशेषताओं तथा विदेशी व्यक्तियोंका जैन धर्मके प्रति झुकावके कारणोंको भलीभांति जानकर लाभान्वित हो सकें।

प्रयास करनेके बाद भी भगवान महावीर, प्राचीन जैन लेख संग्रह, जैन जातिका ह्रास, संक्षिप्त जैन इतिहासके विभिन्न खंड, भ० पार्श्वनाथ, विशाल जैन संघ, भगवान महावीर और उनका उपदेश, गांधीजी, विचार और वितर्क, अरिष्टनेमि और कृष्ण, मुनिसुव्रत और यज्ञवाद, जैनधर्म सिद्धांत, असहमत संगम, सनातन जैनधर्म, जैनधर्म सिद्धांत, अमर जीवन और सुख, आत्मिक मनोविज्ञान, श्रद्धा ज्ञान चरित्र, ध्यानकी एकाग्रता और निर्वाणकी कुञ्जी आदि पुस्तकें उपलब्ध न हो सकी हैं। अतः उनकी आलोचनात्मक विवेचना करना संभव न हो सका है।

महान नेताका महा प्रयाण

विश्वकी महान विभूति, विश्वमें अहिंसा सिद्धान्तको फैलानेकी इच्छा रखनेवाले और निस्वार्थ समाज सेवक "डॉ० कामताप्रसादजी जैन" पिछले ३० वर्षोंसे अर्श रोगसे पीड़ित थे। सितम्बर—अक्टूबर ६४ से रक्तस्राव भी अधिक हो रहा था। बीचमें कुछ स्वास्थ्य अच्छा जान पड़ा तो फरवरी ६४ में वेदीप्रतिष्ठोत्सव व जैन मिशन कार्यालयका उद्घाटन और अहिंसा सम्मेलनका आयोजन किया। कुछ स्वास्थ्य सुधर पाया था उसी स्थितिमें सम्मेलनके कार्यमें दौड़ धूप करते रहे। सम्मेलनके बाद फिर उनका स्वास्थ्य खराब होता गया। बीचमें कुछ सुधरा भी उसीमें सभी कार्य करते रहे। मईके दूसरे सप्ताहमें शारीरिक दुर्बलता बढ़ती ही चली गई।

धर्मपत्नीकी मृत्यु हुई तबसे भी एक चोट पहुंची, अपने आत्मीय परिजनका जो प्रत्येक कार्यमें सहायता देनेवाली हो, का विछोह असहनीय रहा। धर्मपत्नीकी धार्मिक प्रवृत्ति, उदार स्वभाव, मधुरभाषा, अतिथिसत्कार, और प्रेमभावसे घरसे लेकर बाहर तक सभी प्रभावित थे। उधर प्रिय पुत्री श्रीमती सुमनकी मानसिक स्थिति बहुत बिगड जानेसे भी बाबूजी बहुत दुःखी रहने लगे, उसकी चिकित्सामें काफी रुपया तो व्यय करना ही पड़ा तथा समय और श्रमकी आहुति भी दी। उन्होंको वास्तविक रूपसे दुःख तो इस बातका था। सुमनकी अस्वस्थताको अनेक लोग बहानेबाजी समझते थे। समयकी गतिको कौन जानता है।

२४ अप्रैल ६४ का दुर्भाग्य पूर्ण दिन आया और मिशन कार्यकर्ता तथा प्रेस कर्मचारी श्री रामसनेही शाक्यको अपनी जीवनलीला समाप्त करनी पड़ी। विनय, सदाचार, चरित्र,

ईमानदारी, प्रेम, प्रसन्नता, सेवा तथा श्रमकी साक्षात् प्रतिमा श्री रामसनेही थे, जो मिशन, प्रेस, मन्दिर, पुस्तकालय तथा बाबूजीके घरमें इस तरहसे कार्य करते थे मानों उनका दूसरा बेटा ही हो। एक पिता अपने पुत्रपर जितना विश्वास करता है, जितना प्रेम करता है और रखता है जितनी सद्भावना ठीक उतना ही सहज स्नेह रामसनेहीको प्राप्त था।

कम पढ़े-लिखे होने पर पत्रिकाओंसे सम्बन्धित पर्याप्त कार्य वे किया करते थे जैसा उनका नाम था वैसा ही स्नेह भी। ४-६ दिन ज्वरसे पीड़ित रहनेके बाद ही वे परलोक गामी हुये। श्री रामसनेहीकी मृत्युने बाबूजीकी कमर ही तोड़ दी हो ऐसा लगता है।

बाबूजीका स्वास्थ्य गिरता ही चला गया, पर अपनी पीड़ा वे किसीको बताते ही नहीं थे। वैसे उन दिनों उनकी पुत्री तथा अन्य संबंधी भी आ गये थे। रात-रात भर नींद न आती तो उनके प्रिय पुत्र वीरेन्द्र पास बैठकर धर्म और दर्शन पर घण्टों बातचीत किया करते जिससे उन्हें काफी शांति मिलती और कभी कभी तो प्रातः ८-९ बजे सोकर उठते थे शौच जाना, खाना, स्नान करना, दैनिक उपासना आदि कार्य तो रोज करते ही रहते थे।

अस्वस्थताके दिनोंमें कई कई घण्टे स्वाध्याय भी करते। स्थानीय चिकित्सकोंकी चिकित्सा भी चलती रही, जो दवायें पहले रक्तस्राव रोकनेके लिये रामबाण सिद्ध हुई थी उनने भी बिल्कुल कार्य न किया। पं० रूपचन्द्र गार्गीयजीने दवा बाहरसे भेजी इसका भी कोई प्रभाव नहीं हुआ। अतः यही निश्चित किया गया कि कहीं बाहर इलाज कराया जावे। अलीगंजमें कोई भी प्रकार नहीं है।

अतः कारके लिये एटा फर्रुखाबाद आदि जगहों पर दौड़ना पड़ा जिसमें भी लगभग १ दिन निष्फल गया। तब फर्रुखाबादसे ऐम्बुलेंस कार मंगवाई गई जिसमें दि० १७ मई ~४ दिन रविवार तिथि वैशाख शुद्ध पक्ष ६ सम्वत् २०२१ को शामके ६ बजे फर्रुखाबाद प्रस्थान किया। लेकिन अलीगंजसे १६ मील दूर मार्गमें ही समाजके दुर्भाग्यसे यह महान विभूति सदैवके लिये विदा हो गई।

नहरके किनारे आमके घने वृक्ष, चंद्रमाकी खिली हुई शीतल चांदनी थी, यहां कार रोककर स्ट्रेचरसे उतारा गया। मृत्युके समय भी वे मुस्करा रहे थे। बेचैनी अवश्य थी, पर उसकी ओर उनका ध्यान न गया, वाणी कुण्ठित हो रही थी। बाबूजीने समाधि करानेकी इच्छा प्रकट की। उनके पुत्रने समझाते हुये कहा, "आप स्वयं विद्वान हैं आत्मा नहीं मरती है, वस्त्र बदलनेके समान जीवात्मा चोला बदलता है." उधर पासमें ही बैठी बड़ी पुत्री श्रीमती सरोजिनी णमोकार मंत्रोंका उच्चारण कर रही थी। उनके दामाद श्री सुमतिचन्द्र व कायमगंज निवासी श्री इन्द्रसेनजी, सेवक मोती, और पौत्र चि० ऋषभ सेवामें जुटे थे। अन्तमें 'णमो अर्हं...' मंत्रका उच्चारण किया और ऐसी नींद सो गये जो कभी उठनेकी आशा ही नहीं। चेहरा परम शान्तिमय था। और भी क्या चाहिए जिसने जीवनभर सेवा, सत्य, संयम, साधना, और स्वाध्यायको अपने जीवनका अंग बना लिया था, फिर उसे शांति तो मिलनी ही चाहिए थी।

रात्रिके लगभग दो बजे एक ट्रक द्वारा उनका शव अलीगंज लाया गया और रात्रिके अंतिम प्रहरमें ही जिसने सुना दौड़ा गया और शव यात्रामें सम्मिलित होकर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा दाह संस्कार किया गया। उस समय ऐसा लगा मानों अलीगंज अनाथ हो गया। प्रातः होते ही मैं भी उस महान तपस्वीके घर

गया पर उनके दर्शन प्राप्त करनेका सौभाग्य न मिला। समाजको बाबूजी द्वारा दी गई सबसे बड़ी भेंट योग्य पुत्रके रूपमें श्री वीरेन्द्र नेत्रोंसे गंगा-यमुना प्रवाहित कर रहे थे। वे यही बोले—"मेरी छत्र छाया आजसे उठ गई...मुझे तो कल ही फर्रुखाबाद जाते समय ऐसा लग रहा था कि बाबूजी मंजिल तक न पहुंच पायेंगे पर समय किसने देखा है।" उस समय बाबूजीके कार्योंसे सबका जी भर आता था, न तो श्री वीरेन्द्र कुछ बतानेकी सामर्थ्यमें थे और न उपस्थित लोग कुछ भी सुननेकी सामर्थ्यमें।

फर्रुखाबाद जानेसे पूर्व मन्दिरजीके बाहरसे दर्शन कर भगवानको मस्तक नवाया था। एक दिन 'तत्वानुशासन' नामक ग्रन्थका स्वाध्याय भी करते रहे। अनेक दवायें आई पर अंग्रेजी दवाओंको तो उन्होंने प्रयोग ही नहीं किया। आयुर्वेदिक और होम्योपेथिक दवाओंको ही प्रयोगमें लाये, अंग्रेजी दवाओंमें पशुओंके अंश होनेके कारण उन्हें कभी भी प्रयोगमें नहीं लाये लगानेकी दवा Preparation "H" बताई थी पर उसमें शार्क मछलीका तेल होनेके कारण लगानेसे मना कर दिया। वैसे मैं स्वयं उनकी मृत्युके एक सप्ताह पूर्व घर पर मिलनेके लिये गया।

उस समय स्थानीय एक सज्जन औषधि बता रहे थे, जब वह सज्जन औषधियोंके नाम लिखाकर चले गये तब वे मुझसे यही बोले—"इन औषधियोंके बारेमें जानकारी जब करूंगा कि आखिर इनमें कोई ऐसा तत्व तो नहीं जो विपरीत हो।" धन्य थे बाबूजी और उनकी अहिंसा तथा उदारताकी वृत्ति जिसके कारण 'जिओ और जीने दो' के मूलमन्त्रको उन्होंने अपने जीवनमें पूरी तरहसे उतार लिया था। और आचरणके द्वारा ही मिलनेवालोंको शिक्षा दिया करते थे।

बाबूजीके निधन पर शोक व श्रद्धांजलियां

बाबू कामताप्रसाद जैन जैन समाजके प्रमुख व्यक्तियोंमेंसे थे। साम्प्रदायिक भावनासे दूर रहकर 'अखिल विश्व जैन मिशन' के रूपमें उनके द्वारा की गई जैन धर्मकी सेवायें अपना महत्व रखती हैं। बैरिस्टर चम्पतरायके बाद विदेशोंमें जैन धर्मका प्रसार करनेवाले वे पहले व्यक्ति थे मेरे और तेरापन्थ संघके साथ उनका विशेष सम्पर्क था। जब भी प्रसंग आया, वे मुक्त भावसे मिले और अन्य व्यक्तियोंको भी उन्होंने प्रेरणा दी। उनके प्रति श्रद्धा, सम्मान तथा सौजन्यभाव रखनेवाले व्यक्तियोंका कर्तव्य है कि जैन धर्मकी प्रभावनाके लिये उनके द्वारा आरम्भ किये गये उनवद्य कार्यको वे रुकने न दें, आगे बढ़ाएं।

—आचार्य श्री तुलसी
संचालक अणुव्रत आन्दोलन
दिल्ली

योग्य कल्याण भजन हो। श्री बाबू कामताप्रसादजीके अभावसे जैन समाजको बहुत क्षति पहुंची है और मुख्यतया विदेशोंमें धर्म प्रभावनाकी दिशामें बहुत क्षति पहुंची है। अब तो यही आशा है कि आप अपने साथियों सहित उद्यम द्वारा इस अभावको न खटकने देंगे।

मनोहरजी वर्णी
अध्यात्म प्रवक्ता, भिण्ड।

"मुझे यह जानकर अत्यन्त खेद हुआ कि श्री कामताप्रसाद-जीका स्वर्गवास हो गया है। अभी कुछ ही माह पूर्व जब उन्होंने बहुत आग्रहपूर्वक मुझे अलीगंज बुलाया था तब कार्यके प्रति उनकी दिलचस्पी देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई थी। इस असामयिक निधनसे निश्चय ही जो क्षति हुई है वह पूरी होना मुश्किल है।

प्रकाशचन्द्र शेठी
उपमंत्री केन्द्र,
स्पात और भारी उद्योग

भारत सरकार नई दिल्ली
२५-५-६४
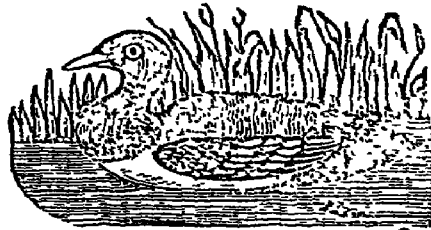
विश्वकी दृष्टिमें—डा० कामताप्रसादजी

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल शास्त्री, एम० ए०, पी० एच० डी० जैन साहित्य शोध संस्थान जयपुरसे लिखते हैं—वे जैन साहित्यके उत्कृष्ट विद्वान थे जैन इतिहासकार थे और अपने लेखों एवं पुस्तकोंके द्वारा जो मूल्यवान साहित्य उन्होंने देश व समाजको दिया वह सदा उनके अमरगीत गाया करेगा।......बाबू साहब इतने महान होते हुवे भी उन जैसी सादगी, मान्यता एवं सहृदयता मिलना बड़ा मुश्किल है। यद्यपि वे मिशनके सर्वोपरि नेता थे लेकिन उन्हें अभिमान तो छू भी नहीं गया था। वे अपने साथियों एवं शिष्योंमें बैठकर अपना अस्तित्व खो बैठते थे।

३०-५-६४

☆

श्री गुलाबचन्द जैन बी० कोम० एल० एल० बी०

लेखा निरीक्षक दिल्लीसे

"उनके दर्शन करके ऐसा लगता कि एक देवता पुरुषके दर्शन कर रहा हूं। हृदयको शान्ति मिलती, उनके सान्निध्यमें बैठकर चर्चा करनेमें। अभी बाबू जयभगवानजी जैन व श्री सिद्धसेनजी गोयलीयके आकस्मिक निधनकी क्षति पूर्ति हो ही नहीं पाई थी कि उनकी क्षति पूर्तिका साधन जुटानेवाले स्वयं भी चले गये।"

२२-५-६४

☆

गांधीके पद-चिह्नों पर

प्रो० पृथ्वीराज जैन सम्पादक। विजयानन्द अम्बाला (पंजाब)

"श्री कामताप्रसादजी जैन धर्म व इतिहासके मर्मज्ञ विद्वान, अनुभवी, एवं दूरदर्शी पत्रकार, प्रसिद्ध लेखक, तथा जैन शासनके अनथक सेवक थे। विदेशमें जैन धर्म और अहिंसाके प्रचारार्थ उन्होंने श्री वीरचन्द राघव, श्री गांधी, बैरिस्टर चम्पतरायजी, व

श्री जे० एल० जैनीके पदचिह्नोंका अनुकरण करते हुवे सराहनीय कार्य किया।

२६-५-६४

★

डॉ० महेन्द्रसागर प्रचण्डिया एम० ए० पी० एच० डी० सह सम्पादक अहिंसा वाणी अलीगढ़से लिखते हैं—"उनके द्वारा सच्चे मार्गका प्रतिपादन हुआ है हमें उसी पंथका अनुकरण कर आत्म कल्याण करना है।"

२३-५-६४

★

श्री हीरालालजी पांडेय आचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिल्हा, जि० बिलासपुरसे लिखते हैं—"बाबू कामताप्रसादजीने 'जैन विश्व मिशन' के माध्यमसे तथा 'अहिंसा वाणी' एवं 'वायस ऑफ अहिंसा' के द्वारा जैनधर्म, जैन दर्शन, जैन साहित्य और विश्वशान्ति तथा विश्व प्रेमकी दिशामें जो बहुमुखी सेवा और श्रीवृद्धि की है वह 'जैन विश्व मिशन' और 'भारतके इतिहास' में स्वर्णाक्षरोंमें लिखी जावेगी। बाबू कामताप्रसादजी समुन्नत विचारक, सुधारक, प्रगतिशील, उच्च लेखक, स्पष्ट मित एवं मधुर भाषी, कुशल शासक एवं उच्च समाज-सेवी थे।"

२०-५-६४

★

अन्तर्राष्ट्रीय क्षति

"आदरणीय बाबूजीकी छत्रछाया हम लोगोंके ऊपरसे उठ जानेपर हम सब लोग सभी भांति अपनेको असमर्थ पा रहे हैं। उनका सहसा निधन अलीगंज तथा राष्ट्रकी ही क्षति नहीं किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय क्षति हुई।"

श्री मुंशीलाल सकसेना एम० ए० बी० एड आचार्य,
बी० ए० बी० इन्टर कालेज, अलीगंज (एटा)

★

कामताप्रसादजी एक अध्ययनशील, कर्मठ, समाज सेवक रहे......मैं जानता हूं उनका सारा जीवन साहित्यसेवामें ही बीता है।...... कामताप्रसादजीको जैन धर्म पर अटल श्रद्धा रही।

के० भुजबली शास्त्री,
मुडबिद्री सम्पादक—गुरुदेव।

★

"जैन समाजके एक ही निःस्वार्थ निर्भीक एवं उत्साही कार्यकर्ताका अभाव समाजके किस सहृदय व्यक्तिके लिये दुःखदायी न होगा? धर्म प्रचारके लिये बाबूजीने अपना सर्वस्व समर्पित कर समाजके सामने एक आदर्श उपस्थित किया था। ऐसा कर्मठ कार्यकर्ता निकट भविष्यमें प्राप्त हो सकना असम्भव है।"

प्रकाश शास्त्री "हितैषी"—संपादक,
सन्मति सन्देश, ५३५ गांधीनगर—देहली ३१.

★

हमें ऐसी आशा नहीं थी कि बाबूजी हमें अनाथ करके इतनी जल्दी महाप्रयाण कर जायेंगे। मेरी लेखनी थर्रा रही है, कुछ लिख नहीं सकता। रतनेशकुमार जैन-रांची,
सम्पादक—अहिंसक जीवन।

★

अहिंसा तथा जीवदयाके प्रचार क्षेत्रमें उससे हमें शुभ-प्रेरणा मिली थी। वे जैन शास्त्र तथा इतिहासके प्रकांड विद्वान थे।

महेशदत्त शर्मा—सम्पादक,
गोरक्षण—वाराणसी।

★

देश समाज और धर्मकी महान विभूति उठ गई। इस महापुरुषने बड़ी भारी साहित्य और धर्मकी सेवा की। अखिल विश्व

जैन मिशनको संचालित कर बड़ा भारी परोपकार किया।

इन्द्रलाल शास्त्री–जयपुर,
सम्पादक, अहिंसा।

★

श्रद्धेय बाबू कामताप्रसादजीके अमासयिक देहावसानका समाचार पढ़कर हृदयको असहनीय आघात पहुंचा। कर्मोंकी गति विचित्र है उनके सामने हम मनुष्योंकी सत्ता ही क्या?

२०४, दरीबा, दिल्ली

युगेश
सम्पादक 'वीर'

★

उन्हें तो अभी जीना था और काम करना था, कितना काम उन्होंने अपने जीवन कालमें किया है पर यह तो बस कामकी भूमिका थी, जो उन्हें आगे करना था... मुझे विश्वास है कि उनके चले जानेसे उनके काम रुकेंगे नहीं, बल्कि आप लोग उन्हें और अधिक उत्साह और परिश्रमसे आगे बढ़ावेंगे वही उनका सर्वोत्तम श्राद्ध होगा।

यशपाल जैन
दिल्ली
संपादक 'जीवन साहित्य'

★

भाई कामताप्रसादजीसे मेरा ४० वर्षका परिचय था और वे जैन समाजके एक माने हुए विशिष्ट विद्वान लेखक, समाजसेवी तथा पत्रकार थे। उनकी सज्जनता तथा हंसमुख चेहरा सब मित्रोंको याद रहता था।

'नवभारत टाइम्स'
माईदयाल जैन

उन जैसा कर्मठ सेवक निस्वार्थ सेवक एवं विश्वमें जैन धर्मका प्रचार करनेवाला व्यक्ति अब हमें समाजमें नहीं मिल सकता।

सूरत

स्वतंत्र जैन
सहसंपादक 'जैनमित्र'

वसुन्धराका महान नररत्न

बाबूजी अखिल विश्व जैन मिशनके संस्थापक व संचालक तो थे ही किन्तु उनकी धर्म समाज सेवासे भी सारा जैन व अजैन जगत भली प्रकार परिचित है। निःसन्देह वसुन्धराका एक महान नररत्न सदाके लिये आंखोंसे ओझल हो गया।...... उनकी धर्म प्रचारकी लगन गजबकी थी।

दि० जैन मालवा प्रां० सभा, बड़नगर।

फूलचन्द्र अजमेरा, महामंत्री।

★

अल्प साधनसे महान कार्य

आज राष्ट्र और समाजको विश्वशांतिमें, योग दान देते रहनेके लिये अहिंसा धर्मका ध्वज विश्वमें फहरानेके लिये उनकी अत्यन्त आवश्यकता थी। इतिहास इस बातको कभी नहीं भूल सकता कि उन्होंने अल्प साधनसे जो महान कार्य किया है जो कि करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी नहीं हो सकता था। मानवताके लिये किये गये महान कार्योंके प्रति मानव समाज बाबूजीका चिर ऋणी रहेगा। यह उनकी लेखनीकी ही महान शक्ति थी कि जिसने अनेकोंका जीवन ही पलट दिया, सत्य मार्ग प्राप्त करा दिया।

मिशन म० प्र० प्रादेशिक शाखा, भोपाल।

गुलाबचन्द्र पाण्ड्या।

निष्ठावान सद्गृहस्थ

उन्होंने जैनधर्म, समाज और साहित्यकी अनवरत सेवा की है और अपने जीवनको भी उन्हीं आदर्शोंके अनुरूप ढालनेका प्रयत्न किया। अनेक तरुणोंमें उन्होंने सेवाकी प्रेरणा जगायी, जैन साहित्यके प्रति निष्ठा पैदा की। उनका स्वभाव तो सरलता,

सात्विकताकी सीमा हो पार कर गया था।...वे निष्ठावान सद्-गृहस्थ थे, उनकी आत्मा हमें हो शांतिकी प्रेरणा देगी, हम उनकी शांतिके लिये क्या कामना करें?

सर्वसेवा संघ वाराणसी — जमनालाल जैन।

★

कर्मठ सेवक

वे एक कर्मठ सेवक थे, जिन्होंने व्यापक रूपमें जैन धर्म प्रचारका देश और विदेशमें बिगुल बजाया व युवकोंमें धर्म-भावनाएं पैदा कीं। जैन मिशन आज अनाथसा हो गया है।

दिगम्बर जैन समाज उज्जैन — सत्यंधरकुमार सेठी।

★

आप कुशल वक्ता, सफल लेखक योग्य सम्पादक एवं महान नेता थे। आप मिलनसारिता तथा सज्जनताकी तो मूर्ति थे। हम अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानके निधनसे स्वयं दुखी हैं।"

जैन पुस्तकालय (मिरजापुर) — गुलाबचन्द जैन मंत्री

★

वे समाजके पुराने लेखक, पत्रकार एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। इतिहास सामग्रीके प्रखर जानकार थे। अखिल विश्व जैन मिशन उनके सतत लगन एवं उद्योगका प्रतीक है।

भा० दिगम्बर जैन महासभा अजमेर

चौधरी सुमेरमल महामंत्री

★

समाजमें उनके कार्य लेख आदि अमर रहेंगे, लेखक कभी भी मरते नहीं हैं वे आज भी जीवित हैं और रहेंगे......समाज उनकी सेवाओंका ऋणी है।"

दिगम्बर जैन अयोध्यातीर्थ कमेटी — कामताप्रसाद जैन

जैन श्रमण संस्कृतिके विश्वव्यापी प्रसारक एवं प्रचारक, उद्भट विद्वान, सम्पन्न साहित्यकार, इतिहासके मर्मज्ञ, अहिंसाके अटल पुजारी, कर्मठ कार्यकर्ता, समन्वय करुणा और सरलताके अडिग तपस्वी आदि आदि गुणोंके धारी परमपूज्य बाबूजी श्री कामताप्रसादजीका आकस्मिक निधन सुनकर मैं ही नहीं यहांका जैन जैनेतर समाज शोक-सागरमें निमग्न हो गया। ......बाबूजीने सदैव समाजको दिया ही है।......समाज बाबूजीका सदैव ही ऋणी रहेगा।

मिशनशाला (पिडावा) कोमलचन्द्र जैन संयोजक

वे-एक उज्ज्वल रत्न थे......वे अत्यन्त उदार तथा सहृदय व्यक्ति थे। उनमें श्री ब्र० शीतलप्रसादजी जैसी कर्मठता तथा श्री बैरिस्टर चम्पतरायजी जैसी कठिनसे कठिन विषयको सरल शब्दोंमें कहनेकी क्षमता विद्यमान थी।

जैन विद्वत्समिति-देहली।

हीरालाल जैन कौशल,
साहित्यरत्न-न्यायतीर्थ अध्यक्ष।

उनके पत्रोंमें अपार प्रेम, भावना प्रकट रहती थी, लिखनेके लिए उत्साहित करते रहते थे। उन्होंने कभी अपने विरोधियोंकी भी निंदा नहीं की, यह एक उनका मुख्य गुण था। जब समाज अंधेरेमें पड़ा हुआ था तब जागृतिका बिगुल बजानेवाले बाबूजी ही थे......आज समाजमेंसे अच्छा इतिहास और जैन धर्मका मर्मज्ञ चला गया है।......परन्तु जबतक संसारमें उनका साहित्य जीवित है तबतक वे भी जीवित ही हैं।

गुणभद्र जैन।

श्रीमद्राजचंद्र आश्रम, अगास-(गुजरात)

निष्पक्ष ठोस विद्वान

समाजसेवी श्री [illegible] का देहावसान वास्तवः जैन जगतके लिये ही नहीं वल्कि अखिल विश्वके लिए एक असाधारण क्षति है......अपनी अपार निर्भीकता... [illegible] जिनवाणी प्रचार तथा अहिंसा प्रचारमें वे इतने तल्लीन थे कि परोपकार और आत्मीयतामें सहज ही अंतर नहीं पाया जा सकता था। वस्तुतः वे एक कर्मठ लगनशील, साहित्यिक, जिनवाणी भक्त, इतिहास वेत्ता तथा नवीनतम दृष्टिकोणवाले एक विज्ञान वेत्ता थे। समाज-सेवी होते हुवे भी वे एक निःस्पृह तथा निरभिमान ठोस विद्वान थे। जिन्हें नामसे नहीं कामसे प्रयोजन था।

म० प्र० शाखा सुरई (सागर)

मानकचंद पदकुल
अध्यक्ष 'प्रादेशिक सभा'

वे सच्चे चारित्रशील श्रावक थे। जिन मोक्ष सिद्धान्तोंके गम्भीर अभ्यासी एवं अंतरंग श्रद्धालु थे। उन्होंने इन अकृत्रिम सत्य एवं परमानन्दमय तत्वोंको स्वयं जीवनमें आचरित कर अपनी आत्माको तो धन्य, उज्ज्वल एवं सबसे उन्नत बनाया ही पर साथ साथ जन-समाज भी इस अमृतपानसे वंचित न रहे इसका जी जानसे जीवनभर प्रयत्न किया। उनके सारे आचार विचार एवं क्रिया कलाप इस बातके पुरावे हैं। इस महान आत्माके जीवनका एक मात्र लक्ष्य यह था कि स्वयं परमानन्द या मोक्षमार्गका चारी बनना एवं औरोंको भी, उस पक्षका पथिक बनाना परमानन्दका भागी बनाना। धन्य है ऐसा पवित्र जीवन। श्वेताम्बर-दिगम्बर पक्षोंकी एकताकी दिशामें भी उनकी सद्भावना एवं चेष्टा विशेषतया उल्लेखनीय है।

कलकत्ता

हरखचन्द्र बोथरा

वर्तमान युगमें बाबूजीके निधनसे मानव कल्याण ही नहीं वरन् मानव व प्राणी समाजको अत्यन्त संतप्त होना पड़ेगा। इस समय विश्वको सत्य व अहिंसाके सिद्धान्तोंकी उपयोगिता बतलानेकी अत्यावश्यकता है बाबूजी यह कार्य अधूरा छोड़ गये हैं...... धन्य है उन्हें जिन्होंने जीवनको जैन धर्म प्रचारमें लगा दिया। अपने शरीर व स्वास्थ्यकी किंचित मात्र चिन्ता नहीं की।

खुरई प्रेमचन्द्र दिवाकीर्ति

☆

एक रोशनी

सचमुच हमारे बीचसे एक रोशनी जिसका उजाला हम देशवासियोंको ही नहीं वरन् समुद्र पार दूर दूर तक पहुंच रहा था गुल हो गई, बुझ गई : मृत्यु सबको आती है मगर अकाल मृत्यु यानी अपने वक्तसे पहलेकी मौत एक गहरा दाग छोड़ जाती है जिसे भरनेके लिये कुछ वक्त चाहिए। साथ ही साथ यह वक्त है हमारी आजमाईशका ऐसा न हो कि हमारी भावनाएँ विद्रोह कर बैठे उस परम परमात्मासे जिसकी प्रत्येक आज्ञाके सामने हम नत मस्तक हैं।

मैनपुरी प्रभुदयाल श्री वास्तव।

☆

जैनधर्म और जैन साहित्यके जो कार्य किये हैं वह उनकी एक अद्वितीय और निष्काम महा सेवा थी।...भारतवर्षमें ही नहीं अपितु पूरे संसारमें अहिंसामयी जैनधर्मका प्रचार हो ऐसी उनकी उत्कृष्ट इच्छा थी।...आज अहिंसाका एक महान प्रचारक कर्मठ वीर पुरुष असमयमें दुनियांसे उठ गया, सामाजिक कार्य-क्षेत्रमें हम अपनेको आज असहाय महसूस कर रहे हैं।

बांदरी सुरेन्द्रकुमार जैन।

★

जैन समाजके जवाहर

यह दुःख ही नहीं शोक ही नहीं परन्तु कमर तोड़ और दिल बिठानेवाला एक रोग है। जो हमेशा सताता रहेगा। एक सच्चे प्रेमी, अहिंसा भक्त, जैन समाजका सूर्यास्त हो जानेसे मैं ही नहीं समाज ही अंग हीन हो गया है। जैन समाजका रत्न, जैन समाजका सुधारक, प्रचारक, जैन मिशनका संचालक, जैन अहिंसाका देवता और ज्ञानका सितारा, पवित्र सूर्यको स्वर्गके ठण्डे बादलोंने हमेशाके लिये अपनी गोदमें छिपा लिया है। जिसको कभी न देख सकेंगे। लेकिन यह जरूर आशा है कि इन बादलोंको अपनी ज्ञानकी शक्तिसे चीरता हुआ हम तक प्रकाश फेंकता ही रहेगा और रास्ता दिखाता रहेगा।... जिस जैन समाजके जवाहरने भारतके ही नहीं राष्ट्रके जवाहरके लिये रास्तेमें आगे आगे चलकर जवाहरात बिछानेके लिये अपने आपको जवाहरके लिये बलिदान कर दिया उन जवाहरातोंकी महान आत्माओंको मेरा मस्तक झुकाकर बार बार श्रद्धांजलि स्वीकार हो।

धनबाद (बिहार) रामप्रसाद जैन

★

"बाबूजीने अचिन्त्य कार्य करके दिखाया और भारतके अलावा विश्वमें अहिंसाका डंका बजा दिया और जैनधर्म व अहिंसाका प्रभाव लाखों प्राणियोंपर फैला दिया। बाबूजीकी शोध-खोज गजब की थी। हमारे तीर्थंकरोंकी वाणीको विदेशोंकी द्वारा कैसे विस्तृत ढंगसे सर्व साधारणके हाथमें पहुंचाई।

मंदसौर, लक्ष्मीलाल सेठी।

★

बाबूजी व्यक्ति नहीं थे एक संस्था ही थे, बड़ी लगनवाले धुनी व्यक्ति थे। एक अनमोल रत्न चला गया।

पटना सिटी, बद्रीप्रसाद सरावगी।

★

आजके इस युगमें धर्मनिष्ठ, सेवाभावी, निःस्वार्थी, सज्जनोंकी समाजको अत्यावश्यकता है। समाजमें धार्मिक वातावरण एवं साहित्य जागृतिकी जो नवचेतना फैलायी उसका श्रेय-श्रद्धेय बाबूजीको ही है।

इन्दौर, नन्दलाल टोंग्या।

★

"समाजकी एक अमूल्य निधि सदाके लिये विलीन हो गई। जिसने जैन समाजका ही नहीं अपितु देश-विदेशोंमें भारतवर्षका मस्तक गौरवान्वित किया, जिसकी प्रेरणासे सहस्रों सेवाभावी कर्मठ कार्यकर्ता समाजमें तैयार हुये। समाजके इस महान निःस्वार्थ सेवाभावी लेखकके साहित्यिकका आज वियोग हो गया।"

बजबज हीराचन्द बोहरा

★

क्या जो प्रचार और सेवा वह कर रहे थे और कोई कर सकेगा असम्भवसा प्रतीत होता है। वाहरे भगवान जो तेरी वाणीका प्रचार तन मन धनसे कर रहा हो उसीको तुर्त उठा लिया।...... वह बड़े ही पुण्यात्मा जीव थे। भगवान उन्हें पुनः ऐसा ही जीवन दें जिससे वह जन्म जन्म समाजकी सेवा करते रहें और धर्मवृद्धि होती रहे।

कासगंज गिरीश जैन

★

भाई कामताप्रसादजीने जैसी प्रभावना व प्रचार जैन शासनका देश व देशान्तरमें किया वैसा करना बहुत दुर्लभ है। साहित्यकी तो आपने अनुपम सेवा की है। वात्सल्य गुण तो आपमें कूट कूट कर भरा था। ऐसा भान होता है कि आप अपने मन्दिरजीकी प्रतिष्ठाकी ही इन्तजारी कर रहे थे।

जैन वॉच कम्पनी, दिल्ली प्रेमचंद जैन.

किन शब्दोंसे दिवंगत आत्माकी उदारता पर प्रकाश किरणें डालें यही एक चिन्तन है...... जिनके वात्सल्य और प्रेरणाओंसे जन समुदाय "अहिंसा" पर श्रद्धा रखता आया। अब समाजके हित चिन्तकोंके चरण डगमगाने लगे हैं।

सीमेन्ट फेक्टरी, सवाई माधोपुर — वीरेन्द्रकुमार बन्धु

समाजने और विशेषतया मुझ जैसे बहुतोंने एक ऐसे रत्नसे विछोह पाया है जो अमूल्य था और जैसा शायद ही अपने जीवनमें पासके......सब ही वस्तुतः अनाथ हो गये-एक छाया उठ गई परन्तु धीरजकी छायामें सबको ही सोना पड़ता है।

लखनऊ — कामताप्रसाद जैन

आप मेरे करीब २५–३० वर्ष पुराने मित्र थे। आप इतिहासके माने हुये विद्वान थे। आप जैनधर्मके एक सच्चे कार्यकर्ता, लेखक व पंडित थे।

ललितपुर — विशनचंद्र जैन ऑवरसियर

भाई कामताप्रसादजी श्री वीरभगवानके सच्चे उपासक थे। उनका जीवन सादा और उदार था। उन्होंने संसारभरमें जैनत्वका प्रचार ऐसी सच्ची लगन और भक्ति तथा अपूर्व ढंगसे किया जो सदाके लिये अमर रहेगा। और जैन समाज ही नहीं किन्तु सारा संसार उनकी सेवा तथा कार्योंके लिये ऋणी रहेगा।

रोहतक — लालचन्द्र जैन एडवोकेट

उन्होंने अखिल भारतीय जैन मिशनके लिये जो कुछ भी किया है, उन कार्योंको हम भुला नहीं सकते। उनकी जैनसमाज

तथा जैनधर्म सम्बन्धी आस्था तथा कार्यको देखते हुये हमें उनकी आवश्यकता और भी अधिक महसूस होती है।

इन्दौर राजकुमारसिंह
एम० ए०, एल० एल० बी० एफ० आर० ई० एस०

☆

आपके खोजपूर्ण लेख, अकाट्य युक्तियों और श्रद्धापूर्ण भावोंसे भरे रहते थे। अब हमें उनसे वंचित होना पड़ेगा।

रोहतक जिनेन्द्रप्रसाद जैन एडवोकेट

☆

वे स्वयं एक मिशन थे, पिछले अनेक वर्षोंसे मेरा उनसे सम्बन्ध था और बहुत ही स्नेहिल दृष्टिसे वे देखते रहे। उनकी कार्यक्षमता, लगन और तत्परताके साथ प्रबुद्ध शैली और विचार सभीके लिये अनुकरणीय रहे और हैं। मैंने उनसे अनेक बातें सीखी हैं।

रीठी (कटनी) म० प्र० प्रो० भागचन्द्र जैन 'भुनेन्द्र'

☆

अद्भुत निष्ठा तथा शक्तिके धारक

संसारके रेगिस्तानमें एक नखलिस्तानकी तरहसे बाबूजी वीतराग मार्ग संसारी दुःखी जीवोंको सुलभ करनेमें लगे थे। किन्तु संसार अभागा है। संसारकी अस्थिरताको मूर्तिमती बनाकर बाबूजीने पर्याय असमयमें ही परिवर्तन कर ली......अहो ! कितनी अद्भुत निष्ठा तथा शक्तिके धारक थे।......उनके सामने तो मैं क्या सब ही प्रमादी थे, क्योंकि वे कोटीभरके सूर्यास्तके पश्चात् दीपकोंसे ही काम चलाना पड़ता है।

सिविलियन स्टाफ आफीसर सुखमालचन्द्र जैन बी. ए.
नई दिल्ली-१

★

पितृ विहीनोंके पिता

मुझ जैसे अनेकों पितृ विहीनोंके वे पिता थे, किस प्रकार उन्होंने मुझे निराशाके क्षणोंमें उत्साहित प्रेरित कर साहस बंधाया था। उनकी स्मृतिमें मैं जी खोलकर एकांतमें बैठकर रोना चाहता हूं मैं सोचता हूं कि उनके बिना मैं कैसे रहूंगा? लेकिन रोने कलपनेसे सम्भवत: उनकी महान आत्माको ठेस लगेगी। अत: अब तो साहस बटोरकर उनके आदर्शों एवं कार्योंको आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आरा प्रो० राजाराम जैन

★

अप्रकाशित घटना

स्व० कामताप्रसादजी ज्ञानपीठ लेखक परिवारके सदस्य थे ही, जैन समाजके कर्मठ कार्यकर्ता और जैन संस्कृतिके एक निष्ठ प्रचारक थे। बाबूजी नहीं रहे, यह समाचार भारतमें ही नहीं विदेशोंमें भी अप्रकाशित घटना सा सुना जावेगा।

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी गोकुलचन्द्र आचार्य

★

हमारी समाजका जवाहर

पूज्य बाबूजी समाजका पूरा विदेशी प्रचार कार्य ही नहीं संभालते थे, अपितु समाजके अलावा जैन सिद्धांत और अहिंसाके प्रचारमें वे शिरोमणि पुरुष थे।

विदिशा, राजेन्द्रकुमार जैन,
एम. ए. एल एल. बी.

"डॉ० कामताप्रसाद भारतीय जैन समाजके कर्मठ कार्यकर्ता, समाज सुधारक एवं जैनधर्म तथा संस्कृतिके महान विद्वान थे।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा एवं लेखनीके द्वारा हिन्दी साहित्यके नवरत्नोंसे विभूषित किया।

मेरठ, सुरेन्द्रकुमार जैन,
बी० कॉम०, एल एल० बी०

★

उनका श्रम, धर्मसेवाकी लगन तथा कार्यकी क्षमता अद्भुत थी। जैनधर्मकी विश्वमें प्रभावनाके क्षेत्रमें उनका प्रयत्न परिश्रम तथा अध्यवसाय अतुलनीय रहा है। जीवनभर जिस भाग्यशाली व्यक्तिने श्रेष्ठ संस्कृति और धर्मकी उच्च सेवा की उस महानात्माके पदचिह्नों पर चलनेका आपको पुण्य संकल्प करना चाहिए।

सिवनी (म० प्र०) सुमेरचन्द्र दिवाकर न्यायतीर्थ शास्त्री,
बी० ए० एल० एल० बी०

★

उन्होंने जैन समाज व जैन दर्शनकी जो सेवाकी वह अद्वितीय एवं प्रेरणास्पद है।

टोंक (राजस्थान) भागचन्द्र जैन
एम० ए० एल० एल० बी०

★

बाबूजीने जैन साहित्यकी रचना और जैन धर्मके प्रचारके लिये जो विश्वव्यापी कार्य किये हैं, निःसन्देह वे उनके अमर स्तम्भ हैं, जिन्हें आन्धी और तूफान भी कभी नहीं गिरा सकते।

शामली (उ० प्र०) सुलतानसिंह जैन
एम० ए० (हिन्दी–राजनीति विज्ञान)
सदस्य राज्य स्काउट परिषद् उ० प्र०

★

बाबूजी जैन जाति शिरोमणि, समाजसेवी एवं उच्च कोटिके विद्वान थे। उन्होंने समस्त विश्वको भारतीय संस्कृतिके सार तत्व

अहिंसाका सन्देश देनेका जो आजीवन पुण्य कार्य किया है वह उनके यश शरीरको अमर रखनेके लिये पर्याप्त है।

हिन्दी कालेज बरई मक्खनलाल पाराशर, लेक्चरार

★

दुःख केवल उनके स्वर्गगत मित्रोंको ही नहीं हुआ, सारा देश विदेशके सकल जैन समाजको है। वह जैन समाजके एक प्रतिष्ठित विद्वान तथा कर्मठ सेवकों और आदरणीय कार्यकर्ताओंमेंसे थे।

रोहतक प्रवीन जैन, एम० ए० एल० एल० बी०

★

डॉ० कामताप्रसाद जैसी महान एवं प्रगतिशील संस्थाकी प्रतिमूर्ति खोकर हम सभी अनाथ हो गये हैं।..... डॉ० साहबने विदेशों जैन धर्मकी पताका फहरानेमें जितना योगदान दिया है, इतिहासका प्रति पृष्ठ बताएगा। मेरा नम्र सुझाव है बैरिस्टर चम्पतरायजी एवं डा० कामताप्रसादजीका स्मारक बनाया जावे।

कटनी (जबलपुर) मोतीलाल जैन ' विजय ', एम० ए०

★

सत्य और अहिंसाके सम्राट्

बाबू साहबने जैन विश्व मिशनको सशक्तशाली बनाकर अपना समस्त जीवन सत्य अहिंसाकी ज्योतिमें लगाया जो आनेवाली पीढ़िया स्मरण करेंगी। वे जैन समाजके सेवक बनकर सत्य और अहिंसाके सम्राट थे। उनका जीवन भी विश्वहितके लिये गांधी, पूज्य वर्णी आदि महान आत्माओंके समान था जो अनवरत और अटूट सेवायें देकर जैनालोकमें अमर नाम कर गये।

गढ़िया-(जबलपुर) पं० बाबूलाल फणीश शास्त्री

★

"हाय ! यह क्या हो गया ? ऐसा लगा जैसे पाँवोंके नीचे की पृथ्वी खिसक रही हो, हृदय पर असह्य चोट लगी सिर चकरा गया, आँखोंसे आंसू निकलने लगे...बाबूजीकी सौम्यमूर्ति आँखोंके आगे आ गयी।...जिस त्याग और तपसे जैन जगतकी सेवा की है, समाज शायद ही ऋण चुका सकेगा। किसी अन्य देशमें होते या ईसाई धर्मके प्रचारक होते तो देवताकी भांति पूजा होती। ...पूज्य बाबूजी जैन जगतके प्रखर तेजस्वी मार्तण्ड थे, जिनके विशिष्ट गुणोंकी दिव्य रश्मियोंमें जैन जगत आलोकित होता रहा। हाय? अब वह अस्त हो गया।

ऋषभदेव मार्तण्ड

विश्वके अद्वितीय विद्वान

बाबूजी जैन समाजके सर्वमान्य श्रद्धास्पद तो थे ही, साथ ही विश्वके अद्वितीय विद्वानोंमेंसे भी एक थे। जिन्होंने एक दफा भी बाबूजीके लेख पढ़े हैं, उनके हृदयमें बाबूजीकी अमिट विद्वत्ताकी छाप अवश्य घर कर गयी।"

राघौगढ़, (गुना) रावत ऋषभलाल 'आदीश'

मेरे प्यारे जैन धर्मके एक सच्चे निस्वार्थभावी प्रचारक कर्मठ कार्यकर्ता और जैन साहित्यको प्रचलित करनेवाले इस नर पुंगवको हमारे बीच अब नहीं देखकर एक बहुत बड़ी कमी महसूस हो रही है। ...बाबूजीका जन्म जैन साहित्यके प्रसार, जैन सिद्धान्तके प्रसार और तीर्थंकरोंकी वाणीका निनाद जन जन तक भास्कर, वीर, जैन सिद्धान्त पत्रिका, अहिंसा वाणी और दी वॉयस ऑफ अहिंसा तथा छोटे छोटे गागरमें सागर भरनेवाले ट्रेक्टों बड़े बड़े अंकों और पुस्तकों अहिंसा सम्मेलनों

सर्व धर्म सम्मेलनोंके माध्यमसे जनजनमें पहुंचानेके पुण्य कार्यकी चेतनाके लिये हुआ था।

कलकत्ता ६. मानकचन्द्र छावड़ा

★

"जैन समाजके दीपक, मिशनके संस्थापक बाबू कामताप्रसाद-जीके आकस्मिक निधनसे समाजको बहुत गहरा आघात पहुंचा है। जिस मिशनको लेकर वह आगे बढे उसके लिये अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया ऐसे महान पुरुषको श्रंद्धांजलि हम किन शब्दोंमें अर्पित करें, यह हमें स्वयं नहीं समझ आता। जिस मिशनको उन्होंने आगे बढाया उसे हम भी तन, मन, धनसे आगे बढ़ानेमें अपना सहयोग देते रहें तब ही उनकी आत्माको सच्ची शांति हम प्रदान कर सकते है।"

—राजेन्द्रकुमार जैन एडवोकेट
बासोदा (मल० प्र०)

★

"अभी तीन मास पूर्व ही हम लोगोंके साथ अल्प समयके लिये सम्पर्क हुआ था इतने थोड़े ही समयमें मैंने देखा कि वे वास्तवमें धार्मिक विचारके एवं शान्त तथा सरल स्वभावी थे। इसके अतिरिक्त उनमें और भी बहुतसे गुण एवं विशेषताएं थीं।

आज समाजका वह नररत्न उठ गया है, जिसकी पूर्ति होना अति असम्भव है प्रतीत होती है। बाबूजी सेवा भावी थे, सेवा रूपी साधनाके कठोर मार्गपर अविरल गतिसे चलते रहे, मार्गमें मुसीबतें आयीं किन्तु उन्होंने उसका सामना किया। बाबूजी मरनेके पश्चात भी अमर हैं क्योंकि मरनेके पश्चात् जिसकी कीर्ति संसारमें रहती है वह मानव जिन्दा ही है।"

श्री जैन जूनियर हाईस्कूल
देवबन्द (सहारनपुर)

लक्ष्मीचन्द्र जैन 'विशारद'
प्रधानाध्यापक

"उनकी अमूल्य रचनाओं द्वारा जैन साहित्यका मस्तक गर्वसे उन्नत है। साहित्य, इतिहास और संस्कृतिके क्षेत्रमें प्रस्तुत किये गये बाबूजीके अवदानोंको जैन समाज कभी नहीं भुला सकेगा। उनका शान्त गंभीर एवं निस्वार्थ व्यक्तित्व कभी नहीं भुलाया जा सकता है। बाबूजीके कृतित्व और व्यक्तित्वको पाकर जैन समाज और जैन साहित्य बहुत ही समृद्ध हुआ है। वास्तवमें ऐसी महान आत्माएं किसी समाज विशेषके पुण्यसे ही अवतरित होती हैं।"

एच० डी० जैन कालेज, आरा (मगध विश्व विद्यालय) — नेमीचंद्र शास्त्री, एम. ए. पी एच. डी., संस्कृत प्राकृत विभागाध्यक्ष

★

"उनके समान सुजन निस्पृह विद्वानका मिलना अत्यन्त कठिन है। पिछले बीस वर्षोंसे मेरा उनके साथ साहित्यक ही नहीं आत्मीय संबंध रहा। साहित्य और समाजके प्रति उनकी बहुमुखी सेवाओंका आकलन सहज नहीं है। ऐसे उदार चेता मनीषी अत्यन्त दुर्लभ है।

सागर विश्व विद्यालय — श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, Ancient इतिहास

★

जिस विभूति पर हम गर्व करते हैं आज केवल उनका नाम ही निःशेष है। यह क्षति सांस्कृतिक क्षेत्रमें वही स्थान रखती है। जो नेहरूजीकी क्षति राजनैतिक क्षेत्रमें।"

ज्ञानपुर (उ० प्र०) — डॉ० प्रद्युम्नकुमार जैन

★

"मैं कितना बदकिस्मत हूं कि मैं अपने आदरणीय पंडितजीके दर्शन भी न कर सका जिन्होंने मेरे विदेश जाने पर मुझे अलीगंज विश्व जैनका प्रतिनिधि नियुक्ति करते हुये वहां

इटली इंग्लैण्डके व्यक्तियोंसे परिचय कराते हुये सहयोग प्रदान किया। इसके साथ ही जैन समाज जैन धर्मके प्रति जितना भी अमूल्य दान दिया वह अविस्मरणीय रहेगा।"

८-६-६४.

—राजेन्द्र जैन मंत्री
युवक कांग्रेस, जबलपुर,

☆

"मैंने महात्मा गान्धी व ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके बाद बाबूजीको ही ऐसी लगनका व्यक्ति पाया जो अपने स्वास्थ्यकी पर्वाह न कर अपने ध्येयमें सलंग्न रहे और अपना जीवन समर्पित कर दिया।

२६-५-६४.

नाथूलाल शास्त्री, इन्दौर

☆

"उन जैसे लगनशील व धार्मिक व्यक्तिका अभाव जैन समाजमें आसानीसे पूरा हो सकना कठिन है।"

२५-५-६४.

—सुभद्रकुमार पाटनी मंत्री
महावीर भवन, श्रीमहावीरजी

☆

उनके हृदयमें जैन धर्मके प्रचारकी सच्ची लगन थी। उनका जीवन हर समय समाज कार्यमें ही लगा रहता था। भारत ही नहीं समस्त संसारमें अहिंसा तथा जैन धर्मका प्रचार है। आपके हृदयमें हर समय लगन लगी रहती थी।"

२५-५-६४.

भगतराम जैन मंत्री
अ० भा० दिगम्बर जैन परिषद, देहली

☆

उन जैसा समाजका सच्चा कार्यकर्ता मिलना बड़ा दुर्लभ है

वे सच्चे कलमवीर और सच्चे अहिंसावादी थे।

२४-५-६४.

सेठ लालचंद बी० सेठी
विनोद मिल्स. उज्जैन

उन्होंने अपने जयपुर प्रवासके दो दिन मेरे यहां ठहरनेकी कृपा की थी जिसकी स्मृति आज भी ताजी बनी हुई है। उस समय जो खुलकर बातचीत हुई थी उससे मैंने जाना कि वे अहिंसा प्रधान संस्कृतिको जनजन तक पहुंचानेके कितने लालायित हैं और प्रयत्नशील भी। यह उनकी प्रतिभा और अध्यवसाय ही था कि अलीगंज जैसे रेल मार्गसे दूर नगरमें रहकर भी उन्होंने विश्वके कोने कोनेमें अहिंसा और जैन सिद्धान्तोंका प्रचार किया और यही कारण है कि आज विश्वके विद्वानोंके लिये जैन धर्म अपरिचित शब्द नहीं रहा। संक्षेपमें वे व्यक्ति नहीं अपने आपमें एक संस्था थे। एक व्यक्ति क्या कर सकता है बाबू कामताप्रसादजीका जीवन उसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

गुमानमल जैन सहसम्पादक "ज्वाला" साप्ताहिक जयपुर

"उनके परलोक गमनसे जैन समाजका एक अमूल्य रत्नका वियोग होगया। अखिल विश्व जैन मिशनके तो वे प्राण ही थे।"

रतनलाल जैन बिजनौर

★

"बाबूजीकी सौम्यमूर्ति, सरल व्यवहार, धर्म प्रेम, साहित्य सेवा कैसे भूल सकते हैं। ...हमें प्रति क्षण याद आती रहती हैं।...हा। जैन जगतका सूर्य अस्त होगया...बाबूजी मिशनके साथ ही अमर रहेंगे।"

मार्तण्ड संयोजक-ऋषभदेव

"आपका निधन जैन समाजके सूर्यका अस्त है और वह भी इस प्रकारका अस्त जिसका अगले प्रातःमें उगनेका प्रश्न ही नहीं है। ...उनके लिये समस्त संसार ही उनका कुटुम्ब

था। जो क्षण इस फरवरी मासमें मैंने उनके सामीप्यमें व्यतीत किये थे। वह क्षण मेरे जीवनके बहुमूल्य क्षण थे।...हमें उनकी स्मृतिमें कुछ क्रियात्मक कार्य करना है।"

आदीश्वरप्रसाद जैन एम० ए० मंत्री
जैन मित्रमण्डल-दिल्ली

✶

उन्होंने जैन समाजकी जो सेवा की है वह भुलाई नहीं जा सकती। उनके निधनसे जो समाजकी हानि हुई है उसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है।

जे० एल० जैनी ट्रस्ट इन्दौर   श्री. जी० डा० मित्तल

✶

पुरातत्व एवं पुराने शिलालेखोंकी खोज करके उन्होंने अनेक बार जैन धर्मकी प्राचीनताके सम्बन्धमें अपनी लेखनीके चमत्कारसे विश्वको चकित कर दिया।

बढेलवाल जैन संघ
मैनपुरी

चन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष

✶

जैन इतिहासके खोजपूर्ण साहित्यके सृजनमें आपने जो कार्य किया है वह अपूर्व है। आप जैन इतिहासके महान् पंडित थे।"

राजस्थान जैनसभा
जयपुर

रतनलाल जैन छाबडा
मंत्री

★

भारतका एकमात्र प्रकाशित नक्षत्र

अहिंसाका पुजारी, भारतका एकमात्र प्रकाशित नक्षत्र आजसे एक हफ्ते पूर्व स्वर्गगामी हुआ...इस महान वज्रपातको सहन

करनेवाले शत शत भारतीयोंमें आप तथा आपके प्रियजनोंको किस तरह सान्त्वना प्रदान की जा सकती है ?

मा. शाकाहारी संघ म. प्र. रीवा, पन्नालाल जैन मंत्री

★

उनकी कर्मठता तथा श्रद्धाशीलता भावी पीढ़ीके लिये सर्वदा अनुकरणीय रहेगी।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली. सोहनलाल बाफणा

★

रामपुर जैन समाजकी यह सभा, जैन समाजके अद्वितीय विद्वान अथक निस्वार्थ समाज सेवक जैन जगतके देदीप्यमान नक्षत्र अपने प्रिय नेता डाक्टर कामताप्रसादजी जैन अलीगंज (एटा)की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

जैन समाज रामपुर (उ० प्र०) विमलचन्द्र जैन
एडवोकेट मुख्यमंत्री

★

श्री डाक्टरसाहब द्वारा की गई अनेक सेवायें जैन समाजके इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें लिखी जायेंगी जैन धर्म एवं जैन समाजका महान उपकार आपके द्वारा देश एवं विदेशोंमें हुआ है वह अकथनीय है।

वात्सल्यपूर्ण स्वभाव

भाई साहबका स्वभाव बड़ा सरल शान्त और वात्सल्यपूर्ण था, धर्म प्रभावना और परोपकार भावनासे ओतप्रोत रहता था, ऐसे भाव तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धमें सहायक होते हैं।

पानीपत रूपचन्द गार्गीय जैन प्रिन्सीपल

★

प्रचारके दृढ़ स्तम्भ

सचमुचमें बाबूजी इस युगमें जैन धर्म प्रचारके दृढ़ स्तम्भ थे ! खासकर विदेशोंमें जैन धर्म प्रचार बाबूजीके ही निमित्तसे वर्तमानमें चल रहा था...... वर्तमान युगमें जैन धर्मके प्रचारका चमकता हुआ सूर्य नष्ट हो गया।

निवाई (जयपुर) पं० इन्द्रजीतसिंह जैन
आयुर्वेदाचार्य, न्यायतीर्थ

शत्रुओं तकके मित्र

जैन सन्देशका पहला सफा देखकर ही अखबार हाथसे छूट पड़ा। ख्वाबमें भी यह ख्याल न था कि जैन समाजके परम हितैषी इतिहासके सूर्य जिनवाणी व वायस आफ अहिंसाके विद्वान सम्पादक आल वर्ल्ड जैन मिशनके डायरेक्टर शत्रुओं तकके मित्र श्री कामताप्रसादजीको जालिम मल्कुल मौत बिना कहे इतनी जल्दी हमारे बीचसे खींचकर ले जायेगा।...... समाजसेवा देश विदेशों तक धर्मभावना, देशभक्तिका सिक्का न केवल मेरे बल्कि मेरे मित्रों पर बैठा हुआ था।

सहारनपुर दिगम्बरदास मुख्तार

उत्कृष्ट श्रद्धा

उनमें अद्भुत उत्साह शक्ति थी। धर्म प्रचारकी उत्कृष्ट श्रद्धा थी, जिनवाणीकी असीम भक्ति थी। साहित्य प्रचारकी उच्च कोटिकी लगन थी। जैन इतिहासका परिशीलन मनन उनका मन चाहा विषय था। घर-घरमें जन जनमें कैसे वीतराग शासनका रहस्य पहुंचे यह उनकी भावना थी। वर्द्धमान

युवकोंमें प्रगतिशील तरुणोंमें उदित हुये नक्षत्रोंकी भांति विद्यार्थियोंके अन्तस्तलमें भगवान महावीरका मंगलकारी संदेश फैले यह उनकी तीव्र कामना था।

दिल्ली, सुमेरचन्द्र जैन शास्त्री।

✯

यह दीप बुझ गया जो अपनी बुद्धिमत्ता, चतुराई एवं अद्भुत धर्म प्रचारकतासे विश्वको आलोकित करता रहा है। बाबूजीमें जैन धर्म एवं अहिंसा सिद्धांतको फैलानेकी उत्कट भावना थी। मैंने उनके जीवनसे बहुत प्रेरणा ली है।

कलकत्ता, देवेन्द्रकुमार जैन, बी० कॉम०

✯

श्री बाबू कामताप्रसादजीके अभावसे जैन समाजकी बहुत क्षति पहुंची है और मुख्यतया विदेशोंमें धर्म प्रभावनाकी दिशामें बहुत क्षति पहुंची हो।

भिण्ड क्षु० मनोहरजी वर्णी।

✯

बैरिस्टर चम्पतरायजीके बाद बाबूजीने ही विदेशोंमें जैन शब्द गुंजाया। बाबूजीका जीवन प्रचार-रत रहा है व लेबिलधारी जैनोंकी अपेक्षा विदेशी विद्वानोंने उनका सही मूल्यांकन किया इसीसे वह कई ख्याति प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओंके सदस्य मनोनीत रहे।

गंजबासौदा केशरीमल जैन-विशारद

✯

वर्तमान अहिंसक संसारकी बड़ी क्षति हुयी है, और वह बहुत कुछ सोचने पर भी समझ नहीं आ रहा है कि इस कमीकी पूर्ति कहांसे होगी? उनकी निस्वार्थ सेवासे समाज चिरऋणी

गहन विषाद है, आज कि, वह ज्योतिमय आभा छिप गई।
जो कलतक मार्ग दिखाती थी, ज्योति थी प्रज्वलित दीपकी॥
वह जीवन धनका पारखी, सद्गुण रत्न एकत्रित कर।
जीवन गंगा बहा सरस बना, चला गया दूर–बहुत दूर॥
वीर, अहिंसावाणी, वाइस ऑफ अहिंसाका सम्पादन कर।
'अखिल विश्व जैन मिशन' की अक्षुण ज्योति जला॥
केशरिया ध्वजको और ऊंचा फहराकर।
ऐसी दुन्दुभी बजाई कि विश्वका हर प्राणी॥
क्या भारतीय अंग्रेज अमेरिकन, जर्मन और जापानी।
झूम उठे—जैनोद्देश्य समझकर॥
बहुतोंने त्याग दिया मांस भक्षण और रात्रि भोजन।
विश्वकी प्रमुख भाषाओंमें॥
हर देश जातिकी गाथाओंमें।
उन्होंने वीरका वह अमर संदेश भेजा कि॥
विश्वमें शांति, अहिंसा फिरसे पनप उठे।
विनाशकारी शक्तियोंके मार्ग मुड़े॥
पंचशीलके सुरभित सुमन खिले॥
वह कर्मठ, वीर, साहस श्रमको गले लगा।
जीवनके हर क्षणको पसीनासे नहला॥
गहरी मीठी नींदमें खो गया॥
घनमें शशि मुदित हुआ।
अजर अमर हो गया॥

सुधीर जैन

★

विश्व तुम्हारी सेवाओंको, सदा रखेगा याद।
साहित्य उपवन उजड़ा, तुम बिन कामताप्रसाद॥

रामपुर — कल्याणकुमार 'शशि'

★

स्व०—प्रवतक्षी सुनी बात जब
का —ल विराट रूप के आय
म—हत पुरुष था जो जैनोंका।
ता—हि उठाने आया है॥
प्र—पंचोंसे सदा दूर जो।
सा—दा जीवन था जिसका॥
द—या भावका भरा समंदर।
जी—व दया प्रण था जिसका॥
अ—ब वह कोसों दूर हुवा हमसे।
म—र कर भी नाम अमर पाया॥
र—टा "णमो अर्हं" अन्तमें।
हो—सुखी सदा उनकी कला॥

सवाईमाधोपुर — लाड़लीप्रसाद जैन 'नवीन'

आज धरती और नभमें, छा गया कोहरा घना है।
आज रोता है हिमालय, मूक जड़ चेतन बना है॥
लुप्त प्राय: हो गई गम्भीर, सरिताकी खानी।
आज कि 'प्रसाद' के चहुं ओर, तम है वेदना है॥

"विदिशा" — लक्ष्मीचन्द्र जैन 'रसिक'

याद आवे आपकी

पंचशीलके आराधक हो शाश्वत जीवन विश्वासी।
हम कभी न भूलेंगे तुमको संस्थापक मिशन सुगुण राशी॥
जीवनमें जो जो कार्य किये, क्या कभी भुलाये जा सकते।
साहित्य और जन सेवाके, क्या कार्य गिनाये जा सकते॥
किन किन कार्योंका कथन करूं, कब परिचय पूरा हो पाता।

युग युग तक नाम अमर होवे, यहां है मेरे मनको भाता ॥

मिश्रीलाल पाटनी ।

लश्कर

★

कविका नमस्कार

तुम जैन धर्म चमकानेको,
आगमका पाठ पढ़ाते थे ।
तुम ग्रन्थकार सम्पादक थे,
लेखक बन सबको भाते थे ॥
तुम नाटककार निराले थे,
सबको ही मुग्ध बनाते थे ।
तुम चले गये हो बाबूजी,
धर्मात्माको फैलाते थे ॥
तुमने जगका उपकार किया,
कर "अहिंसा-वाणी" का प्रचार ।
तुमको अति भाया करते थे,
विद्वान प्रचारकके विचार ॥
तुम अन्तरालमें चले गये,
तुमको है कविका नमस्कार ।
चलना होगा इन मार्गों पर,
जितना तुम करते थे प्रसार ।

आगरा

राजाबाबू जैन "राज"

★

बच्चे भी रो पड़े

बाबूजी मेरे जैसे छोटे बच्चेको नवीन मार्गदर्शन देनेके पूर्व बिना साक्षात्कार किये ही इस भौतिक शरीरको छोड़कर चले गये ।... पूज्य बाबूजीकी पूर्ण कृतियोंसे तो मैं अजान हूं किन्तु मुझ जैसे छोटे बच्चेको वास्तविकताकी ओर लानेके लिये

उनका जो प्रभाव था वह मेरे लिये अकथनीय है।

कोमू प्रेमचन्द जैन पापड़ीवाल

★

"मैं श्रीमान कामताप्रसादजीको सच्चे हृदयसे श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं क्योंकि वे समाज और धर्मके सम्मानित व्यक्ति थे उनके न होनेसे समाजको बड़ी क्षति हुई है।"

जयपुर विजयकुमार जैन पांड्या।

★

He was a beacon light to the Samaj. It is feared that the gap came up as a result of his death will be gulfed in the near future.

[वह समाजके लिए मार्ग-दर्शक थे, यह भय है कि उनकी मृत्युके कारण जो अभाव उत्पन्न हुआ है वह निकट भविष्यमें ही पूर्ण हो सकेगा ?]

जैन सभा दक्षिण नई-दिल्ली, सुरेन्द्रकुमार जैन, मंत्री।

★

His deep insight and study of Jainism, his profund love for the cult nou-violance, and sincerity of purpose, he carried out successfully, the work of the World Jain Mission not only in India but in far off nations.

[उनका जैन धर्मके प्रति गूढ़ अध्ययन और अहिंसामें तीव्र आस्था तथा लक्ष्यके प्रति सच्चाईके साथ उन्होंने अखिल विश्व जैन मिशनका कार्य केवल भारतमें ही नहीं किन्तु सुदूरके देशोंमें भी सफलताके साथ सम्पन्न किया]

गुलबर्गे बी. पी. कोठारी उच्चतम न्यायालय

Senior Advocate

Doctor Saheb devoted his full life to the upliftmant of the prineiples of Jain religion and has done great spade work in other countries to saw their seeds.

[डाक्टर साहबने अपना पूर्ण जीवन जैन धर्मके सिद्धातोंकी उन्नतिके लिये अर्पित किया और इन सिद्धान्तोंके बीजारोपन हेतु अन्य देशोंमें महान कार्य किया]

बम्बई रतनचन्द हीराचन्द जवेरी

He had devoted the best part of his life to the cause of Jainological studies. Though he is no more with us physically, he lives in the world of Scholarship through his numerous works.

उन्होंने अपने जीवनका महत्वपूर्ण भाग जैन धर्मके अध्ययन हेतु समार्पित किया। यद्यपि वे शारीरिक रूपसे हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनके असंख्य कार्योंके कारण वे विद्वतजनोंमें अभी भी स्मरणीय हैं।

कोल्हापुर प्रो० डा० ए० एन० उपाध्याय

We have lost in him a true saint and a perfect Jentleman.

[हमने उन्होंको खोकर एक सच्चे सन्त और पूर्ण आदर्श पुरुषको खोदिया है।]

बी० डी० अर० एम० जगदीशकुमार निगम
इन्टर कालेज राजा एम० काम० एम० एड० प्रिन्सीपल।

I have lost a friend who was deeply interested in spreading knowledge on Jainism. Since the conference of Jain scholars in Ujjain in 1961, whan I came into close contact with him, I has regarded Dr. KamtaPrasad as stalwart among jain scholars.......The continuvation of the good work he was doing will be only fitting tribute it can pay to his memory.

Germany Embassy.
Dr. W. Nolle

मैंने एक ऐसे मित्रको खो दिया है जो जैन धर्मके ज्ञान प्रसारमें विशेष रुचि रखते थे। सन् १९६१ के उज्जैनके जैन विद्वानोंके अधिवेशनमें, जब मेरा उनसे घनिष्ट सम्बन्ध हुआ तबसे मैंने डा० कामताप्रसाद जैनको जैन विद्वानोंमें सबसे अधिक साहसी समझा। उनकी स्मृतिमें उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्योंको ही आगे बढ़ाना सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जरमन दूतावास, डॉक्टर डब्ल्यू० नोली।

— नकल अभिनंदनपत्र —

विद्वद्प्रवर श्रीमान् कामताप्रसादजी जैन

अधिष्ठाता अ० वि० जैन मिशनके कर-कमलोंमें

सादर-साभिनन्दन !

देश एवं विदेशोंमें जैन दर्शन एवं अहिंसा-सांस्कृतिक प्रचार, सम्पूर्ण विश्वमें शाखाओंकी स्थापना, प्रेरणासे, जैन साहित्य प्रकाशन, फिल्म तथा आकाशवाणी द्वारा अहिंसाके मूलभूत सिद्धान्तोंका प्रचार, अन्तर्राष्ट्रीय जैन विद्यापीठके द्वारा जैन दर्शनके विभिन्न अंगों पर शोधकार्य, ज्ञानप्रसार, निबन्ध एवं प्रबन्धों द्वारा परीक्षायें, अहिंसा-सांस्कृतिक सम्मेलनों एवं वाचनालयोंकी स्थापना, विद्वद्गोष्ठियोंका संयोजन, विश्वविद्यालयोंके पाठ्यक्रमोंमें जैन साहित्यका समावेश, शास्त्रदान समारोह आदि आदि आपके सर्वतोमुखी कार्यक्रमोंकी सुनिश्चित क्रियात्मक एवं प्रभावनापूर्ण गतिविधियां हैं जिन पर आज जैन-जगत पूर्ण आस्थामय दृष्टियोंसे निहार रहा है।

अन्ततः आजके इस आधुनिक वैज्ञानिक युगमें हम आपमें भ० महावीरके गणधरके प्रतिरूपमें आपके दर्शन करते हैं। और महान उल्लासका अनुभव करते हुए आपका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

हम हैं आपके आस्थावान

दि० १९-४-६१.　　सदस्यगण, जैन मंडल, कानपुर।